स्तवन

विजय कुमार सिंह

स्तवन

विजय कुमार सिंह
एम०ए० (हिन्दी), एल-एल०बी०
अमर निवास, पुलिस लाइन्स रोड
बुलन्दशहर – 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
E-mail : vksingh52@hotmail.com

प्रथम संस्करण - 2011

प्रकाशक एवं मुद्रक :
अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स
11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,
बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.

गुरुदक्षिणा

सन् 1965 की बात है, तब मैं एस०ए०वी० इण्टर कॉलेज भरथना, जिला इटावा, उत्तर प्रदेश में नवीं कक्षा का विद्यार्थी था । उन दिनों श्रद्धेय हरिश्चन्द्र पाठक मुझे ट्यूशन पढ़ाने आया करते थे । मुझे हिन्दी विषय के लिए "देश-प्रेम" पर निबन्ध लिखना था जिसके लिए उन्होंने मुझे देशभक्ति पर अनेक कवितायें लाकर दीं । मेरा निबन्ध पढ़कर उन्होंने कहा, "अच्छा बन पड़ा है । देशभक्त केवल हमारे देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिक ही नहीं, अपितु वे सब जो अपने दायित्व के प्रति सजग हैं और कर्त्तव्यरत हैं, भी हैं ।" पुनः स्मित के साथ कहा, " मैंने निबन्ध में तुम्हारी सहायता की है, मेरी गुरुदक्षिणा ?" मैं अधिक समय तक असमंजस में न रहूँ, अतः वे बोले, "मुझे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि हिन्दी में अभी तक नहीं मिल सकी है, यदि कहीं मिले तो मुझे लाकर दे देना ।" मैं एक वर्ष बाद बुलन्दशहर आ गया, फलस्वरुप उनकी अपेक्षित गुरुदक्षिणा नहीं दे पाया । आज पता नहीं वे कहाँ हैं ? लेकिन मन में बहुधा यह कौंधता था कि यदि कभी कुछ लिखने में सक्षम हो सका, तो उसी को गुरुदक्षिणा के रूप में गीतांजलि के साथ उन्हें अर्पित कर दूंगा।

अतीव श्रद्धा पूर्वक उनका स्मरण करते हुए मैं यह कृति विशिष्ट रूप से अपने उन प्राध्यापक गुरु को, साथ ही साथ, अन्य सभी शिक्षक गुरुओं को समर्पित करता हूँ ।

यह पेज कोरा रहेगा

पेज नं0 भी नहीं प्रिन्ट होगा

पाकर शुभमय दान तुम्हारा.....

पाकर शुभमय दान तुम्हारा, जगमग जगमग जीवन सारा,
नमन तुम्हें श्रद्धा से भरकर, मुझपर जो उपकार तुम्हारा ।

मेरे तममय अंतर्मन में,
ज्ञान का दीपक तुमने जलाया ।
दिखती थी जब राह न कोई,
सत्य का पथ तुमने दिखलाया ।

मैं पथ जब भी भूला–भटका, समझाया रह–रह के दोबारा,
नमन तुम्हें श्रद्धा से भरकर, मुझपर जो उपकार तुम्हारा ।

तुमने ही मुझको सिखलाया,
निर्भय पथ पर चलते जाना ।
शीश उठा कर सीना ताने,
तूफानों में बढ़ते जाना ।

सत्य के पथ में संगी न कोई, सत्य ही साथी सत्य सहारा,
नमन तुम्हें श्रद्धा से भरकर, मुझपर जो उपकार तुम्हारा ।

तुमसे ही सीखा है मैंने,
शब्द सजाना सारे भुवन को ।
अपनी इस नश्वरता में भी,
लय में गाना नित्य सृजन को ।

तेरी स्मृति तेरा वन्दन, तपती भू पर जल की धारा,
नमन तुम्हें श्रद्धा से भरकर, मुझपर जो उपकार तुम्हारा ।

(21.08.2011)
सिडनी

आभार

लगभग सात वर्ष पूर्व जब मैंने कविता/गीत लिखना आरम्भ किया तो मन में यही भाव था कि सभी से कुछ न कुछ मिला । सभी का किसी न किसी रूप में ऋणी हूँ । पर मैंने क्या दिया ? यदि मैं कुछ नहीं कर सकता तो कम से कम श्रद्धा पूर्वक अपनी भावनाएँ तो व्यक्त कर सकता हूँ । भावनाएँ व्यक्त करने के लिए गीत से अच्छा माध्यम और क्या हो सकता है ।

मैं, अपने परिवार व मित्रों जिनकी प्रेरणा के बिना लिखना सम्भव नहीं था, श्रद्धेय प्रो० सर्वदमन सिंह जिन्होंने अंग्रेजी व हिंदी में लिखकर मुझे आशीर्वाद दिया, श्रद्धेय प्रो० निहाल सिंह 'अग्र' जिन्होंने इसके लिए कृपापूर्वक लिखा, श्रद्धेय वी०पी० गुप्ता जिन्होंने त्रुटियों को दूर करने में मेरी सहायता की, का आभार प्रकट करता हूँ ।

विजय कुमार सिंह
(30.11.2011)

2/1076, Pacific Highway,
PYMBLE NSW 2076,
AUSTRALIA
E-mail : vksingh52@hotmail.com

इस पर फारवर्ड
वर्ड की फाईल से आयेगा

इस पर फारवर्ड
वर्ड की फाईल से आयेगा

Prof. Sarva-Daman Singh
B. A. (Hons.), M.A., Ph.D. (London)
Ph.D. (Queensland), F.R.A.S.
Honorary Consul of India to Queensland
AUSTRALIA

ऐसी कविता, जो श्वास प्रश्वास से अनुप्राणित हो, जिसमें जीवन के हर्ष और विषाद का विशिष्ट विवरण हो, विजय कुमार सिंह के काव्य संकलन 'स्तवन' को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है ।

कवि अपने स्तुति–गीतों में प्रभु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है और इस विश्व के रचयिता में माता, पिता दोनों का ही समावेश अनुभव करता है । इस सांसारिक प्रांगण में मानविक क्रिया–कलापों का अवलोकन करता है । प्रकृति के सदा परिवर्तित रूप देखता है । इच्छाओं की तृप्ति का आभास देती हुई वर्षा से वसुधा की प्यास बुझते देखता है । बसंत के बाद पतझड़ भी देखता है, जिसमें उसे निरंतर जीवन, मृत्यु तथा पुनर्जन्म का चक्र दृष्टिगोचर होता है ।

विजय कुमार सिंह की मार्मिक कविता, 'जो बीता सब व्यर्थ हुआ तब', अनित्य के अकाट्य यथार्थ को प्रस्तुत करती है । कुंठित आशाएँ, अनन्त कामना, असंतुष्ट क्षुधा, उसी अनित्य निश्वरता के प्रतीक हैं । पर कवि कहता है : 'क्यों होता है भव भय कातर'? क्षणिकता को जीवन को विषांत न करने दो । आशा और लक्ष्य साध कर जियो । परलोक में मत डूबो। उसे किसने देखा है? वह है भी या नहीं, कौन जानता है? मत भूलो तुम कहाँ हो, किससे सम्बद्ध हो, जीवन को कर्मशील बना कर जियो । जीवन को कल्पित भय से त्रस्त मत करो। उसका सम्मान पूर्वक समारोह रचो ।

प्राय: हम व्यापक व्यथाओं से संतप्त रहते हैं । अपने एकाकीपन से दुखी हो जाते हैं । दूसरों के परायेपन से खिन्न हो जाते हैं । पर कवि ललकारता है : 'तुहिन कणों से क्यों भरता मन' और अपनी सुंदर कविता 'ध्वंस जब उन्माद भर कर' द्वारा दु:ख में भी हँसने को प्रेरित करता है । स्वर्ग किसने देखा है ? हम यहीं क्यों न सत्य, प्रेम, न्याय, विश्वास और कर्तव्य के स्वर्ग का निर्माण करें ? मानवता की एकता, विश्व बंधुत्व का संचार करें । आशापूर्वक जियें । शांतिपूर्वक जियें । सदा आगे ही बढ़ें ।

परहित और परपीड़ा को अपना ही समझें । सहायता रूप में जो बन पड़े वो करें । अतीत में न खो कर वर्तमान में जियें। जीवन की सार्थकता जीवन के नवीनीकरण का स्रोत है । विजय विश्व के नागरिक हैं । पर भारत उनकी जननी है । इसलिए भारत को देखना चाहते हैं, समझना चाहते हैं . उसके साहित्य, दर्शन और कला को खोजना चाहते हैं ; साथ-साथ विश्व को भी समझना चाहते हैं ; तथा उस विश्व को भारत का योगदान भी आँकना चाहते हैं । उनकी शक्तिशाली कविता, 'लन्दन वियना पैरिस देखूँ', विश्व में भारत का स्थान खोजती है और न जाने कितनी कविताएँ भारत की थाती पर गर्व प्रकाशित करती हैं ।

मौन तो मानवता की मृत्यु समान है । हमें सदा शब्दों की आवश्यकता सताती है । शब्द ही विचारों के जनक हैं । हर प्रतिपल अपने भावों के लिए शब्द ही खोजते रहते हैं । शब्द ही हमारी मानवता के द्योतक हैं । सुंदर शब्दों से अपनी कविताओं का सृजन कर विजय कुमार सिंह ने आशा, हर्ष और उल्लास के अंकुर जगा ऐसे भाव व्यक्त किये हैं जिनसे मनुष्य मनुष्य से बँधे ।

यह कभी न भूलें :

गुह्यं ब्रह्म तदिदम् ब्रवीमि,
न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित् ।

सर्वदमन सिंह

Prof. Nihal Singh Agar
Retired Professor and Head,
Department of Physiology
University of New England
Armidale, NSW, 2066

बधाई

प्रिय विजय अपने दो संग्रहों (वल्लकी, स्पंदन) द्वारा अपनी कवि प्रतिभा पहले से ही स्थापित कर चुके हैं । प्रस्तुत ग्रंथ में उनकी यह प्रतिभा और भी निखर कर आई है । संग्रह में कहीं राष्ट्र प्रेम की भावना की झलक है तो कहीं ईश्वरोपासना का समावेश है, कहीं वीर रस, कहीं श्रृंगार रस, कहीं गाँव का वर्णन है तो कहीं विश्व के प्रसिद्ध नगरों, दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों का वर्णन है । भारतीय इतिहास कला और साहित्य का कविता में बंधन तो अद्वितीय है ।

ग्रंथ को पढ़कर बहुत आनन्द आया । हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति की सेवा में यह ग्रंथ एक अमूल्य निधि है। विदेश में रहकर भी स्वदेश प्रेम की भावनाओं को सजग रखकर काव्य बद्ध करने की प्रिय विजय की इस प्रतिभा के लिए मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि विजय को ऐसे ही पुनीत विचारों से ओतप्रोत करते रहें ताकि वह हमारे बीच में रहते हुए प्रेरणा और गौरव के श्रोत बने रहें ।

निहाल सिंह 'अग्र

24/Romani Road,
River View NSW 2066,
AUSTRALIA

अनुक्रमणिका

1. हे विराट हे.......

हे विराट हे महान,
कर कृपा कृपानिधान ।
निर्भय हों शक्तिमान,
शुभ मनस् जागे ।

नेह प्रेम राग-रंग,
सत्य न्याय उर[1] उमंग ।
धीर वीर हों निशंक[2],
शीलता[3] में आगे ।

शुद्ध सृष्टि रच दें छंद[4],
शब्द-स्वर-लय अभंग[5] ।
भर दे शुभ्र[6] ज्योतिपुंज,
घोर तिमिर[7] भागे ।

दृष्टि भर दे नव[8] वितान[9],
गर्व से हृदय उतान[10] ।
फुल्ल[11] गात[12] फुल्ल प्राण,
पन्थ[13] सुखद लागे ।

1. हृदय, छाती ; 2. बिना डर के, निडर ; 3. शालीनता, नैतिक आचरण और व्यवहार ; 4. मात्राओं का निश्चित मान जिसके अनुसार पद्य रचना की जाती है, व्यवस्था ; 5. न टूटने वाला, अखंडित ; 6. सफेद ; 7. अँधेरा, अंधकार ; 8. नया, नवीन ; 9. विस्तार, फैलाव ; 10. छाती तानना ; 11. विकसित, प्रसन्न ; 12. शरीर, देह ; 13. मार्ग, रास्ता, रीति ।

(23.05.2010)
बुलन्दशहर

2. सूर्य की शुभ अरुणिमा ने......

सूर्य की शुभ अरुणिमा[1] ने,
पूर्व क्षिति[2] आँचल सजाया ।
जागती फिर से धरा[3] अब,
राग-रंग फिर मुस्कराया ।

रात्रि बीती भोर आया,
रात्रि बीती भोर आया ।

खिल रहे हैं फिर से शतदल[4],
रजत[5] बन बहता सरित[6] जल ।
उड़ रहे विहगों[7] ने फिर से,
मधुर स्वर में गुनगुनाया ।

रात्रि बीती भोर आया,
रात्रि बीती भोर आया ।

खुल गये मन्दिर के द्वारे,
गर्भगृह[8] मंडप सजा रे ।
हे दयानिधि कुछ कृपा कर,
प्रार्थना ने स्वर गुँजाया ।

रात्रि बीती भोर आया,
रात्रि बीती भोर आया ।

बह चला सुरभित[9] समीरण[10],
फुल्ल[11] पुलकित[12] प्राण अरु तन[13] ।
जाग रे अब हे धरा सुत[14],
चेतना ने गीत गाया ।

रात्रि बीती भोर आया,
रात्रि बीती भोर आया ।

1. लाली, लालिमा ; 2. धरती, पृथ्वी ; 3. धरती ; 4. कमल ; 5. चाँदी ; 6. नदी ; 7. पक्षी, पंछी ; 8. मन्दिर के बीच का मूर्तिगृह, प्रसूतिगृह ; 9. खुशबू ; 10. हवा ; 11. विकसित, प्रसन्न ; 12. रोमांचित, प्रेम, हर्ष आदि से गद्-गद् ; 13. शरीर देह ; 14. बेटा, पुत्र ।

(17.05.2010)
बुलन्दशहर

3. मंद मधुर स्मित अधरों पर......

मंद[1] मधुर[2] स्मित[3] अधरों[4] पर,
मृदुल[5]-मृदुल वाणी[6] स्वर[7] निसृत[8] ।
श्रवण[9] सुनें ध्वनि[10] शब्द मनोहर[11],
श्वास-श्वास में मधुमय[12] अमृत ।

हे प्रभु पूरण हे परमेश्वर,
ले चल उधर हमे भी ले चल ।

शीश[13] गर्व[14] से भर उर्ध्वाधर[15],
दृष्टि[16] जहाँ हो व्यापक[17] निर्मल[18] ।
शक्तिमान तन[19] सोबल[20] सत्वर[21],
उर[22] आनन्द सजाये अविरल[23] ।

हे प्रभु पूरण हे परमेश्वर,
ले चल उधर हमे भी ले चल ।

नेह[24] प्रेम निर्झर[25] झरे झर-झर,
आस उमंग भरे वक्ष:स्थल[26] ।
धीर, दया, मैत्री करुणाभर,
लज्जा, श्रद्धा, प्रज्ञा[27] अविचल[28] ।

हे प्रभु पूरण हे परमेश्वर,
ले चल उधर हमे भी ले चल ।

मनस[29] आलोकित[30] ज्योतित होकर,
सत्य शील अरु तितिक्षा[31] अक्षत[32] ।
जीवन सुरसरि[33] पावन शुभकर,
मानव गरिमा[34] संस्कृति[35] संतत[36] ।

हे प्रभु पूरण हे परमेश्वर,
ले चल उधर हमे भी ले चल ।

1. धीमा, हल्का, कम ; 2. मीठा, प्रिय, मंद ; 3. मुस्कराहट, मंद हास्य ; 4. होंठ ; 5. कोमल, मुलायम ; 6. वचन, बात ; 7. आवाज़ ; 8. निकला हुआ ; 9. कान ; 10. आवाज़ ; 11. सुंदर, मन हरने वाला ; 12. मिठास ; 13. सर, सिर ; 14. अभिमान ; 15. सीधा, खड़ा ; 16. नज़र, निगाह ; 17. फैला हुआ, विस्तृत ; 18. साफ़, स्वच्छ, पवित्र ; 19. शरीर, देह ; 20. ताकत ; 21. तेज ; 22. छाती, हृदय ; 23. लगातार ; 24. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 25. झरना, ; 26. छाती, उर ; 27. बुद्धि, समझ ; 28. अचल, स्थिर ; 29. अन्तःकरण, मन ; 30. प्रकाशित, चमकना ; 31. दुःख आदि सहन करने की शक्ति ; 32. बिना टूटा हुआ, समूचा ; 33. गंगा नदी ; 34. महत्व, गुरूत्व ; 35. संस्कारित, सजाना ; 36. सदा, निरंतर ।

(13.06.2010)
बुलन्दशहर

4. अँखिया निहारें तरस-तरस रे......

अँखिया निहारें, तरस-तरस रे,
आओ रे बदरा, गरज-गरज रे ।

सूखे पड़े सभी, बाग-औ-बगीचे,
सूखे सरोवर, तृण-तृण सूखे ।

आ के भिगो दो, बरस-बरस रे,
आओ रे बदरा, गरज-गरज रे ।

नाचे मयूरा पंख फैलाए,
प्यासा पपीहरा सुर में गाये ।

कुहके कोयलिया, सरस-सरस रे,
आओ रे बदरा, गरज-गरज रे ।

अमवा की डाली से चू रहीं अमियाँ,
झूले पड़ेंगे, झूलेंगी सखियाँ ।

गायेंगी सावन, हरस-हरस रे,
आओ रे बदरा, गरज-गरज रे ।

(23.06.2010)
बुलन्दशहर

5. पीत वर्ण जीर्ण-शीर्ण.......

पीत[1] वर्ण[2] जीर्ण-शीर्ण[3],
वातभीत[4] प्राण हीन[5] ।

ओ रे पर्ण[6] अब झरो,
हो अनंत[7] में विलीन[8] ।

सदा स्त्रस्त[9] शक्तिहीन,
तन्तु-तन्तु[10] रस विहीन[11] ।

ओ रे पर्ण अब झरो,
हो अनंत में विलीन ।

नष्ट-प्राय[12] पुराचीन[13],
वीतराग[14] असमीचीन[15] ।

ओ रे पर्ण अब झरो,
हो अनंत में विलीन ।

ध्येयरहित[16] अर्थहीन[17],
जड़ीभूत[18] श्री[19] विहीन ।

ओ रे पर्ण अब झरो,
हो अनंत में विलीन ।

1. पीला ; 2. रंग ; 3. सड़ा-गला, टूटा-फूटा ; 4. हवा से डरा हुआ ; 5. खाली, खराब या घटकर, तुच्छ और नगण्य ; 6. पत्ता, पत्र ; 7. असीम, जिसका अंत न हो ; 8. ओझल, लुप्त, मिल जाना ; 9. गिरने के लिए लटका हुआ ; 10. नस, सूत, तागा, रेशा ; 11. बिना, बगैर, त्यागा हुआ ; 12. बर्बाद, नाश, विनाश, चौपट ; 13. बहुत पुराना ; 14. राग रहित, निस्पृह ; 15. अनुचित, अयुक्त ; 16. बिना लक्ष्य के, बिना उद्देश्य के ; 17. जिसका कोई मतलब न हो ; 18. जो जड़ हो गया हो, निःस्पन्द, स्तब्ध ; 19. चमक, कांति, वैभव, योग्य ।

(30.06.2010)
बुलन्दशहर

6. क्यों होता है भव भय कातर.......

क्यों होता है भव[1] भय[2] कातर[3],
जीवन पथ[4] पर निर्भय[5] पग[6] धर ।

यह पथ तम[7] आच्छादित[8] निर्जन[9],
आशा से आलोकित[10] कर मन ।

मंद-मंद[11] मृदु[12] स्मित[13] भरकर,
जीवन पथ पर निर्भय पग धर ।

नित[14] परवर्तित[15] यह भव सागर[16],
सुख दुःख की लहरों का आगर[17] ।

निस्पृहता[18] से इनको छू भर,
जीवन पथ पर निर्भय पग धर ।

जग क्यों है क्या जग का कारण,
जन्म-मरण क्यों क्या है निवारण[19] ।

मत सोचे बातें लोकोत्तर[20],
जीवन पथ पर निर्भय पग धर ।

मन में यदि विश्वास है अणुभर,
पथ दे देंगे गिरि[21] और सागर ।

हर क्षण कहता यह रह रहकर,
जीवन पथ पर निर्भय पग धर ।

1. संसार, जगत्, उत्पत्ति, होना ; 2. डर, खतरा, खौफ ; 3. भयभीत, परेशान, डरपोक, अधीर, व्याकुल ; 4. रास्ता, मार्ग ; 5. बिना डर के ; 6. पैर ; 7. अँधेरा, अंधकार ; 8. छाया हुआ, ढका हुआ ; 9. एकांत ; 10. प्रकाशमय ; 11. धीमा, सुस्त ; 12. कोमल, मुलायम, प्रिय और सुहावना, मधुर, धीमा ; 13. मुस्कराहट ; 14. निरंतर, अविनाशी, हमेशा, हर रोज ; 15. बदला हुआ ; 16. समुद्र ; 17. रहने की जगह, खान, भंडार, घर, मकान, 18. वासना रहित, इच्छा रहित, निर्लोभ ; 19. दूर करना, हटाना, रोक-थाम ; 20. असाधारण, विलक्षण ; 21. पहाड़, पर्वत ।

(06.07.2010)
बुलन्दशहर

7. तेरे दृग से जब मिलते दृग.......

तेरे दृग[1] से जब मिलते दृग,
मन खिल जाता मुकुलित[2] होकर ।
मेरे नीरव[3] तममय[4] नभ[5] में,
स्वर्णिम[6] किरणों से भर दिनकर[7] ।

जब तुम होते मेरे सम्मुख[8],
मिट जाता जीवन का हर दुःख ।
भ्रम कैसा और कैसा संशय,
सत्य लगे सब, सब ही शुभकर ।

रोमकूप[9] भर लेते सिहरन,
बढ़ जाते दिल के स्पंदन[10] ।
राग सजा दें गीत मदिर-मधु,
मैं गाऊँ उन्हें पंचम स्वर भर ।

तुम सुंदर बनते अति सुंदर,
मेरे अंतर[11] में अन्तरतर[12] ।
देव दया है मैं हूँ पराजित[13],
तुम विजयी अति विजयी मुझपर ।

1. नयन, आँख, नेत्र ; 2. खिला हुआ, अधखिला ; 3. शब्दरहित, शब्द न करने वाला ; 4. अंधकारमय ; 5. आसमान, आकाश, गगन ; 6. सुनहरा ; 7. सूर्य, सूरज ; 8. सामने ; 9. शरीर में रोआँ निकलने वाले छिद्र ; 10. कम्पन, गति, धड़कन ; 11. भीतर, बीच में ; 12. गहरे भीतर ; 13. हराया हुआ ।

(10.07.2010)
बुलन्दशहर

8. मेरा अब भी आकुल अंतर......

मेरा अब भी आकुल[1] अंतर[2],
रुक जाओ अभी ठहरो पल भर ।

उर[3] के मेरे वाष्प[4] जलद[5] कण,
देख के तुमको मोती बन-बन ।

मुस्कानों से झरते झर-झर,
रुक जाओ अभी ठहरो पल भर ।

प्राणों का यह कातर[6] क्रंदन[7],
तुमसे ही तो बनता गायन ।

श्वास जिसे गातीं रह रहकर,
रुक जाओ अभी ठहरो पल भर ।

क्या है जग और क्या मेरा दुःख,
सामने तुम हो विस्मृत[8] सब कुछ ।

सुंदर तुम ही तुम ही सुखकर,
रुक जाओ अभी ठहरो पल भर ।

मधुमयता से भरता जीवन,
अर्थवान सब कण-कण तृण[9]-तृण ।

तेरी प्रभ[10] छवि मन में शुभकर[11],
रुक जाओ अभी ठहरो पल भर ।

1. परेशान, बेचैन, उतावला ; 2. भीतर, बीच में ; 3. हृदय, छाती ; 4. भाप ; 5. बादल, मेघ ; 6. भयभीत, डरपोक, अधीर, परेशान ; 7. रोना, विलाप करना ; 8. भुलाया हुआ ; 9. तिनका ; 10. दीप्ति, प्रकाश ; 11. कल्याणकारी ।

(12.07.2010)
बुलन्दशहर

9. वर दे दो प्रभु हे परमेश्वर.......

वर दे दो प्रभु हे परमेश्वर,
शीलवान[1] हों सोबल[2] सत्वर[3] ।

धुल जाए मन का हर कल्मष[4],
शुभ्र[5] आलोकित[6] ज्योति[7] पुंज[8] भर ।
विहँस[9] पड़ें सुरभित[10] आशाएँ,
इंद्र धनुष सी उर[11] अम्बर[12] पर ।

वर दे दो प्रभु हे परमेश्वर,
शीलवान हों सोबल सत्वर ।

जगमग-जगमग हो जीवन मग[13],
निश्चितता से बढ़ता हर पग ।
नेह नीर[14] नयनों में भरकर,
बढ़ते जाएँ जीवन पथ पर ।

वर दे दो प्रभु हे परमेश्वर,
शीलवान हों सोबल सत्वर ।

प्रेम विजित अरु[15] क्षुण्ण[16] हो छलबल[17],
प्राणवान मधुमय हो हर पल ।
मिट जाए इस पुण्य धरा से,
मनुज[18]-मनुज में बढ़ता अंतर ।

वर दे दो प्रभु हे परमेश्वर,
शीलवान हों सोबल सत्वर ।

1. नैतिक आचरण और व्यवहार, सद्धति ; 2. ताकतवर ; 3. फुर्तीला, गतिशील ; 4. दोष, पाप, मेल ; 5. सफेद ; 6. प्रकाशित, रौशनी से भरा ; 7. प्रकाश 8. ढेर, राशि, समूह ; 9. हँसना ; 10. सुगन्धित, सुवासित ; 11. छाती, हृदय ; 12. आकाश, नभ, गगन, आसमान ; 13. रास्ता, मार्ग, पथ ; 14. पानी, नेत्रजल, आँसू ; 15. और, दूसरा ; 16. खंडित, पिसा हुआ, पराजित ; 17. धोखा, कपट ; 18. मनुष्य, आदमी, मानव ।

(20.07.2010)
बुलन्दशहर

10. हे प्रभु पूरण निर्गुण निष्कल.......

हे प्रभु पूरण निर्गुण निष्कल[1],
अपनी कृपा का दे दो संबल[2] ।

कर दो तममय मन अम्बर[3] को,
स्वर्णिम आभा[4] से आलोकित ।
सतरंगों से सज जाए सब,
रोम-रोम हो जाए प्रहर्षित[5] ।

मन के तल पर मुकुलित[6] हो फिर,
स्वप्नों के नव सुरभित[7] शतदल[8] ।

निश्छल[9], निश्चल[10], निर्भय[11] हों हम,
भर अनुपम[12] उल्लास अपरिमित[13] ।
आशा और विश्वास भरे हों,
पग पड़ते हों अति उत्साहित ।

बढ़ते जाएँ जीवन पथ पर,
जगमग होते सब जल-नभ[14]-थल[15] ।

नेह प्रेम माधुर्य[16] सजा दो,
उर अनुराग[17] से कर दो पुलकित[18] ।
श्वास-श्वास भर दो मधुमय स्वर,
गीत सृजन[19] के भर दो अनगित[20] ।

हम गाएँ फिर तन्मय[21] होकर,
शुभ सुंदर जीवन को हर पल ।

1. कला रहित जैसे चन्द्र की कलायें, ईश्वर ; 2. सहारा, सहायक वस्तु ; 3. आकाश, नभ ; 4. शोभा, कान्ती, चमक, रंगत, प्रतिबिम्ब ; 5. अत्यधिक प्रसन्नता, हर्ष, जन्य, रोमांच ; 6. खिला हुआ, अधखुला ; 7. सुगन्धित, सुवासित ; 8. कमल ; 9. निषकपट, छल रहित ; 10. अचल, स्थिर ; 11. बिना भय के, बिना डर के ; 12. उपमा रहित, सर्वोत्तम, बेजोड़ ; 13. बेहद, बे-हिसाब, अगणित ; 14. आकाश, नभ, आसमान ; 15. ज़मीन, पृथ्वी ; 16. मधुर होने का भाव, मधुरता, शोभायुक्त, सुन्दरता ; 17. प्रेम, भक्ति ; 18. प्रेम, हर्ष आदि से गद्‌गद, रोमांचित ; 19. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 20. जिसकी गिनती न की जा सके ; 21. तल्लीन, दतचित्त, मग्न !

(25.07.2010)

बुलन्दशहर

11. चल रे पथिक, चल रे पथिक.......

चल रे पथिक[1], चल रे पथिक,
चल रे पथिक, चल रे पथिक ।

यह पंथ[2] कंटकाकीर्ण[3] है,
यह शुष्क[4] सौरभहीन[5] है ।
बिन पर्ण[6] सूने तरु[7] खड़े,
गाता नहीं यहाँ कोई पिक[8] ।

चल रे पथिक, चल रे पथिक,
चल रे पथिक, चल रे पथिक ।

दु:ख का अतल[9] सागर लिए,
सुख का मधुर अमृत पिए ।
सुख-दु:ख निरंतर[10] साथ में,
सुख न्यूनतम[11] दु:ख अधिकाधिक[12] ।

चल रे पथिक, चल रे पथिक,
चल रे पथिक, चल रे पथिक ।

स्वेदलथ[13] और श्रांत[14] तन[15],
क्षुब्ध[16] आकुल[17] भीत[18] मन ।
आस भर विश्वास भर,
आह्लाद[19] से भर ले तनिक ।

चल रे पथिक, चल रे पथिक,
चल रे पथिक, चल रे पथिक ।

चलना ही केवल कर्म है,
चलना ही केवल धर्म है ।
चलता ही चल रे अनवरत[20],
साक्षी[21] तेरे काल[22] और दिक्[23] ।

चल रे पथिक, चल रे पथिक,
चल रे पथिक, चल रे पथिक ।

1. राही ; 2. मार्ग, रास्ता, रीति, ढंग, सम्प्रदाय ; 3. काँटों से भरा हुआ, काँटेदार, बाधायुक्त ; 4. सूखा, नीरस, निष्प्रयोजन, निस्सार, कठोर ; 5. बिना महक के या सुगंध के ; 6. पेड़ का पत्ता, पत्र ; 7. पेड़, वृक्ष ; 8. कोयल ; 9. बिना पेंदे का, अथाह, बहुतगहरा, तलरहित ; 10. लगातार, अविरल ; 11. कम से कम ; 12. ज्यादा से ज्यादा ; 13. पसीने से लथपथ ; 14. थका हुआ, दुखी, खिन्न ; 15. देह, शरीर ; 16. परेशान, विकल, जो क्षोभ से भरा हो, कुपित ; 17. परेशान, उतावला ; 18. डरा हुआ, भयभीत ; 19. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 20. लगातार, अविराम ; 21. गवाही देने वाला ; 22. समय ; 23. दिशा, तरफ ।

(21.08.2010)
सिडनी

12. तुहिन कणों से क्यों भरता मन.......

तुहिन[1] कणों से क्यों भरता मन,
नयन सजे क्यों नीर भरे घन[2] ।
ओ रे मनुज[3] क्यों आकुल[4] उन्मन[5],
ओ रे मनुज क्यों आकुल उन्मन ।

क्या नभ[6] में कोई तारा टूटा,
या पथ[7] में कोई साथी छूटा ।
क्यों है चतुर्दिक[8] यह सूनापन,
ओ रे मनुज क्यों आकुल उन्मन ।

फिर जागी क्या टीस पुरानी,
दुःख दोहराए कोई कहानी ।
क्यों अवसाद[9] भरे हर एक क्षण,
ओ रे मनुज क्यों आकुल उन्मन ।

क्या खोया कुछ पाते-पाते,
दर्द पला क्या जाते-जाते ।
स्वप्न क्या बिखरे जैसे तृण[10]-तृण,
ओ रे मनुज क्यों आकुल उन्मन ।

क्या तूने जीवन लय खोई,
या फिरसाथी संग न कोई ।
तू ही बता क्या कौन सी उलझन,
ओ रे मनुज क्यों आकुल उन्मन ।

1. तुषार, पाला, बर्फ, हिम ; 2. मेघ, बादल ; 3. मनुष्य ; 4. परेशान, बेचैन, उतावला, अव्यवस्थित ; 5. उदास, अन्यमनस्क ; 6. आकाश, आसमान ; 7. रास्ता, मार्ग ; 8. चारों ओर ; 9. उदासी, खेद, हार, थकावट, सुस्ती ; 10. तिनका, घास ।

(29.08.2010)
सिडनी

13. सुनो प्रयाण हेतु बाह्य भेर-तूरि......

सुनो प्रयाण[1] हेतु[2] बाह्य[3] भेर-तूरि[4] बज रहे,
पटह-पणव[5] धमम्-धमम् प्रचंड[6] शोर कर रहे ।
घंटे घनघनाते और गूँजता है शंखनाद,
जाग शूरवीर जाग, जाग शूरवीर जाग ।

देख सत्य सैन्य दल युद्ध वेश सज उठा,
ले कराल[7] अस्त्र-शस्त्र[8] दर्प[9] से दमक उठा ।
ऊर्ध्वबाहु[10] मुष्टि[11] तान भर रहे सभी हुँकार,
जाग शूरवीर जाग, जाग शूरवीर जाग ।

पग से पग मिला सभी आगे बढ़ते जा रहे,
सुर में सुर मिला सभी संग-संग गा रहे ।
अपनी मातृभूमि पर प्राण देंगे हम निसार[12],
जाग शूरवीर जाग, जाग शूरवीर जाग ।

पुष्प धूप दीप ले द्वार[13]-द्वार जन[14] खड़े,
प्रत्येक वीर के अनेक पुष्प माल्य[15] उर[16] पड़े ।
लालिमा भरे तिलक गर्व से तने हैं भाल[17],
जाग शूरवीर जाग, जाग शूरवीर जाग ।

तप्त[18] लोह[19] पिंड[20] से शत्रु[21] पर बरस पड़ो,
ज्वार[22] भरते सिन्धु[23] से आज तुम उमड़ पड़ो ।
यश[24] मिले विजय मिले शत्रु का करो संहार[25],
जाग शूरवीर जाग, जाग शूरवीर जाग ।

तुम अमर्त्य[26] पुत्र हो शक्ति शौर्य[27] से भरे,
जग[28] में ऐसा कौन है जो कि सामना करे ।
कह रही वसुन्धरा[29] ऋण[30] मेरा जरा उतार,
जाग शूरवीर जाग, जाग शूरवीर जाग ।

1. प्रस्थान, कूच, चढ़ाई, यात्रा, सफर ; 2. कारण, लक्ष्य, मकसद ; 3. बाहर, गैर, बेगाना ; 4. छोटा ढोल, तुरही ; 5. ढोल-नगाड़ा ; 6. अतिउग्र, अतितीव्र, भयंकर, भीषण ; 7. डरावना, भयानक ; 8. फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार-हाथ में पकड़ कर चलाया जाने वाला हथियार ; 9. अभिमान, घमंड, मान ; 10. ऊपर की ओर हाथ उठाये हुए ; 11. मुट्ठी, घूँसा, मुक्का ; 12. निछावर ; 13. दरवाज़ा ; 14. लोक, लोग, जनता, जनसाधारण ; 15. माला ; 16. हृदय, छाती ; 17. माथा, ललाट, मस्तक ; 18. गर्म, तपाया हुआ ; 19. लोहा ; 20. घन, ठोस, घना ; 21. दुश्मन ; 22. समुद्र के जल का ऊपर उठना ; 23. समुद्र, सागर ; 24. प्रसिद्धि, ख्याति ; 25. नाश, हत्या, ध्वंस, निवारण ; 26. अमर ; 27. शूरता ; 28. संसार, जगत ; 29. ज़मीन, धरा ; 30. कर्ज़, उधार ।

(13.09.2010)
सिडनी

14. चुपके से आकर नयन समा जा.......

चुपके से आकर नयन समा जा,
आजा री निंदिया आ री आ जा ।

बीते दिनों की कोई कहानी,
करवट लेतीं यादें पुरानी,

कुछ पल भूलूँ आ के भुला जा,
आजा री निंदिया आ री आ जा ।

कौन मुझे अब काँधे लगाए,
थपकी दे-दे लोरी सुनाए,

गोद में अपनी मुझको झुला जा,
आजा री निंदिया आ री आ जा ।

इंद्र धनुष की डोरी बनाकर,
फूलों का पलना उसमे सजाकर,

नभ को छूँ लूँ स्वप्न दिखा जा,
आजा री निंदिया आ री आ जा ।

जब मैं जागूँ हो उजियारा,
जग सारा लगे प्यारा-प्यारा,

प्रीति की ऐसी रीति सिखा जा,
आजा री निंदिया आ री आ जा ।

(20.09.2010)
सिडनी

15. नभ नेह भर कर देखता माँ.......

नभ[1] नेह[2] भर कर देखता माँ मेदिनी[3] पुचकारती,
जग एक स्वर में गा रहा जय भारती[4] जय भारती ।

प्रात[5] चाहे बस रहूँ हर आस और उल्लास में,
वात[6] चाहे खिल रहूँ मैं पुष्प बन हर श्वास में ।
रात्रि कहती गोद आ तुम सो रहो मैं जागती,
जय भारती जय भारती जय भारती जय भारती ।

कहता हिमालय अनवरत[7] गरिमा[8] से भर मुझसा तनो,
विंध्य[9] कहता नम्र यदि मुझसा झुको मुझसा बनो ।
कलकल बहे गंगा कहे मैं पाप हरती तारती[10],
जय भारती जय भारती जय भारती जय भारती ।

राम मर्यादा[11] बताते कृष्ण कहते कर्म क्या,
जिन कहें क्या है अहिंसा बुद्ध कहते धर्म क्या ।
नानक कहें दुखिया है जग मीरा कहे मैं वारती[12],
जय भारती जय भारती जय भारती जय भारती ।

मन्दिर सजाते प्रार्थना मस्जिद भी ये ही अज़ान दे,
नेकी से भर दे तू हमे अपनी कृपा का दान दे ।
गा रहे गुरुद्वारे ये ही बौद्ध जैनी पारसी,
जय भारती जय भारती जय भारती जय भारती ।

सदियों से आये क़ाफ़िले अपने ही तुम तुमने कहा,
कितने ही आये जलजले[13] कभी रोष[14] भर कभी चुप सहा ।
सर्वदा[15] जीती मनुजता[16] पाशविकता[17] हारती,
जय भारती जय भारती जय भारती जय भारती ।

कल क्या थे क्या आज हैं कल और क्या होना अभी,
भूली न अपनी सभ्यता पल-पल समय बदला कभी ।
श्रेय[18] को वन्दित[19] किया श्रम[20] की उतारी आरती,
जय भारती जय भारती जय भारती जय भारती ।

1. आकाश, आसमान ; 2. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 3. ज़मीन, पृथ्वी, धरा ; 4. भारतीय, वचन, वाणी, सरस्वती ; 5. सुबह ; 6. हवा, पवन ; 7. लगातार, अविराम ; 8. महिमा, महत्व, गुरूत्व, भारीपन ; 9. यह पर्वत भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है । आर्यावत देश की दक्षिण सीमा परयह पर्वत है विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश दक्षिणापथ का दक्षिण कहलाता है । इसमें दो नदियाँ नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा में बहकर अरब की खाड़ी में गिरती हैं । इस पर्वत के पत्थर प्रायः बलुए और परतदार होते हैं । इसकी अनेक शाखाएँ प्रशाखाएँ सतपुरा आदि नाम से विख्यात हैं । पुराणानुसार यह सात कुल पर्वतों में है और मनु के अनुसार मध्य देश की दक्षिण सीमा है । महाभारत में कथा है कि विन्ध्य ने कहा कि मेरु (सुमेरु = पामीर) हिमालय के समान तुम हमारी प्रदक्षिणा किया करो । जब सूर्य ने न माना तब विन्ध्य ऊपर उठने लगा और यह आशंका हुई कि यह सूर्य का मार्ग ही रोक लेगा । देवताओं ने अगस्त्य जी से प्रार्थना की । अगस्त्य जी उनके पास गये और उसने साष्टांग दंडवत किया। मुनि ने कहा जब तक मैं न लौटूँ, तब तक इसी तरह पड़े रहना। इतना कह कर अगस्त्य जी चले गये और फिर वापिस नहीं आए । कहते हैं कि इसीलिए अब तक यह पर्वत ज्यों का त्यों लेटा पड़ा है और इसीलिए इसका इतना अधिक विस्तार है ; 10. पार लगाना, सद्‌गति देना, डूबते को किनारे पहुँचाना ; 11. गौरव, प्रतिष्ठा, मान, सीमा, हद ; 12. निछावर ; 13. भूंकप, भूडोल ; 14. क्रोध, गुस्सा, जलन ; 15. हमेशा ; 16. मानवीयता, इंसानियत ; 17. पशुवत आचरण ; 18. उत्तम, श्रेष्ठ, मंगलकारक, शुभ ; 19. स्तुति, पूजन, वन्दना की गई ; 20. मेहनत, काम, प्रयास ।

(08.10.2010)
सिडनी

16. सारे जग में गूँजता.......

सारे जग[1] में गूँजता,
केसरी धवल[2] हरा ।

शक्ति का प्रतीक ये,
समृद्धता[3] का गीत ये ।
शत्रुओं में भय भरे,
मित्र शांति दूत ये ।

देश-देश घूमता,
केसरी धवल हरा ।

यह सजाये धर्मचक्र[4],
काल गति अनवरत[5] ।
रुक नहीं झुक नहीं,
आगे आगे बढ़ता चल ।

लहर फहर झूमता,
केसरी धवल हरा ।

यह हमारी शान है,
यह हमारी आन है ।
अस्मिता[6] भी है यही,
यह हमारी जान है ।

नीले नभ को चूमता,
केसरी धवल हरा ।

1. संसार, जगत, चेतन सृष्टि ; 2. श्वेत, सफेद ; 3. सम्पन्नता, सशक्त, प्रभावशाली, अधिक ; 4. धर्मशिक्षा रूपी पहिया, तिरंगे में चल चक्र के रूप में ; 5. लगातार, अविराम ; 6. अपनी सत्ता का भाव, अहंभाव, अभिमान ।

(13.10.2010)
सिडनी

17. जय जय रे निर्विशेष निर्गुण.......

जय जय रे निर्विशेष[1] निर्गुण[2] सत[3] निराकार[4],
जय जय रे हे अशेष[5] विविध[6] रूप नामाधार[7] ।

दशरथ कौशल्या सुत[8] सीता पति राजाराम,
नन्द और जसुमति सुत राधाप्रिय गोप श्याम ।

जय जय रे हे जनेश[9] मन चेतन सूत्रधार[10],
जय जय रे हे अशेष विविध रूप नामाधार ।

ब्रह्मा अरु[11] शेषशायी[12] हरि[13] श्री[14] वैकुण्ठ धाम[15],
पशुपति[16] संग पार्वती आसित[17] कैलाशधाम ।

जय जय रे हे महेश[18] जगत पिता परमपार,
जय जय रे हे अशेष विविध रूप नामाधार ।

वल्ली देवयानी पति मुरुगन–स्कन्द नाम,
एकदंत[19] दयावंत[20] ऋद्धि–सिद्धि पति प्रणाम ।

जय जय रे हे गणेश[21] मंगलमय[22] विघ्नहार[23],
जय जय रे हे अशेष विविध रूप नामाधार ।

1. परब्रह्म, सदा एक रूप में रहने वाला, तुल्य, समान ; 2. गुणरहित, परमात्मा, त्रिगुणातीत परब्रह्म ; 3. सच, सत्य, उत्तम, श्रेष्ठ ; 4. आकार रहित, बिना आकर का ; 5. सम्पूर्ण, समूचा, सब का सब, अपार ; 6. कई तरह, कई प्रकार का ; 7. सभी नामों का आधार ; 8. पुत्र, बेटा ; 9. परमात्मा, राजा ; 10. नाट्यशाला का व्यवस्थापक ; 11. और ; 12. विष्णु, शेषनाग पर शयन करने वाले ; 13. विष्णु ; 14. लक्ष्मी, कांति, वैभव, सरस्वती, ऐश्वर्य ; 15. भगवान विष्णु के रहने का स्थान, स्वर्ग ; 16. प्राणियों का स्वामी, महादेव, शिव ; 17. बैठा हुआ ; 18. महादेव, शिव ; 19. एक दाँत वाला ; 20. दयालु ; 21. संघ या समूह का स्वामी, गणपति ; 22. कल्याण करने वाला ; 23. बाधाओं को हरने वाले ।

(20.10.2010)
सिडनी

18. प्राण भरो रे नव-स्पंदन.......

प्राण भरो रे नव[1]-स्पंदन[2],
ज्योति भरो रे मोद-मंदिर[3] मन ।
दृष्टि भरो रे शुभ-सुन्दरतम,
शक्ति भरो रे श्रांत[4]-शिथिल[5] तन ।

शब्द भरो रे अभिनव[6] अनुपम[7],
भाव भरो रे सात्विक[8]-उत्तम[9] ।
कंठ[10] भरो रे मधुमय[11] क्रन्दन[12],
गाऊँ मैं भव-भारण[13] वंदन ।

1. नया, नवीन ; 2. कम्पन, धड़कन ; 3. हँसी और नशे से भरा हुआ ; 4. थका हुआ, दुखी, खिन्न ; 5. ढीला, सुस्त, आलसी ; 6. नया ; 7. बेजोड़ ; 8. सत्व गुण सम्पन्न ; 9. सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रधान ; 10. गले से निकला स्वर ; 11. मीठा ; 12. रोना, विलाप करना ; 13. मुक्ति देने वाले ।

(27.10.2010)
सिडनी

19. जो बीता सब व्यर्थ हुआ तब.......

जो बीता सब व्यर्थ हुआ तब, तब जाना यह जीवन क्या,
अर्थवान निरअर्थ हुआ तब, तब जाना यह जीवन क्या ।

जब चाहे तब हँसना रोना,
जब चाहे तब सोना-खाना ।
अपनी ही बस धुन में रहना,
जब चाहे जी भर चिल्लाना ।

यौवन का उत्कर्ष[1] हुआ तब, तब जाना यह बचपन क्या,
अर्थवान निरअर्थ हुआ तब, तब जाना यह जीवन क्या ।

अधर भरें रह-रह कर कम्पन,
दिल भरता द्रुतगति स्पंदन ।
पंछी बन कर उड़ना चाहे,
छूना चाहे नीला नभ मन ।

प्रेम का मधुमय दर्द हुआ तब, तब जाना यह यौवन क्या,
अर्थवान निरअर्थ हुआ तब, तब जाना यह जीवन क्या ।

सीमाओं में बद्ध[2] बहारें,
इच्छाओं की दीर्घ[3] कतारें ।
घनी भीड़ का घना कोलाहल[4],
आकुल[5] मन की आर्त[6] पुकारें ।

जब हर नव[7] गत[8] वर्ष हुआ तब, तब जाना यह जीवन क्या,
अर्थवान निरअर्थ हुआ तब, तब जाना यह जीवन क्या ।

1. ऊपर खींचना, उन्नति, समृद्धि ; 2. घेरे में बंद ; 3. बड़ा, विस्तृत ; 4. हल्ला, शोर ; 5. परेशान, व्याकुल ; 6. दुखी, अस्वस्थ ; 7. नया, नवीन ; 8. बीता हुआ, पिछला ।

(06.11.2010)
सिडनी

20. स्वर्ण दीप्ति व्याप्त व्योम.......

स्वर्ण[1] दीप्ति[2] व्याप्त[3] व्योम[4],
सूर्य क्षितिज[5] लुप्त[6] सोम[7] ।
शीत शांत सुरभि[8] वात[9],
शुभ प्रभात शुभ प्रभात ।

ऊर्ध्व[10]-ऊर्ध्व हरित[11] वृक्ष[12],
विहग[13] वृन्द[14] रम्य[15] दृश्य ।
फुल्ल[16]-फुल्ल पुष्प पात[17],
शुभ प्रभात शुभ प्रभात ।

विविध[18] रूप राग-रंग,
पंचम[19] स्वर संग-संग ।
पुलक[20]-पुलक प्राण गात[21]
शुभ प्रभात शुभ प्रभात ।

दृष्टि भर अपना लक्ष्य,
उठ रे चल पथ प्रशस्त[22] ।
ओ अमर्त्य[23] ओ सुजात[24],
शुभ प्रभात शुभ प्रभात ।

1. सोना, कनक ; 2. प्रकाश, उजाला, रौशनी, शोभा, छवि ; 3. फैला हुआ, छाया हआ, विस्त्रत ; 4. आकाश, अन्तरिक्ष, आसमान ; 5. वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 6. गायब, अदृश्य, छिपा हुआ ; 7. चंद्रमा ; 8. सुगन्धित, खुशबूदार, सुंदर, मनोरम, उत्तम, श्रेष्ठ ; 9. हवा, पवन ; 10. ऊपर की ओर गया हुआ ; 11. हरा ; 12. पेड़ ; 13. पक्षी, पंछी, विहग, खग ; 14. समूह ; 15. रमणीय, सुंदर ; 16. प्रसन्न, विकसित ; 17. पेड़ का पत्ता, पत्र ; 18. कई तरह का, कई प्रकार का ; 19. पांचवाँ ; 20. हर्ष, भय आदि मनोविकारों की प्रबलता में रोंगटे खड़े होना ; 21. शरीर, देह ; 22. उत्तम, शुभ, प्रशंसा योग्य ; 23. अमर ; 24. सुंदर, कुलीन ।

(17.11.2010)
सिडनी

21. भूले हो तुम क्या करें......

भूले हो तुम क्या करें, दर्द की क्या दवा करें,
जहाँ रहो सुखी रहो, दिल से यही दुआ करें ।

कैसी मिली हमें ये सज़ा,
अपना पता न जग का पता ।
किसी से कहें तो क्या हम भला,
मन ही मन घुटा करें ।

भूले हो तुम क्या करें, दर्द की क्या दवा करें,
जहाँ रहो सुखी रहो, दिल से यही दुआ करें ।

तुमने किया वह भी भला,
हमने किया वह भी भला ।
किस की कमी किस की खता,
अब क्या ये फैसला करें ।

भूले हो तुम क्या करें, दर्द की क्या दवा करें,
जहाँ रहो सुखी रहो, दिल से यही दुआ करें ।

कैसे हो जाने क्या है पता,
ढूँढें तो ढूँढें कहाँ हम भला ।
आओगे फिर से वापिस यहाँ,
पल-पल यही इर्तजा[1] करें ।

भूले हो तुम क्या करें, दर्द की क्या दवा करें,
जहाँ रहो सुखी रहो, दिल से यही दुआ करें ।

1. आशा, उम्मीद

(02.12.2010)
सिडनी

22. तुम आओ तुम आओ......

तुम आओ तुम आओ,
तुम आओ तुम आओ ।
मेरे नीरव[1] मरुथल[2] मन पर,
घन[3]-घन[4] बन-बन छाओ ।

तुम आओ तुम आओ,
तुम आओ तुम आओ ।

आओ जैसे आता सावन,
पुरवा के संग सन-सन-सन-सन ।
रिमझिम-रिमझिम रिमझिम-रिमझिम,
अमृत जल बरसाओ ।

तुम आओ तुम आओ,
तुम आओ तुम आओ ।

भीगे कण-कण भीगे तृण-तृण[5],
पल्लव[6] पुष्पित सुरभित[7] द्रुम[8]-द्रुम ।
क्षण-क्षण प्रतिक्षण क्षण-क्षण प्रतिक्षण,
जग जीवन महकाओ ।

तुम आओ तुम आओ,
तुम आओ तुम आओ ।

अर्थ भरे फिर मेरा जीवन,
मरुथल बन जाए फिर मधुबन ।
गुन-गुन गुन-गुन गुन-गुन गुन-गुन,
नभ[9] स्वर मय कर जाओ ।

तुम आओ तुम आओ,
तुम आओ तुम आओ ।

1. शब्द रहित, शब्द न करने वाला ; 2. रेतीला और जल रहित प्रदेश ; 3. घना, ठस ; 4. मेघ, बादल ; 5. तिनका, घास, खर-पात ; 6. नया एवं कोमल पत्ता ; 7. सुगन्धित, खुशबूदार, मनोरम, सुन्दर ; 8. पेड़, वृक्ष ; 9. आकश, गगन, आसमान ।

(13.12.2010)
सिडनी

23. आज क्यों ऐसे तुम गुमसुम हो.......

आज क्यों ऐसे तुम गुमसुम हो,
कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो ।
भेद छिपाए कौन सा आखिर,
कुछ तो खोलो कुछ तो खोलो ।

कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो,
कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो ।

क्या कुछ खोया पाते-पाते,
दर्द पला क्या जाते-जाते ।
कुछ कह दोगे दर्द बटेगा,
शब्दों के संग कुछ तो खेलो ।

कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो,
कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो ।

अपनी न चाहो जग की सुना दो,
गीत गज़ल कविता ही गा दो ।
जो भी कहोगे मन से सुनेंगे,
यह कटु नीरवता[1] तो तोड़ो ।

कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो,
कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो ।

या फिर कोई है मज़बूरी,
चुप रहना ही सबसे जरुरी ।
शब्द मौन है माना हमने,
संकेतों से ही कुछ बोलो ।

कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो,
कुछ तो बोलो कुछ तो बोलो ।

1. शब्द रहित, शब्द न करने वाला ।

(13.12.2010)
सिडनी

24. परहित ही सद–अर्थ हुआ सदा.......

परहित[1] ही सद[2]–अर्थ हुआ सदा,
पल–पल जीवन गति कहती है ।
पाप विनाशिनि पावन गंगा,
युग–युग से कल–कल बहती है ।

हरि[3] के पद[4] नख[5] से जब निकली,
ब्रह्म कमंडल भरती जाकर ।
ब्रह्म कमंडल से जब निकली,
लट उलझी शशि–शेखर[6] आकर ।

अमृतदायिनि मोक्ष प्रदायिनि,
स्वर्ग से भू[7] अविरल बहती है ।
पाप विनाशिनि पावन गंगा,
युग–युग से कल–कल बहती है ।

संग भगीरथ जब वह निकली,
जान्हू[8] उदर[9] आश्रम को बहाकर ।
जान्हू कर्ण[10] से बाहर निकली,
बहती समतल[11] गिरती सागर ।

प्राण–दायिनी पुण्यप्रदायिनि,
जन हित कितने दु:ख सहती है ।
पाप विनाशिनि पावन गंगा,
युग–युग से कल–कल बहती है ।

मकरमत्स्य[12] वाहन पर निकली,
शिर पर कनक[13] किरीट[14] सजाकर ।
कनक कलश कर में ले निकली,
परम हर्षिता[15] शिव को पाकर ।

वसु[16]-वत्सला[17] शांतनु[18] संगिनि,
अनुपम[19] अतुलित[20] अरु महती[21] है ।
पाप विनाशिनि पावन गंगा,
युग-युग से कल-कल बहती है ।

1. दूसरे की भलाई ; 2. सच, सत्य, उत्तम, श्रेष्ठ ; 3. विष्णु ; 4. पैर ; 5. नाख़ून ; 6. महादेव, शिव ; 7. ज़मीन, पृथ्वी ; 8. एक ऋषि जिनका आश्रम हिमालय पर था ; 9. पेट ; 10. कान ; 11. चौरस, बराबर ; 12. गंगाजी का वाहन जो आगे से मगरमच्छ और पीछे मछली जैसा है ; 13. सोना ; 14. मुकुट ; 15. प्रसन्न, खुश ; 16. महाभारत के अनुसार अनल, धरा, अनिल, अह, प्रत्यूष, प्रभास, सोम, ध्रुव आठ वसु ; 17. बच्चों से प्रेम करने वाली ; 18. भीष्म के पिता ; 19. उपमारहित, सर्वोत्तम, बेजोड़ ; 20. अपार, बेहिसाब, बिना तौला हुआ ; 21. बड़ी, महिमा ।

(27.12.2010)
सिडनी

25. ओ मनुज तू क्यों व्यथित......

ओ मनुज[1] तू क्यों व्यथित[2],
हर्ष से भर प्राण चित्[3] ।

भूल जा अवसाद[4] को,
तम[5] भरे नैराश्य[6] को ।

नेह[7] का आलोक[8] भर,
जगमगा दे सारा दिक्[9] ।

देख संसृति[10] सत्य को,
अनुपम[11] अनोखे दृश्य को ।

सब का सब आह्लादमय[12],
नृत्य करता हर एक चिद्[13] ।

तोड़ मन के बंध[14] को,
स्वर सजा किसी छन्द[15] को ।

नभ[16] सजा स्वर लहरियाँ,
गीत गा ले तू तनिक ।

1. मनुष्य, आदमी ; 2. व्यग्र, क्लेशित, दुखी ; 3. चेतना ; 4. सुस्ती, थकावट, उदासी, खेद, हार ; 5. अँधेरा, अंधकार, कालिख, माया, मोह ; 6. निराशा ; 7. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 8. प्रकाश, रौशनी, दर्शन, देखना, दृष्टि ; 9. दिशा, स्पेस ; 10. संसार, जगत ; 11. उपमाहीन, सर्वोत्तम, बेजोड़ ; 12. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 13. चेतनामय कण, मोनोड ; 14. बंधन, व्यवस्था ; 15. मात्रा की गणना के अनुसार पद्य बंध ; 16. आकाश, गगन, आसमान ।

(08.01.2011)
सिडनी

26. इस माटी की मैं संतति हूँ......

इस माटी की मैं संतति[1] हूँ,
सब जग माटी यह जाना ।
इस माटी से जन्म हुआ है,
इस माटी में मिल जाना ।

जन-जन[2] मन-मन सब माटी के,
कण-कण तृण-तृण[3] सब माटी के ।
किस को कहूँ मैं यह है पराया,
किस को कहूँ मैं अनजाना ।

इस माटी की मैं संतति हूँ,
सब जग माटी यह जाना ।
इस माटी से जन्म हुआ है,
इस माटी में मिल जाना ।

स्वप्न सुनहरे सब माटी के,
दृश्य रुपहले[4] सब माटी के ।
खोना किसको पाना किसको,
क्या फिर रोना पछताना ।

इस माटी की मैं संतति हूँ,
सब जग माटी यह जाना ।
इस माटी से जन्म हुआ है,
इस माटी में मिल जाना ।

वृद्धि[5] क्षरण[6] क्रम सब माटी के,
जन्म मरण क्रम सब माटी के ।
फिर कैसा अवसाद[7] हो किसका,
भय[8] कैसा क्या घबराना ।

इस माटी की मैं संतति हूँ,
सब जग माटी यह जाना ।
इस माटी से जन्म हुआ है,
इस माटी में मिल जाना ।

1. सन्तान, औलाद ; 2. लोग, लोक, जनसाधारण, जनता ; 3. तिनका, खर-पात ; 4. चाँदी का सा, उज्जवल तथा चमकीला ; 5. समृद्धि, अभ्युदय, विकास, प्रगति ; 6. क्षीण होना, रिसना, झड़ना ; 7. सुस्ती, थकावट, उदासी, खेद, हार ; 8. डर ।

(15.01.2011)
सिडनी

27. जागो-रे-जागो-रे-ओ सोने वालो.......

जागो-रे-जागो-रे-ओ सोने वालो,
स्वयं[1] जाते-जाते निशा[2] कह रही है ।
आऊँ में फिर से तो सोना दोबारा,
स्वयं जाते-जाते निशा कह रही है ।

फिर से सरोवर[3] में शतदल[4] खिलेंगे,
पुष्पों से भँवरे फिर से मिलेंगे ।
कूह-कूह कूह-कूह गाएगी कोयल,
चिड़ियों के झुरमुट[5] फिर से उड़ेंगे ।

फिर लालिमा छाएगी इस गगन[6] में,
चुपके से बदली फ़िज़ा[7] कह रही है ।
जागो-रे-जागो-रे-ओ सोने वालो,
स्वयं जाते-जाते निशा कह रही है ।

ले चल हमें भी सद्पथ[8] पे ले चल,
निर्भय[9] सदा हों प्रज्ञा[10] हो अविचल[11] ।
जो भी करें हम कल्याणमय हो,
मनुजता[12] से भर दो दे दो हमें बल ।

अपनी कृपा का प्रभु दान दे दो,
मधुर स्वर गुँजाती ऋचा[13] कह रही है ।
जागो-रे-जागो-रे-ओ सोने वालो,
स्वयं जाते-जाते निशा कह रही है ।

तुम्हें तो अनवरत[14] सृजन[15] गीत गाना,
कर्त्तव्य[16] पथ पर बढ़ते ही जाना ।
तुम्हें बढ़ के छूना नीलाभ[17] नभ[18] है,
तुम्हें तो क्षितिज[19] के उस पर जाना ।

उत्साह, उल्लास, स्फूर्ति[20] भर लो,
शीतल सुरभिमय[21] हवा कह रही है ।
जागो-रे-जागो-रे-ओ सोने वालो,
स्वयं जाते-जाते निशा कह रही है ।

1. खुद, अपने आप ; 2. रात, रात्रि ; 3. तालाब ; 4. कमल ; 5. झुण्ड ; 6. आकाश ; 7. वातावरण ; 8. सत्य का मार्ग, शुभ एवं कल्याणकारी रास्ता ; 9. बिना डर के ; 10. बुद्धि, समझ ; 11. अचल, स्थिर ; 12. मानवीयता ; 13. पद्य में रचा हुआ वेद मंत्र, स्त्रोत ; 14. लगातार, अविराम ; 15. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 16. करने योग्य, करणीय ; 17. नीली चमक ; 18. आकाश, आसमान ; 19. जहाँ धरती और आसमान मिलते दिखाई देते हैं ; 20. फुर्ती, तेजी, स्फुरण ; 21. सुगन्धित, सुवासित ।

(21.01.2011)
सिडनी

28. आये हो अबके सावन सबकी पुकार.......

आये हो अबके सावन सबकी पुकार बनकर,
बरसो रे बदरा बरसो रिमझिम फुहार बनकर ।

तप रहा है कण-कण बरसो तपन बुझा दो,
झुलस रहे जीवन बरसो सभी खिला दो ।
बरसो रे बदरा बरसो अमृत की धार बनकर,
बरसो रे बदरा बरसो रिमझिम फुहार बनकर ।

गायेगा फिर पपीहा नाचेगा फिर मयूरा,
एक हूक सी उठेगी झूमेगा जियरा-जियरा ।
बरसो रे बदरा बरसो सपने हजार बनकर,
बरसो रे बदरा बरसो रिमझिम फुहार बनकर ।

झूले पड़ेंगे फिर से झूलेंगी फिर से सखियाँ,
पींगें बढेंगी फिर से मीठी बनेंगी बतियाँ ।
बरसो से बदरा बरसो सबका त्यौहार बनकर,
बरसो रे बदरा बरसो रिमझिम फुहार बनकर ।

(23.01.2011)
सिडनी

29. दे रहे हो वर हमें, अब कौन सा.......

दे रहे हो वर हमें, अब कौन सा वरदान दोगे,
शब्द संस्कृति[1] दे हमें, अब कौन सा सम्मान दोगे ।

चेतना की सीढ़ियाँ चढ़ देखते हम सत्य क्या,
जलधि[2] में भू[3] प्रस्तरों[4] में ढूँढते जीवन कथा ।
कण तरंगित दर्श[5] दे, अब और क्या अभिराम[6] दोगे,
शब्द संस्कृति दे हमें, अब कौन सा सम्मान दोगे ।

प्रेम की अप्रतिम[7] पिपासा[8], पूर्ण का प्रतिभास[9] पाना,
सौंदर्य[10] अभिलाषा[11] सतत्[12] सममिति[13] सुसंगति[14] को जताना ।
दे सृजन[15] का सुख हमें अब कौन सी मुस्कान दोगे,
शब्द संस्कृति दे हमें, अब कौन सा सम्मान दोगे ।

वेदना[16] मुखरित[17] निरंतर[18] पुण्य क्या और पाप क्या,
दूसरे का दर्द क्या, नैराश्य[19] और अवसाद[20] क्या ।
मनुजता[21] का भान[22] दे, अब कौन सा अभिमान[23] दोगे,
शब्द संस्कृति दे हमें, अब कौन सा सम्मान दोगे ।

घट रही घटनाओं की क्रमबद्धता[24] को काल जाना,
होना आयामों[25] में होता देख हमने दिक्[26] पहचाना ।
काल-दिक् सातत्य[27] दे अब कौन सा नवज्ञान[28] दोगे,
शब्द संस्कृति दे हमें, अब कौन सा सम्मान दोगे ।

1. परिष्कृति, संस्कार, संस्कृत रूप देने की क्रिया ; 2. समुद्र, सागर ; 3. पृथ्वी, जमीन, धरा ; 4. पत्थरों ; 5. देखना ; 6. अच्छा लगने वाला, मोहक, सुखद ;

7. अनुपम, बेजोड़ ; 8. प्यास, इच्छा, तृष्णा, लोभ ; 9. एकाएक होने वाला ज्ञान, आभास, भ्रम ; 10. सुन्दरता ; 11. कामना, मन की चाह ; 12. लगातार ; 13. समानता और एकरूपता वाला ; 14. युक्त, उचित, अच्छा संग-साथ ; 15. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 16. कष्ट, व्यथा ; 17. ध्वनित, शब्दायमान ; 18. लगातार ; 19. निराशा ; 20. सुस्ती, थकावट, खेद, उदासी ; 21. मानवीयता ; 22. ज्ञान, बोध, आभास, प्रतीति ; 23. घमंड ; 24. सिलसिलेवार ; 25. विस्तार, डाईमेंशन ; 26. दिशा, स्पेस ; 27. निरन्तरता ; 28. नई जानकारी ।

(29.01.2011)
सिडनी

30. सूरज कहता चंदा कहता.......

सूरज कहता चंदा कहता, झिलमिल-झिलमिल तारे कहते,
अम्बर[1] कहता बादल कहता, नभचर[2] थलचर[3] सारे कहते ।
है देश मेरा सबसे सुन्दर, माँ भू[4] ग्रीवा[5] का गहना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

यहाँ आशा भर हर प्रात जगे, हँस-हँस कर खेले सारा दिन,
सुरमई-सुरमई शाम ढले, फिर रात्रि भरे सपने अनगिन ।
यहाँ कई रंग हैं माटी के, हर माटी रंग सलोना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

यहाँ घने-घने बादल छाएँ, हों धन्य-धन्य जल बरसाकर,
यहाँ जल भर-भर नदियाँ बहतीं, कल-कल करतीं गिरती सागर ।
ऋतुएँ अविरल[6] अँगड़ाई लें, हर ऋतु भू नया बिछोना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

अपने बैलों की जोड़ी लें, काँधे पर अपने हल को धर,
अपने मन में आह्लाद[7] सजा, खेतों को अपने दें सब चल ।
उनको तो कृष[8] करनी धरती, उनको तो केवल बोना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

चुपके से नव अंकुर निकलें, फिर पौधे सब बन जाते हैं,
अपने मौसम के आते ही, सब फसलों में लहराते हैं ।
हर बार यही तो होता है, हर बार यही तो होना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

सत्य अहिंसा और शुचिता[9], प्रेम आदर सत्कार भरा,
मेरे देश की माटी में, ममतामयी दुलार भरा ।
जुड़ते जाना एक दूजे से, सब मन धागे में पिरोना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

मंदिर मस्जिद गुरद्वार सभी, मेरे देश की माटी पर,
उल्लास भरे त्यौहार सभी, मेरे देश की माटी पर ।
पाना है अपने गौरव को, कुंठा[10] कलुषों[11] को धोना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

ऋषि मुनियों विद्वानों की, जन्म भूमि है देश मेरा,
शौर्य[12] भरे बलिदानों की, जन्म भूमि है देश मेरा ।
छाना है हमको अब नभ[13] पर, पाना ही सब क्या खोना है,
है गर्व मुझे इस माटी पर, मेरे देश की माटी सोना है ।

1. आकाश, गगन, नभ, आसमान ; 2. आकाश में उड़ने वाले प्राणी ; 3. ज़मीन पर रहने वाले प्राणी ; 4. ज़मीन, पृथ्वी, धरा ; 5. गर्दन, गला ; 6. लगातार ; 7. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 8. जोतना ; 9. पवित्रता, शुद्धता, निष्कपटता, निर्मलता ; 10. निराशा जन्य अतृप्त भावना ; 11. मैल, विकार, अपवित्रता, पाप ; 12. शूरता ; 13. आकाश, गगन, आसमान ।

(14.02.2011)
सिडनी

31. यदि तुम्हें सम्मान से जीना धरा पर......

यदि तुम्हें सम्मान से जीना धरा[1] पर,
मृत्यु को चिर[2] संगिनी[3] अपनी बना लो ।
ऋतु[4] बदलती हैं सदा संज्ञान[5] सबको,
आए जो ऋतुराज[6] पलकों पर सजा लो ।

भय सदा आशंका से हमको डराता,
अब क्या होगा हाय अविरल[7] फुसफुसाता ।
कर्मरत[8] हो जान कर दायित्व[9] अपना,
शुभ[10] ही होगा मान अपना भय निकालो ।

पथ[11] सदा से प्रस्तरों[12] के होते आए,
हों कदाचित[13] ही कहीं तरुवर[14] के साए ।
पथ है दुर्गम[15] राह कंटकाकीर्ण[16] है ये,
पुष्प आशाओं भरे मन में खिला लो ।

है सृजन[17] ही राह में कलियाँ बिछाता,
है सृजन ही जो हमें मानव बनाता ।
गा सृजन के गीत तन्मय सुर-ओ-लय में,
मनुज[18] होकर मनुज की गरिमा बचा लो ।

सत्य क्या है क्या मनुज यह जान पाता,
है सदा पुरुषार्थ[19] ही अपना विधाता[20] ।
शक्ति, साहस, धैर्य[21] ही हैं देव अपने,
नेह[22] और उत्साह को संबल[23] बना लो ।

कल क्या हो कब आज किसने कल को देखा,
अब तलक किसने पढ़ी क्या भाग्य रेखा ।
संगठन[24] ही है हमारी सत्य[25] शक्ति,
मिल के चाहो आज यह नभ भी झुका लो ।

1. जमीन, पृथ्वी, भू ; 2. जो बहुत दिनों तक बना रहे, दीर्घ कालीन, दीर्घ, बहुत ; 3. सहचरी, पत्नी, भार्या ; 4. मौसम ; 5. ज्ञान, चेतना शक्ति, जानकारी ; 6. बसंत ऋतु ; 7. लगातार, अविराम ; 8. काम करने के लिए प्रवृत होना ; 9. जिम्मेदारी ; 10. मंगलकारी, कल्याणकारी ; 11. मार्ग, रास्ता ; 12. पत्थर ; 13. कभी, शायद, अगर, यदि ; 14. पेड़ ; 15. कठिन, विकट, दुर्बोध, जहाँ पहुँचना कठिन हो ; 16. काँटो से भरा हुआ ; 17. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 18. मनुष्य, आदमी ; 19. पुरूष के उद्देश्य एवं लक्ष्य का विषय, मनुष्योचित बल, पौरूष ; 20. विधान रचने वाला ; 21. धीरज ; 22. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 23. सहारा, सहायक वस्तु ; 24. संघ, बिखरी चीजों का इकट्ठा होना ; 25. सच, यथार्थ, यथातथ्य, सच्चाई ।

(23.02.2011)

सिडनी

32. पल ही पल में प्रात बीता.......

पल ही पल में प्रात बीता,
पल ही में मध्याह्न[1] रे ।
आ गई फिर सांध्य[2] बेला[3],
फिर दिवस[4] अवसान[5] रे ।

क्षीण[6] होती क्षितिज[7] लाली,
मिहिर[8] ने गर्दन झुका ली ।
भूलते रह-रह पथिक[9] फिर,
पथ[10] की क्या पहचान रे ।

स्वेद[11] लथपथ श्रांत[12] से तन[13],
तुष्ट[14] फिर भी हैं सभी मन ।
लौटते अपने निलय[15] फिर,
भर मधुर मुस्कान रे ।

सुप्त[16] होते फिर से शतदल[17],
नभ[18] सजाते फिर विहग[19] दल[20]।
खो रहे फिर से तिमिर[21] में,
दृश्य[22] नयनाभिराम[23] रे ।

तम[24] को ज्योतिर्मय[25] बना दे,
दीप्ति[26] भर घट[27]-घट सजा दे ।
प्रार्थनाएँ गूँजती फिर,
दे हमें वरदान दे ।

1. दोपहर ; 2. शाम का, संध्याकालीन ; 3. समय ; 4. दिन ; 5. पतन, समाप्ति, अंत, मृत्यु, विराम ; 6. कमजोर, निर्बल, जिसका क्षय हुआ हो ;

7. जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 8. सूरज, सूर्य ; 9. राही, बटोही ; 10. रास्ता, मार्ग ; 11. पसीना ; 12. थका हुआ, दुखी, खिन्न ; 13. शरीर, देह ; 14. संतोष, प्रसन्नता, तुष्ट होने की अवस्था ; 15. घर, वास स्थान, रहने की जगह ; 16. सोया हुआ, निद्रित, सुन्न, निष्क्रिय, संकुचित, सुस्त ; 17. कमल ; 18. आकाश, आसमान, गगन ; 19. पंछी, पक्षी, विहंग, खग ; 20. गुट, गिरोह ; 21. अंधकार, अँधेरा ; 22. नज़ारा ; 23. नयनों को सुन्दर लगने वाला, सुंदर, मनोहर ; 24. अंधकार, अँधेरा, अज्ञान, मोह ; 25. जगमगाता हुआ, अत्यंत प्रकाशमान ; 26. प्रकाश, उजाला, रोशनी, आभा, चमक, शोभा, छवि ; 27. मन, देह, शरीर, घड़ा, कलश ।

(02.03.2011)
सिडनी

33. ज़िन्दगी की राह के तुम.......

ज़िन्दगी की राह के तुम पथिक[1] विशेष हो,
वक्ष[2] तान सर उठा, शान से चला करो ।

कभी घिरेंगी बदलियाँ,
कभी गिरेंगी बिजलियाँ ।
कभी घिरेगा घोर तम[3],
कभी चलेंगी आंधियाँ ।

रास्ते में आयेंगी, बार-बार मुश्किलें,
झुको नहीं डरो नहीं, डट मुकाबला करो ।

जो भी खिलखिला रहे,
जो भी जगमगा रहे ।
जो सदा सुरभि[4] भरे,
जो भी गुनगुना रहे ।

यही तो तेरे मीत हैं, साथ देंगे अंत तक,
आगे बढ़ तपाक से, प्यार से मिला करो ।

कोई राह में रुका,
कोई मोड़ मुड गया ।
कोई साथ कुछ चला,
कोई आगे बढ़ गया ।

अपनी-अपनी राह के, सब पथिक विशेष हैं,
जो भी साथ था भला, क्या खुशी-गिला[5] करो ।

तुम अमर्त्य[6] पुत्र हो,
तुम धरा[7] सुपुत्र हो ।
तुम हो शूरवीर[8]–धीर[9],
तुम निराल[10]–नित्य[11] हो ।

तुम जिधर भी चल दिए, राह एक बन गई,
एक मात्र सत्य यह, अब ये फैसला करो ।

1. राही, बटोही ; 2. छाती, सीना ; 3. अंधकार, अँधेरा ; 4. खुशबू ; 5. शिकायत, निंदा, उलाहना, उपालंभ ; 6. अमर ; 7. पृथ्वी, ज़मीन, भू ; 8. वीर व्यक्ति, योद्धा ; 9. नम्र, विनीत, शांत स्वभाव वाला ; 10. निराला, अनोखा, अनूठा ; 11. अविनाशी, शाश्वत, निरंतर ।

(03.03.2011)
सिडनी

34. मेरे मन का यह अंतरतम.......

मेरे मन का यह अंतरतम[1], स्वप्न सजाये नित[2] रह-रह कर,
तुम आये हो चुपके-चुपके, धीरे-धीरे पग[3] धर-धर-धर ।

आकुल[4] आँखों में भर लाये, मधुर मिलन की प्यास अपरिमित[5],
सुरभित[6] श्वासों में भर लाये, जीवन का उल्लास अनुपमित[7] ।

कोमल अधरों[8] से झरते हैं, मुस्कानों के मोती झर-झर,
तुम आये हो चुपके-चुपके, धीरे-धीरे पग धर-धर-धर ।

अपने उर[9] में तुम भर लाये, नेह प्रेम अनुराग[10] असीमित[11],
अपनी वाणी[12] में भर लाये, मधु[13] मृदुमय[14] पंचम[15] स्वर संगति[16] ।

तेरी प्रभ[17] छवि[18] से झरते हैं, ज्योत्स्ना[19] के निर्झर[20] झर-झर,
तुम आये हो चुपके-चुपके, धीरे-धीरे पग धर-धर-धर ।

अंजुलि[21] पुष्पों से भर लाये, वर[22] श्रद्धा विश्वास के अनगित[23],
पग[24] में नूपुर[25] स्वर भर लाये, मेरे तममय[26] गत[27] की विस्मृति[28] ।

नश्वरता[29] पुलकित[30] हो गाये, शुभ[31] सुन्दरतम् रुचिकर[32] सुखकर,
तुम आये हो चुपके-चुपके, धीरे-धीरे पग धर-धर-धर ।

1. मर्म, हृदय, दिली गहराई ; 2. निरंतर, हर रोज़, हर समय ; 3. पैर, पाँव ; 4. परेशान, बेचैन, उतावला, अव्यवस्थित ; 5. बे-हद, बे-हिसाब ; 6. खुशबू से भरा, सुवासित ; 7. जिसकी कोई उपमा न हो, बेजोड़ ; 8. ओंठ ; 9. छाती, हृदय ; 10. प्रेम, भक्ति, लाल रंग ; 11. जो सीमित न हो, बेहद ; 12. वचन, बात, जीभ, रसना ; 13. शहद, फूलों का रस, शराब, मद्य ; 14. कोमल, मधुर, सुहावना, हल्का, धीमा ; 15. पाँचवाँ ; 16. उचित ताल-मेल, मिला हुआ, मेल खाना ; 17. प्रकाश, दीप्ति ; 18. शोभा, सुन्दरता ; 19. चाँदनी ; 20. झरना ; 21. हथेलियों पर बनाया गया गड्ढा ; 22. वरदान, देवता से प्रसाद रूप में

माँगना, उत्तम ; 23. अगणित, अनगिनत, श्रेष्ठ ; 24. पैर ; 25. घुँघरू, पैंजनी ; 26. अंधकारमय ; 27. बीता हुआ, पुराना ; 28. भूल जाना ; 29. नाश होने की अवस्था ; 30. प्रेम, हर्ष आदि मनोविकारों से रोमांचित होना ; 31. कल्याण, मंगल ; 32. प्रिय, उम्दा ।

(08.03.2011)
सिडनी

35. अरुणाभ से भरता गगन.......

अरुणाभ[1] से भरता गगन[2],
उड़ ले पंछी हो मगन ।

हँस रहे तरुवर[3] सभी,
खिल रहे शतदल[4] सभी ।
हैं तरंगित फिर तड़ाग[5],
शांत शीतल फिर पवन[6] ।

अरुणाभ से भरता गगन,
उड़ ले पंछी हो मगन ।

बोलती फिर से शुकी[7],
गा रही फिर से पिकी[8] ।
गूँजता फिरता है भँवरा,
फुल्ल[9]-सुरभित[10] फिर चमन ।

अरुणाभ से भरता गगन,
उड़ ले पंछी हो मगन ।

तू पंख अपने तान ले,
विस्तार फिर पहचान ले ।
तू फिर से छू अभिलाष[11] नभ[12],
अब छोड़ धरती का वसन[13] ।

अरुणाभ से भरता गगन,
उड़ ले पंछी हो मगन ।

1. लाल आभा से युक्त, लालिमा युक्त ; 2. आकाश, आसमान ; 3. पेड़ ; 4. कमल ; 5. सरोवर, तालाब ; 6. हवा ; 7. मादा तोता ; 8. मादा कोयल ; 9. प्रसन्न, विकसित ; 10. सुवासित, सुगन्धित, खुशबू से भरा ; 11. अभिलाषा, इच्छा, कामना ; 12. आकाश, आसमान, गगन ; 13. कपड़ा, वसन ।

(09.03.2011)
सिडनी

36. ध्वंस जब उन्माद भर कर.......

ध्वंस[1] जब उन्माद[2] भर कर, चीखता हो इस धरा[3] पर,
तुम सृजन[4] के गीत लय में, गुनगुनाओ बात तब है ।
भर रहा कोई गगन[5] जब, घन[6] तिमिर[7] को अंक[8] अपने,
नेह से भर कोई दीपक, जगमगाओ बात तब है ।

अब भी सीमाबद्ध हैं, सुरभिमय[9] मधुरित[10] बहारें,
अब भी अति दुर्भेद्य[11] हैं, रूढ़ि की सुदृढ़[12] दीवारें ।
रंग, धर्म और राष्ट्र के, हैं अभी अवरोध[13] अगणित[14],
आगे बढ़ अवरोध कोई, तोड़ पाओ बात तब है ।

दीनता तन पर लपेटे, प्रार्थना भर बढ़ रहे कर[15],
ताड़ना अपमान सहते, यातना भर झुक रहे सर ।
मनुजता[16] छलका रही, नयनों से अपने नीर अब भी,
तुम कोई सा अश्रु इसका, पोंछ पाओ बात तब है ।

आये जब मधुमास[17] हँसते, फुल्ल[18] सुरभित[19] पुष्प सारे,
आये जब पतझड़ दुखी हों, पर्ण[20] बिन तरुवर[21] बेचारे ।
आये सुख हँसते सभी और, आये दुःख रोते सभी हैं,
रो रहा हो निज हृदय जब, मुस्कराओ बात तब है ।

है सरल ही सर्वदा, राजपथ पर चलते जाना,
है सदा से ही कठिन, मार्ग अपना खुद बनाना ।
नमन करता विश्व उसको, राह अपनी जो बनाए,
प्रस्तरों[22] में राह अपनी, खुद बनाओ बात तब है ।

स्वर्ग में कहते सदा ही, स्फूर्ति और उल्लास पलते,
सत्य पलता न्याय पलता, प्रेम और विश्वास पलते ।
कौन जाने सत्य क्या है, क्या किसी ने स्वर्ग देखा,
इस धरा को स्वर्ग जैसा, तुम सजाओ बात तब है ।

1. विनाश ; 2. पागलपन ; 3. ज़मीन ; 4. रचना, उत्पत्ति ; 5. नभ, आकाश ; 6. घना ; 7. अंधकार ; 8. गोद, संख्या ; 9. खुशबूदार ; 10. मिठास युक्त ; 11. जिसे भेदना कठिन हो ; 12. मजबूत ; 13. रुकावट ; 14. अनगिनत ; 15. हाथ ; 16. मानवीयता ; 17. बसंत ; 18. प्रसन्न ; 19. खुशबू ; 20. पत्ता ; 21. पेड़ ; 22. पत्थर ।

(11.03.2011)
सिडनी

37. ओ पथिक अब तो ठहर.......

ओ पथिक[1] अब तो ठहर,
आ तनिक विश्राम[2] कर ले ।
स्वेद[3] लथपथ श्रांत[4] तन[5] और,
क्षुब्ध[6] मन को शांत कर ले ।

लालिमा फैली क्षितिज[7] पर,
लुप्त[8] होती जा रही है ।
जा रही चुपचाप संध्या,
रात्रि घिरती आ रही है ।

उड़ रहे फिर से विहग[9] दल[10],
लौटने को नीड़[11] अपने ।
सुप्त[12] होते फिर से शतदल[13],
देखने को कल के सपने ।

रातरानी फिर से खिलकर,
वायु को महका रही है ।
जा रही चुपचाप संध्या,
रात्रि घिरती आ रही है ।

नभ[14] सजेगा चंद्रमा फिर,
अनगिनत फिर तारे होंगे ।
ज्योत्स्ना[15] से फिर धरा[16] और,
शांत भू[17] पर सारे होंगे ।

नभ कहेगा फिर धरा से,
अब सुना क्या गा रही है ।
जा रही चुपचाप संध्या,
रात्रि घिरती आ रही है ।

1. राही, बटोही ; 2. आराम ; 3. पसीना ; 4. थका हुआ, दुखी, खिन्न ; 5. देह, शरीर ; 6. परेशान, विकल, क्रुद्ध, कुपित ; 7. जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 8. गायब ; 9. पक्षी, पंछी, विहंग, खग ; 10. गुट, समूह ; 11. घोंसला, चिड़ियों के बैठने का स्थान ; 12. सोया हुआ, सुन्न, निद्रित, संकुचित ; 13. कमल ; 14. आकाश, आसमान ; 15. चाँदनी रात, चन्द्रमा का पृथ्वी पर प्रकाश ; 16. जमीन, भू ; 17. जमीन, धरा ।

(14.03.2011)
सिडनी

38. स्वतंत्रता का सूर्य क्षितिज.......

स्वतंत्रता[1] का सूर्य क्षितिज[2],
मध्यरात्रि[3] अधविश्व[4] सुप्त[5] ।
कोटि[6]-कोटि स्वर गूँज उठे,
जय भारत स्वाधीन[7] मुक्त[8] ।

नव्य[9] तेज[10] नभ[11] आलोकित[12],
तममयता[13] को कर निरस्त[14] ।
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त,
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त ।

नेह[15] रश्मियाँ[16] व्याप्त[17] व्योम[18],
शीतल[19] सुरभित[20] ओ[21] शांतवात[22] ।
फुल्लप्राण[23]-ओ-पुलक[24] रोम[25],
नयनों[26] में आशामय प्रभात[27] ।

दृष्टि[28] भरे मोहित होकर,
शुभमय[29] रुचिकर[30] पथ[31] प्रशस्त[32] ।
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त,
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त ।

स्मृति[33] में भरते गर्व[34] सदा,
वे ज्योतिपुंज[35] सम[36] क्रांतिवीर[37] ।
वह सत्य मार्ग[38] का एक पथिक[39],
लाठी ले चलता अतुल[40] धीर[41] ।

आगे-आगे बढ़ जाते पग[42],
पीछे चल देता जन[43] समस्त[44] ।
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त,
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त ।

दे दीं आहुतियाँ[45] प्राणों की,
है नमन[46] सभी परवानों[47] को ।
नमन सभी ऋषियों मुनियों,
है नमन सभी बलिदानों[48] को ।

नमन तुम्हें ओ मातृभूमि[49],
सिर पर धर मेरे वरद[50] हस्त[51] ।
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त,
पन्द्रह अगस्त, पन्द्रह अगस्त ।

1. आज़ादी, स्वाधीनता, स्वतंत्र होने का भाव ; 2. जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 3. आधी रात्रि ; 4. आधा संसार ; 5. सोना, निद्रित, सुन्न, निष्क्रिय, संकुचित ; 6. असंख्य, करोड़ों ; 7. आज़ाद ; 8. आज़ाद, स्वतंत्र, छूटा हुआ ; 9. नया, नवीन ; 10. चमक, तीव्रता, उग्र ; 11. आकाश, आसमान ; 12. प्रकाश युक्त, चमकता हुआ ; 13. अँधेरा, अंधकार ; 14. दूर करना, हटाना, रद्द करना ; 15. स्नेह, प्रीति, प्यार ; 16. किरणें ; 17. सब जगह फैला हुआ ; 18. आकाश, अन्तरिक्ष, आसमान ; 19. ठंडी ; 20. सुगन्धित, खुशबूदार ; 21. और ; 22. मौन हवा ; 23. प्रसन्न मन ; 24. हर्ष, भय आदि मनोविकारों से रोंगटे खड़े होना, रोमांच ; 25. रोआँ, शरीर पर छोटा पतला तथा नर्म बाल ; 26. आँखों ; 27. सुबह ; 28. नज़र ; 29. मंगलकारी, कल्याणकारी, अच्छी ; 30. प्रिय, उम्दा ; 31. रास्ता, मार्ग ; 32. उत्तम, शुभ ; 33. याद ; 34. अभिमान, घमंड ; 35. चमकते प्रकाश का समूह ; 36. बराबर, एक सा, सदृश ; 37. व्यवस्था में परिवर्तन के लिए लड़ने वाले योद्धा ; 38. रास्ता ; 39. राही, बटोही ; 40. जिसकी तौल न हो सके, असीम, अमित ; 41. धीरज ; 42. पैर, पाँव ; 43. जनता, जनसाधारण, लोक ; 44. सारा ; 45. यज्ञ या हवन में अग्नि को समर्पित की जाने वाली वस्तु ; 46. प्रणाम ; 47. पतिंगा, शलभ ; 48. कुर्बानी, अर्पण ; 49. धरती माँ, देश ; 50. वरदान देने वाला या वाली ; 51. हाथ ।

(17.03.2011)
सिडनी

39. तेरे द्वार चढ़ रहे.......

तेरे द्वार[1] चढ़ रहे,
फुँकारते हुए भुजंग[2] ।
आज तुझ पे हँस रहे,
दिखा-दिखा विषैले दन्त[3] ।

हे अजेय[4] शूरवीर[5],
जाग-जाग-जाग-जाग ।
हे अखंड[6], हे निशंक[7],
हो प्रचंड[8], हो प्रचंड ।

नेत्र[9] रुधिर[10] लाल-लाल,
उर[11] में भर अग्नि ज्वाल[12] ।
ओष्ठ[13] भींच, भृकुटि[14] खींच,
रौद्र[15] रूप हो कराल[16] ।

पद[17] पटक, सर झटक,
मुष्टि[18] तान, भर ले कंप ।
हे अखंड, हे निशंक,
हो प्रचंड, हो प्रचंड ।

खड्ग[19] ले, परशु[20] ले,
ले गदा, धनुष बाण ।
ले ले सारे अस्त्र-शस्त्र,
ले परिघ[21], ले कृपाण[22] ।

युद्ध वेश वीर सज,
पहन अब शिरस्त्राण[23] ।
हे अखंड, हे निशंक,
हो प्रचंड, हो प्रचंड ।

युद्ध भूमि कर निनाद[24],
मार-मार काट-काट ।
रुदन हो, हाहाकार,
आर्तनाद[25], चीत्कार ।

क्षत-विक्षत[26], हत-आहत[27],
रक्त दिग्ध[28], अंग-प्रत्यंग[29] ।
हे अखंड, हे निशंक,
हो प्रचंड, हो प्रचंड ।

1. दरवाज़ा ; 2. साँप ; 3. दाँत ; 4. जिसे जीता न जा सके ; 5. योद्धा, वीर व्यक्ति ; 6. सम्पूर्ण, निर्विघ्न ; 7. नि:शंक ; 8. भयंकर, भीषण, अति उग्र, असह्य, कठिन ; 9. आँख, नयन ; 10. खून, रक्त ; 11. ह्रदय, छाती ; 12. आग की लपट, ज्वाला ; 13. ओंठ ; 14. भोंह ; 15. भीषण, विकट, अत्यंत क्रोध ; 16. भयानक ; 17. पैर, पाँव ; 18. मुट्ठी ; 19. तलवार ; 20. फरसा ; 21. ढाल ; 22. तलवार ; 23. युद्ध में सर पर पहनने का टोप ; 24. भयंकर आवाज़ ; 25. दर्द भरी पुकार, गुहार ; 26. अत्यधिक घायल एवं लहूलुहान ; 27. मरे और घायल ; 28. खून से सना ; 29. शरीर का हर हिस्सा ।

(20.03.2011)
सिडनी

40. आज धरा पर एक अर्बुद से.......

आज धरा[1] पर एक अर्बुद[2] से अधिक तेरी सन्तान,
ओ रे मेरे देश महान, ओ रे मेरे हिंदुस्तान ।
आज कोई अमरीका यूरोप, फिजी तो सूरीनाम,
ओ रे मेरे देश महान, ओ रे मेरे हिंदुस्तान ।

तुंग[3] हिमालय उत्तर स्थित, योगी ध्यानी दृढ़[4] अविचल[5],
विस्तृत[6] सागर दक्षिण स्थित, उत्ताल[7] तरंगें भर अविरल[8] ।
तेरी माटी पर स्थित हैं, अनगिन पुण्य[9]-स्थान,
ओ रे मेरे देश महान, ओ रे मेरे हिंदुस्तान ।

उपजाऊ धरती तेरी है, हरे भरे तेरे जंगल,
नदियाँ बहतीं भर-भर पानी, मृदुमय स्वर में कल-कल-कल ।
तरह-तरह के मौसम तेरे, भरें खेत खलिहान,
ओ रे मेरे देश महान, ओ रे मेरे हिंदुस्तान ।

सदियों से आदर्श, हमारे, रामचन्द्रजी अरु सीता,
सदियों से अनुप्राणित[10] करती, व्यास रचित भगवतगीता ।
फल की चिंता क्यों करते हो, कर्म करो निष्काम[11],
ओ रे मेरे देश महान, ओ रे मेरे हिंदुस्तान ।

भाँति-भाँति के धर्म हमारे, भाषा संस्कृति जाति अलग,
भिन्न-भिन्न अस्तित्व हमारे, मन में सबके ताजमहल ।
सदा स्वभाव समन्वय[12] तेरा, यही तेरी पहचान,
ओ रे मेरे देश महान, ओ रे मेरे हिंदुस्तान ।

1. ज़मीन, पृथ्वी ; 2. अरब ; 3. बहुत ऊँचा, पर्वत ; 4. मजबूत, पक्का ; 5. स्थिर, अचल ; 6. फैला हुआ, विस्तार वाला ; 7. उन्मुक्त ; 8. लगातार, अविराम ; 9. पवित्र, शुभ, मंगलकारक, शुभ ; 10. प्रेरित, समर्पित, जीवंत ; 11. कामना एवं वासना से रहित, निर्लिप्त, बिना कामना के ; 12. नियमित क्रम, संयोग ।

(22.03.2011)
सिडनी

41. लन्दन वियना पैरिस देखूँ......

लन्दन, वियना[1], पैरिस देखूँ, मैं अमरनाथ[2] से रामेश्वर[3],
बीजिंग[4], बर्लिन[5], मैड्रिड[6] देखूँ, मैं सोमनाथ[7] से भुवनेश्वर[8] ।
मैं देखूँ घूमूँ शहर-शहर, मैं देखूँ सारा जहान,
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

कभी व्यास[9] पढ़ूँ कभी रामायण[10], कभी स्मृतियाँ[11] कभी अर्थशास्त्र[12],
कभी कुरल[13] पढ़ूँ कभी मैं पाणिनि[14], कभी वात्स्यायन[15] कभी नाट्यशास्त्र[16] ।
मैं पढ़ता बाइबिल, ग्रन्थसाहिब, तोरह[17], धम्म[18], कुरान,
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

मैं न्याय[19] पढ़ूँ कभी वैशेषिक[20], कभी योगशास्त्र[21] कभी सांख्य[22],
मीमांसा[23] पढ़ूँ मैं जैमिनी कृत, पर मन भाता वेदांत[24] ।
मार्क्स[25] पढ़ूँ एंजिल्स[26] पढ़ूँ, मैं पढ़ता नीत्शे[27], कांट[28],
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

मैं भारवि[29], भवभूति[30] पढ़ूँ, कभी अश्वघोष[31] कभी भास[32],
कभी बाणभट्ट[33] कभी दण्डी[34] मैं, कभी शूद्रक[35], कालिदास[36] ।
मैं पढ़ता ग्येटे[37], शैक्सपियर[38], काफ्का[39], कामू[40], मान[41],
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

कर्नाटक संगीत सुनूँ मैं, गीत सुनूँ हिन्दुस्तानी,
ध्रुपद, ख्याल कभी ठुमरी मैं, कभी गज़ल कभी कव्वाली ।
सुनता मैं मोत्जार्ट[42], विवाल्डी[43], हेडन[44], बीथोवान[45],
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

भंगड़ा[46] नाचूँ दंडिया[47] नाचूँ, कत्थक[48] देखूँ कभी कथकली[49],
भरतनाट्यम[50] कभी ओडिसी[51], कभी मणिपुरी[52] कभी कुचीपुडी[53] ।
टेंगो[54], साल्सा[55], डिस्को[56] नाचूँ, मैं करता कभी टैप डांस[57],
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

मैं बाघ[58], एलौरा[59], भज[60] देखूँ, मैं देखूँ जा के अजन्ता[61] को,
मैं देखूँ कन्हेरी[62], बादामी[63], मैं देखूँ भीमबैठका[64] को ।
मैं लस्काउक्स[65], स्फिंक्स[66] देखूँ, मैं टी-ओ-टीहुआकान[67]
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

मैं आबू[68], भरहुत[69], खुजराहो[70], कभी सारनाथ[71] कभी मैं काशी[72] ।
कभी चिदम्बरम[73], मामल्लपुरम[74], हम्पी[75], हेलबिड[76] और साँची[77],
मैं देखूँ जाकर बोरोबुदुर[78], और वेटिकन[79] पुण्य स्थान,
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

आनन्दपुर[80] कभी अजमेर[81] देखूँ, मैं देखूँ सीकरी[82], थानेश्वर[83],
श्रवनबेलगोल[84], तंजावुर[85] कभी, पुष्कर[86] देखूँ अमृतसर[87] ।
मैं चाहूँ नित कुछ नव देखूँ, मैं देखूँ नया आसमान,
बसा कर दिल में हिंदुस्तान, बसा कर दिल में हिंदुस्तान ।

1. आस्ट्रिया की राजधानी, पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध ; 2. जम्मू और कश्मीर राज्य में, अमरनाथ गुफा, बर्फ के प्राकृतिक शिवलिंग के लिए प्रसिद्ध ; 3. तमिलनाडु के रामनाथपुरम में, हिन्दुओं के चार धामों में से एक, बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक, भगवान राम ने लंका पर चढ़ाई से पूर्व यहीं से लंका तक पत्थरों का पुल बनवाया था ; 4. चीन की राजधानी, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए विख्यात ; 5. जर्मनी की राजधानी, सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए विख्यात ; 6. स्पेन की राजधानी, महलों एवं संग्रहालय के लिए प्रसिद्ध ; 7. सोमनाथ मन्दिर, भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक, गुजरात राज्य के पश्चिमी तट पर स्थित ; 8. उड़ीसा राज्य की राजधानी, कोणार्क के सूर्य मन्दिर के लिए प्रसिद्ध ; 9. वेद व्यास (800 ई.पू.? 3201 ई.पू.?), चारों वेदों का संकलन, महाभारत के रचयिता, सभी पुराण एवं उपपुराण व्यास (पदवी) से ही संबद्ध ; 10. महर्षि वाल्मीकि रचित संस्कृत महाकाव्य, 24000 श्लोक, रचना काल लगभग 450 ई.पू. ; 11. हिन्दू धर्म के दो श्रोतों एवं स्मृति में से एक, 200 ई.पू. के बाद से स्मृतियों की रचना होने लगी, मनुस्मृति आदि ; 12. चाणक्य (350 ई.पू.-283 ई.पू.) मौर्य साम्राज्य में प्रधान मंत्री, विष्णुगुप्त के नाम से भी विख्यात द्वारा रचित ग्रन्थ ; 13. तिरुवल्लुवर (500 ई.पू.-200 ई.पू.) द्वारा तमिल भाषा में रचित ग्रन्थ ;

14. चौथी शती ई.पू., अष्टाध्यायी (संस्कृत व्याकरण) के रचयिता ; 15. (400 ई.-600 ई.) कामसूत्र के रचयिता ; 16. भरतमुनि (200 ई.पू.-200 ई.) ; 17. यहूदियों की धर्म पुस्तक ; 18. धम्मपद (100 ई.पू.), बौद्ध धर्म पुस्तक ; 19. महर्षि गौतम (200 ई.) द्वारा ; 20. कणाद (200 ई.पू.) ; 21. पतंजलि (200 ई.पू.) ; 22. कपिल मुनि, गीता में कपिल मुनि का उल्लेख ; 23. (300 ई.पू.-200 ई.पू.) पूर्व मीमांसा सूत्र ; 24. उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है, ब्रह्मसूत्र बादरायण द्वारा रचित ; 25. कार्ल मार्क्स (05-05-1818-14-03-1883) समाजवादी राजनैतिक विचारधारा के प्रवर्तक, जर्मन दार्शनिक ; 26. (28-11-1820-05-08-1895) जर्मन सामाजिक चिंतक, कार्ल मार्क्स के सहयोगी ; 27. फ्रेड्रिक नीत्शे (15-10-1844-25-08-1900) जर्मन दार्शनिक, कवि ; 28. इमेन्युअल कांट (22-04-1727-12-2-1804), जर्मन दार्शनिक ; 29. किरातार्जुनीय, संस्कृत काव्य (600 ई.) ; 30. संस्कृत नाटककार, मालतीमाधव, उत्तररामचरित (आठवीं शती) ; 31. (?80ई.-?150ई.) बुद्धचरित, सौंदरानंद ; 32. संस्कृत का सबसे पहला नाटककार, (200 ई.पू.-200 ई.) के मध्य कभी भी रचनाएँ, स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञा यौगंधरायण, दरिद्र चारुदत्त, अविमारक, प्रतिमा, अभिषेक, बालचरित, पंचरात्र, मध्यमाव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार, उरुभंग ; 33. सातवीं शती, हर्षवर्धन के राजकवि, हर्षचरित, कादम्बरी ; 34. (छठी शती-7वीं शती) रचनाएँ दशकुमारचरित, काव्यादर्श ; 35. (2री शती ई.पू.-4थी शती ई.) मृच्छकटिक संस्कृत नाटक के रचियता ; 36. (पहली शती ई.पू. -चौथी शती ई.) संस्कृत भाषा के सबसे महान कवि और नाटककार, रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत, ऋतुसंहार काव्य, अभिज्ञान शाकुंतलम, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोवर्शीय नाटक ; 37. (20-08-1749-22-03 -1832) जर्मन कवि, नाटककार, वैज्ञानिक, उपन्यासकार, कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम का जर्मन भाषा में अनुवाद ; 38. (26-04-1564-23-04- 1616) अंग्रेजी भाषा के महानतम नाटककार, विश्व साहित्य के गौरव 38 नाटक, 154 सानेट ; 39. (03-07-1883-03-06-1942) जर्मन उपन्यासकार ; 40. (07-11-1913-04-01-1960) फ्रांसीसी उपन्यासकार ; 41. (06-06-1875-12-08-1955) जर्मन उपन्यासकार ; 42. (27-01-1756-05-12-1791) वोल्फ़गांक आमडेयूस मोत्जार्ट, पाश्चात्य संगीतज्ञ, 600 रचनाएँ ; 43. (04-03-1678-28-07-1741) एंटोनियो लुसिओ विवाल्डी, पाश्चात्य संगीतज्ञ ; 44. (31-03-1732-31-05-1800) जोसेफ हेडेन, पाश्चात्य

संगीतज्ञ ; 45. (17-12-1770-26-03-1827) लुडविग वान बीथोवान, जर्मन शाश्त्रीय संगीतज्ञ ; 46. पंजाब का लोक नृत्य, आम तौर पर बैसाखी पर किया जाता है ; 47. वृन्दावन (उत्तर प्रदेश) का रास नृत्य ; 48. राजस्थान और उत्तरप्रदेश की अत्यंत प्राचीन नृत्य शैली, महाभारत में वर्णित, मध्यकाल में कृष्ण कथा और नृत्य से सम्बद्ध ; 49. केरल में प्रचलित नाट्य शैली में नृत्य ; 50. दक्षिण भारत की नृत्य शैली ; 51. उड़ीसा प्रान्त की शास्त्रीय नृत्य शैली ; 52. मणिपुर राज्य की नृत्य शैली ; 53. आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के गाँव के परम्परा गत ब्राह्मणों द्वारा आरम्भ ; 54. रियो डी प्लाटा (चाँदी की नदी), अर्जेंटीना एवं उरुग्वे क्षेत्र से शुरू होकर सारी दुनियाँ में फैला, स्पेनिश और अफ्रीकन संस्कृति से प्रभावित ; 55. क्यूबा और प्युर्टो रिको से उत्पन्न मिश्रित नृत्य शैली ; 56. अफ्रीकन-अमेरिकन नृत्य शैली, 1970 के बाद सारी दुनियाँ में फैली ; 57. जूतों और नृत्य फर्श को वाद्य यंत्र के रूप में उपयोग करते हुए नाचा जाने वाला नृत्य ; 58. बाघ की गुफाएँ (4थी शती-6ठी शती) मध्यप्रदेश के धार जिले में, बौद्ध, हिन्दू, जैन स्थापत्य ; 59. (5वीं शती-10वीं शती), महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में, बौद्ध, हिन्दू, जैन स्थापत्य ; 60. (2 री शती ई.पू.) महाराष्ट्र में लोनावाला के निकट, चेत्य गृह के लिए प्रसिद्ध ; 61. (200 ई.पू.-600 ई.) महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में, चित्रों और स्थापत्य के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध, 29. गुफाएँ ; 62. (पहली ई.पू.-दसवीं ई.) मुंबई के पश्चिम बोरीवली में, बौद्ध विहार ; 63. उत्तर कर्नाटक के बागलकोट जिले के बादामी गाँव, गुफा एवं मन्दिर (6ठी शती-8वीं शती) ; 64. मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में, गुफाओं में लगभग 30000 साल पुराने चित्र ; 65. दक्षिण-पश्चिम फ्रांस में, गुफाओं में 17300 साल पुराने 2000 चित्र ; 66. मिस्र के गीजा में (2558 ई. पू.-2532 ई.पू.) पिरामिड ; 67. मेक्सिको का प्राचीन शहर (200 ई.पू.-800 ई.), पिरामिड ; 68. राजस्थान के सिरोही जिले में, जैन मन्दिरों के लिए विख्यात (11 वी.ई.-13 वी.ई.), दिलावरा मन्दिर ; 69. मध्यप्रदेश के सतना जिले में (300 ई.पू.-200 ई.पू.), बौद्ध स्तूप और कलाकृतियाँ ; 70. मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में (500 ई.-1300ई.), हिन्दू एवं जैन मन्दिर, कामकला कृतियों के लिए विश्व में विख्यात ; 71. उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में, बौद्ध तीर्थ ; 72. वाराणसी, भारत का सबसे प्राचीन शहर, भगवान शिव द्वारा बसाया हुआ, हिन्दू, बौद्ध और जैनियों का पवित्र नगर ; 73. तमिलनाडु में, नटराज के मन्दिर के लिए प्रसिद्ध ; 74. तमिलनाडु में, चेन्नई से 55 कि.मी., पल्लव राजाओं की राजधानी, मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध ; 75. कर्नाटक में, विजयनगर

राज्य (1336 ई.–1566 ई.) की राजधानी, मन्दिर, पुरातत्व अवशेषों के लिए प्रसिद्ध ; 76. कर्नाटक के हसन जिले में, होयसल राजाओं की राजधानी, मन्दिरों एवं एतिहासिकता के लिए प्रसिद्ध ; 77. मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में, बौद्ध स्तूप (तीसरी शती ई.पू.–बारहवीं शती ई.) ; 78. इंडोनेशिया (जावा) में विशाल बौद्ध मन्दिर, निर्माण आठवीं शती ई. ; 79. वेटिकन शहर, इटली के शहर रोम में स्थित, दुनियाँ का सबसे छोटा देश, ईसाई धर्म के रोमन सम्प्रदाय का चर्च ; 80. पंजाब के रूपनगर जिले में, दसवें गुरू, गुरू गोविन्द सिंह द्वारा खालसा पंथ की स्थापना बैसाखी के दिन 1699 ई. यहीं पर की गई थी ; 81. राजस्थान का जिला, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती (1141 ई.–1230 ई.) की पवित्र दरगाह ; 82. फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश में आगरा जिले का कस्बा, (1571 ई.–1575 ई.) में मुगल सम्राट अकबर की राजधानी, बुलंद दरवाज़ा, सलीम चिश्ती की दरगाह ; 83. कुरुक्षेत्र, हरियाणा राज्य में, हर्षवर्धन के पिता प्रभाकर वर्धन (?–606 ई.) की राजधानी ; 84. कर्नाटक के हसन राज्य में, 982 ई. में निर्मित बाहुबली की विशाल प्रतिमा, जैन तीर्थ ; 85. तमिलनाडु का जिला, चोल राज्य (850 ई.–1279 ई.) की राजधानी, वृहदीश्वर मन्दिर ; 86. अजमेर जिले में, ब्रह्मा के मन्दिर, मेले के लिए विख्यात ; 87. सिख गुरू रामदास द्वारा 1574 ई. में निर्मित, पंजाब प्रान्त का बड़ा शहर, स्वर्ण मन्दिर, जलियाँ वाला बाग ।

(25.03.2011)
सिडनी

42. श्रद्धा से नत हो अर्पित सब.....

श्रद्धा से नत[1] हो अर्पित[2] सब, तन मन धन मेरे और प्राण,
ओ रे मेरे ओ पुण्य देश, ओ रे मेरे भारत महान ।
तेरी माटी से जीवन अथ[3], तेरी माटी में चिर[4] विराम,
ओ रे मेरे ओ पुण्य देश, ओ रे मेरे भारत महान ।

उत्तर शोभित उत्तुंग[5] तुंग[6], शुभ्र[7] हिमालय दृढ़[8] अविचल[9],
मध्य से पूरब से पश्चिम, विस्तृत फैला विन्ध्याचल ।
उत्ताल[10] तरंगें भर सागर, दक्षिण तेरे नयनाभिराम[11],
ओ रे मेरे ओ पुण्य देश, ओ रे मेरे भारत महान ।

स्वच्छ नीर नित भर-भर कर, नदियाँ बहतीं कल-कल कल-कल,
मधुर-मधुर स्वर भर-भर कर, निर्झर झरते झर-झर झर-झर ।
स्वर्णिम आभा से भर कर नभ[12], दृष्टि सजाता नव वितान[13],
ओ रे मेरे ओ पुण्य देश, ओ रे मेरे भारत महान ।

हरे-भरे सब वन-उपवन, भिन्न-भिन्न तरुवर भर-भर,
पवन बहे मध्यम-मध्यम, विविध-विविध खुशबू धर-धर ।
ऋणी मेरा हर रोम-रोम, अविरल[14] गाता तेरा ही गान,
ओ रे मेरे ओ पुण्य देश, ओ रे मेरे भारत महान ।

1. विनीत, झुका हुआ ; 2. भेंट किया हुआ, सौंपा हुआ ; 3. आरम्भ तथा मंगलसूचक शब्द ; 4. दीर्घकालीन, जो बहुत दिनों तक बना रहे, दीर्घ, बहुत ; 5. बहुत ऊँचा ; 6. पर्वत, बहुत ऊँचा, तीव्र, उग्र ; 7. सफेद, श्वेत ; 8. मजबूत, पक्का, प्रगाढ़, बलवान और हृष्ट-पुष्ट ; 9. अचल, स्थिर ; 10. उन्मुक्त, पार गया हुआ, पास हुआ ; 11. नयनों को सुन्दर लगने वाला, सुन्दर, मनोहर ; 12. आकाश, आसमान, गगन ; 13. विस्तार, फैलाव ; 14. लगातार, घना, अविरल, मिला हुआ या सटा हुआ ।

(27.03.2011)
सिडनी

43. ओ स्वर्णिम मधुमय मेरे देश.....

ओ स्वर्णिम मधुमय मेरे देश,
तुझको मेरा शत-शत प्रणाम ।
तेरी स्मृति से भर जाता,
मेरे अंतर में स्वाभिमान ।

वे उत्तर ऊँचे शुभ्र[1] शिखर,
शुभ सुरम्य[2] दक्षिण पठार ।
वे लम्बे-लम्बे सागर तट,
फेन तरंगित सिन्धु[3] ज्वार[4] ।

वह आशामय अरुणाभ[5] क्षितिज,
आह्लादित[6] करते सुबह-शाम ।
ओ स्वर्णिम मधुमय मेरे देश,
तुझको मेरा शत-शत प्रणाम ।

वह शीतल सुरभित मलय[7] पवन,
कल-कल स्वर भरते सरित[8] कूल[9] ।
वे हरे-भरे वन और उपवन,
सतरंगित धरती का दुकूल[10] ।

वे नभ में उड़ते विहग[11] वृन्द[12],
कलरव[13] कर होता स्वस्ति[14] गान ।
ओ स्वर्णिम मधुमय मेरे देश,
तुझको मेरा शत-शत प्रणाम ।

वे 'शबद' ध्वनित सब गुरुद्वारे,
मस्जिद से मुइज्जिन[15] की आवाज़ ।
वे घंटे मजीरे करतालें,
मंदिर से गूँजे शंखनाद ।

वे पूजा अर्चन प्रार्थनायें,
अपनी दया का प्रभु दे दो दान ।
ओ स्वर्णिम मधुमय मेरे देश,
तुझको मेरा शत-शत प्रणाम ।

1. श्वेत, सफेद, उज्जवल ; 2. बहुत सुंदर, अत्यंत मनोरम और रमणीय ; 3. सागर, समुद्र ; 4. समुद्र के जल का ऊपर उठना ; 5. लाल आभा से युक्त, लालिमा युक्त ; 6. प्रसन्न, हर्षित ; 7. मलयगिरि, दक्षिण भारत का एक पर्वत ; 8. नदी ; 9. किनारा, तट ; 10. दुपट्टा, रेशमी कपड़ा साड़ी, चिकना व बारीक कपड़ा ; 11. पंछी, पक्षी, खग ; 12. समूह, झुण्ड ; 13. मंद एवं मधुर स्वर वाला ; 14. कल्याण, मंगल, शुभ, मान्य, सुख ; 15. मस्जिद से अज़ान देने वाला ।

(28.03.2011)
सिडनी

44. कह धरा भी है मेरी.....

कह धरा भी है मेरी,
कह गगन भी मेरा है ।
कह हवा भी है मेरी,
कह चमन भी मेरा है ।

छा रहा है क्यों तिमिर[1],
जान कर ये भेद खोल ।
सत्य देख, सत्य बोल,
सत्य देख, सत्य बोल ।

कह जिह्वा[2] अभी मेरी,
कह अभी भी शब्द हैं ।
कह कि आस भी अभी,
कह अभी भी स्वप्न हैं ।

वक़्त की है बंदिशें,
वक़्त को ज़रा सा तोल ।
सत्य देख, सत्य बोल,
सत्य देख, सत्य बोल ।

कह कि आँख में नमी,
कह कि रक्त गर्म है ।
कह कि गैर है दुखी,
कह कि मन में शर्म है ।

कोई सा अश्रु[3] पोंछ कर,
आँक आँसुओं का मोल ।
सत्य देख, सत्य बोल,
सत्य देख, सत्य बोल ।

कह कि मैं झुका नहीं,
कह कि स्वाभिमान है ।
कह कि मैं डरा नहीं,
कह अभी भी जान है ।

देदीप्यमान[4] पुंज[5] सा,
दिग-दिगंत[6] मुक्त डोल ।
सत्य देख, सत्य बोल,
सत्य देख, सत्य बोल ।

1. अंधकार, अँधेरा ; 2. जीभ ; 3. आँसू ; 4. चमकता-दमकता हुआ ; 5. ढेर, समूह, राशि ; 6. हर दिशा में ।

(31.03.2011)
सिडनी

45. धन्य-धन्य हे भारतवर्ष.....

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

रामायण ऋषि बाल्मीकि, वेद संकलन वेदव्यास[1],
महाकाव्य महाभारत भी, अनगिन उप और महापुराण ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

निगुन्ठ निरुक्त यास्क[2] ऋषि, पाणिनि[3] की अष्टाध्यायी,
शौनक[4] रचित बृहददेवता, पिंगल[5] देते छंद ज्ञान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

पतंजलि[6] का योगसूत्र, कपिल[7] मुनि का सांख्यशास्त्र,
गौतम[8]-कणाद[9] का न्याय-वैशेषिक, बादरायण[10] का वेदान्त ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

विष्णुगुप्त[11] का अर्थशास्त्र, भरत[12] मुनि का नाट्यशास्त्र,
वात्स्यायन[13] का कामसूत्र, आर्यभट्ट[14] का सूर्यसिद्धान्त ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

मनु[15] याज्ञवल्क्य[16] की स्मृतियाँ, भृतहरि[17] शतक, वाक्यपदीय,
कल्हण[18] कृत रजतरंगिणी, चरक[19], सुश्रुत[20] आयुर्विज्ञान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

शूद्रक[21] नाटक मृच्छकटिक, भवभूति[22] उत्तररामचरित,
अश्वघोष[23] का बुद्धचरित, कालिदास[24] नाटक अभिज्ञान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

बाणभट्ट[25] कादम्बरी, सोमदेव[26] कथासरितसागर,
कुरल रचें तिरुवल्लुवर[27], राजा भोज[28] रचित समरांग ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

श्री हर्ष[29] नैषधचरित, भट्टी[30] रचित भट्टिकाव्य,
विष्णुशर्मा[31] का पंचतंत्र, भास[32] के सब नाटक अभिराम ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

भारवि[33] कृत किरातार्जुनीय, माघ[34] रचित शिशुपालवध,
दंडी[35] कृत दशकुमारचरित, विल्हण[36] कृत विक्रमांक ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

भामह[37] का काव्यालंकार, काव्यालंकारसूत्र रीति वामन[38],
आन्दवर्धन[39] का ध्वन्यालोक, कुंतक[40] का वक्रोक्ति सिद्धान्त ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

अभिनवगुप्त[41] का तन्त्रालोक, नारद[42], शाडिल्य[43] भक्ति सूत्र,
जयदेव[44] का गीत गोविन्द, वसुगुप्त[45] का स्पन्द सिद्धान्त ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

भौतिक दर्शन चार्वाक[46], सिख धर्म श्री गुरु नानक[47],
जैन प्रवर्तक ऋषभदेव[48], बौद्ध प्रवर्तक बुद्ध[49] भगवान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

विशिष्टाद्वैत रामानुज[50], द्वैत श्री माधवाचार्य[51],
द्वैताद्वैत श्री निम्बार्क[52], शंकराचार्य[53] अद्वैत वेदांत ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

मौर्य वंश सम्राट अशोक[54], गुप्त वंश विक्रमादित्य[55],
चोल वंश राजेंद्र[56] प्रथम, मुगल वंश अकबर[57] सुल्तान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

विदुषी[58] गार्गी[59] मैत्रेयी[60], सती सावित्री[61] अनुसूया[62],
शौर्य भरी लक्ष्मीबाई[63], पद्मिनी[64] का आत्मबलिदान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

विद्रोही कवि संत कबीर[65], भक्ति भरे कवि सूरदास[66],
तुलसीदास[67] कृत रामचरित, मीरा[68] कहे मेरे घनश्याम ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

राममोहन[69] का ब्रह्मसमाज, दयानन्द[70] का आर्यसमाज,
ज्योतिबाफुले[71] सत्यशोधक, विवेकानन्द[72] जागो इन्सान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

भगतसिंह[73] का क्रांति बोध, गाँधी[74] का अहिंसा सत्याग्रह,
वैज्ञानिक दृष्टि भरे नेहरू[75], नमन बोस[76] का स्वाभिमान ।

धन्य-धन्य हे भारतवर्ष, धन्य-धन्य हे देश महान,
धन्य-धन्य हैं वीर तेरे, धन्य-धन्य तेरे विद्वान ।

1. दसवीं शती ई०पू० अथवा इससे पहले ; 2. पाँचवी शती ई० पू० ; 3. चौथी ई० पू० ; 4. जन्मतिथि अज्ञात, महाभारत में वर्णित ; 5. जन्मतिथि अज्ञात, पाणिनि अथवा पंतजलि के छोटे भाई के रूप में भी जाना जाता है ; 6. दूसरी शती ई०पू० ; 7. जन्म तिथि अज्ञात, गीता में उल्लेख ; 8. दूसरी शती ; 9. दूसरी शती-छठवीं शती ; 10. 425 ई० ; 11. 350 ई०पू० - 283 ई०पू० ; 12. 400 ई०पू० - 200 ई०पू० ; 13. चौथी शती - छठी शती ; 14. 476 ई०-550 ई०) ; 15. 200 ई०पू० - 200 ई० ; 16. 300 ई० - 500 ई० ; 17. सातवीं शती ; 18. बारहवीं शती ; 19. तीसरी शती ई०पू० - दूसरी शती ई०पू० ; 20 तीसरी शती - चौथी शती ; 21. दूसरी शती ई०पू० - चौथी शती ; 22. आठवीं शती ; 23. 80 ई०पू० - 150 ई०पू० ; 24. चौथी शती ; 25. सातवीं शती ; 26. ग्यारहवीं शती ; 27. 300 ई०पू० - 300 ई० ; 28. समरांगसूत्रधार (वास्तुशास्त्र) ग्यारहवीं शती ; 29. सातवीं शती ; 30. सातवीं शती ; 31. तीसरी शती ई०पू० - चौथी शती ; 32. दूसरी शती ई०पू० - दूसरी शती ; 33. छठी शती ; 34. सातवीं शती ; 35. छठवीं शती - सातवीं शती ; 36. ग्यारहवीं शती ; 37. सातवीं शती ; 38. आठवीं शती ; 39. 820 ई० - 890 ई० ; 40. 950 ई०-1050 ई० ; 41. 950 ई०-1020 ई० ; 42. दसवीं शती ; 43. बारहवीं शती ; 44. बारहवीं शती ; 45. 850 ई० - 925 ई० ; 46. छठी शती ई०पू०-चौथी शती ई०पू० ; 47. 15-04-1469 - 22-09-1539 ; 48. बीसवीं शती ई०पू०-इससे पहले ; 49. 563 ई०पू०-483 ई०पू० ; 50. 1017 ई०-1137 ई० ; 51. 1238 ई०-1317 ई० ; 52. तेरहवीं शती ; 53. 788 ई०-820 ई० ; 54. 304 ई०पू०-232 ई०पू० ; 55. 375 ई०-413 / 415 ई० ; 56 1012 ई०-1044 ई० ; 57. 14-10-1542-27-10-1605 ; 58. विद्वान स्त्री ; 59. वृहदारण्यक उपनिषद में उल्लेख ; 60. वृहदारण्यक उपनिषद में उल्लेख ; 61. सावित्री की कथा का उल्लेख सबसे पहले महाभारत के वनपर्व में मिलता है, अश्वपति की कन्या, सत्यवान की पत्नी, मृत सत्यवान को यमराज से पुनर्जीवित कराने का श्रेय ; 62. ऋषि अत्रि की पत्री, दत्तात्रेय की माँ ; 63. 19-11-1835-17-06-1858 ; 64 बाहरवीं शती - तेरहवीं शती ; 65. 1398 ई०-1518 ई० ; 66. 1478 / 79 ई०-1581/1584 ई० ; 67. 1497 ई०-1623 ई० ; 68. 1498 ई०-1547 ई० ; 69. (22-05-1772- 27-09-1833) ; 70. (12-02-1824-30-10-1883) ; 71. (11-04-1827-28-11-1890) ; 72. (12-01-1863-04- 07-1902) ; 73. (28-09-1907-23-03-1931) ; 74. (02-10-1869-30-01-1948); 75. (14-11-1889-27-05-1964) ; 76. (27-01-1897-18- 08-1948)।

(07.04.2011)
सिडनी

46. मेरे अप्रतिम स्वर्णिम भारत.....

मेरे अप्रतिम[1] स्वर्णिम भारत,
जननी जन्म भूमि जय हो ।
तेरा वैभव[2] सबसे बढ़कर,
तेरा आगत[3] गौरवमय[4] हो ।

हों हरे-भरे वन और उपवन,
नदियों में नीर बहे कल-कल ।
कलरव[5] गुंजन से भरता गगन,
पवन बहे सुरभित शीतल ।

आह्लाद भरे हों रात्रि-दिवस,
जीव-जगत सब सुखमय हो ।
मेरे अप्रतिम स्वर्णिम भारत,
जननी जन्म भूमि जय हो ।

हों दक्ष[6] तेरे सब कारीगर,
सदा प्रचुर[7] हों संसाधन[8] ।
हो सदा श्रेष्ठतम तकनीकी,
नित बढ़ता हो उत्पादन ।

हों भरे खेत खलियान सदा,
जन-जीवन मंगलमय हो ।
मेरे अप्रतिम स्वर्णिम भारत,
जननी जन्म भूमि जय हो ।

दृष्टि भरे सदा व्यापकता,
विगत[9] का सारा कलुष[10] भूलें ।
सदा सृजन[11] के स्वप्न दिखें,
आगे बढ़कर अम्बर[12] छू लें ।

हों स्वाभिमान सब सहृदयी,
मन विश्वासी निर्भय हो ।
मेरे अप्रतिम स्वर्णिम भारत,
जननी जन्म भूमि जय हो ।

1. बेजोड, अनुपम ; 2. शान-शौकत, ऐश्वर्य , शक्ति, सामर्थ्य ; 3. आने वाला, आया हुआ, घटित, प्राप्त ; 4. सम्मान, आदर, बड़प्पन, महत्व ; 5. मंद एवं मधुर ध्वनि ; 6. कुशल, निपुण ; 7. भरा-पूरा, पूर्ण, बहुत अधिक, विपुल ; 8. काम की तैयारी, आयोजन, अच्छी तरह पूरा करना ; 9. बीता हुआ ; 10. मैल, अपवित्रता, पाप, विकार ; 11. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 12. आकाश, नभ, आसमान ।

(13.04.2011)
सिडनी

47. नमन करूँ मैं तुमको अविरल.....

नमन[1] करूँ मैं तुमको अविरल[2], हे जगदीश्वर[3] हे परमेश्वर[4],
अपनी दया का दे दो संबल[5], हे जगदीश्वर हे परमेश्वर ।

चक्षु[6] जिह्वा[7] त्वचा[8] घ्राण[9] श्रवण[10] सब, तुझसे ही तो तुमसे ही तो,
मन[11] बुद्धि[12] और चित्[13] अहम्[14] सब, तुमसे ही तो तुमसे ही तो ।

नमन करूँ मैं तुमको अविरल, हे जगदीश्वर हे परमेश्वर,
अपनी दया का दे दो संबल, हे जगदीश्वर हे परमेश्वर ।

वाक्[15] पाद[16] पायु[17] हस्त[18] उपस्थ[19] सब, तुमसे ही तो तुमसे ही तो,
स्पर्श[20] रूप[21] रस[22] गंध[23] शब्द[24] सब, तुमसे ही तो तुमसे ही तो ।

नमन करूँ मैं तुमको अविरल, हे जगदीश्वर हे परमेश्वर,
अपनी दया का दे दो संबल, हे जगदीश्वर हे परमेश्वर ।

वायु[25] अग्नि[26] जल[27] पृथ्वी[28] व्योमन्[29], तुमसे ही तो तुमसे ही तो,
पुरुष[30] प्रकृति[31] सब आत्म[32] परात्मन्[33], तुमसे ही तो तुमसे ही तो,

नमन करूँ मैं तुमको अविरल, हे जगदीश्वर हे परमेश्वर,
अपनी दया का दे दो संबल, हे जगदीश्वर हे परमेश्वर ।

1. नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन ; 2. लगातार, अविराम ; 3. परमात्मा ; 4. परमात्मा ; 5. सहारा ; 6. आँख, नेत्र, नयन ; 7. जीभ, रसना ; 8. चरम, चमड़ा, चल ; 9. नासिका, नाक ; 10. कान, सुनना ; 11. अंत:करण, चित्त की संकल्प और विकल्प करने वाली वृति, इच्छा ; 12. मनीषा, समझ, अक्ल, अंत:करण की निश्चयात्मक वृति 13. चेतना, अंत:करण ; 14. अहंकार ; 15. वाणी, बोलने की इन्द्रिय ; 16. पैर, चरण ; 17. गुदा ; 18. हाथ ; 19. जनेन्द्रिय ; 20. छूना ; 21. प्रकार, भेद, सूरत, शक्ल ; 22. स्वाद ; 23. महक ; 24. आवाज, ध्वनि ; 25. हवा, पवन, अनिल ; 26. आग, अनल ; 27. पानी, नीर ; 28. जमीन, धरा ; 29. आकाश, अन्तरिक्ष ; 30. सांख्य दर्शन में विशुद्ध चेतन ; 31. वह मूल तत्व जिसका परिणाम जगत है ; 32. स्वयं की चेतन सत्ता ; 33. दूसरे की चेतन सत्ता ।

(15.04.2011)
सिडनी

48. बाट जोहूँ देखूँ अवन.....

बाट जोहूँ देखूँ अवन[1],
मनस[2] आस मधुर मिलन ।
पास आओ कोई जतन,
मेरे मीत मेरे अयन[3] ।

भरें झरें नीर नयन,
भरें झरें नीर नयन ।

टीस पीर घोर घुटन,
उर[4] में वाष्प जलद[5] सघन[6] ।
खिन्न चित देह दहन,
तम[7] बना है आज लयन[8] ।

भरें झरें नीर नयन,
भरें झरें नीर नयन ।

मृदु[9] निनाद[10] लगे श्रवण[11],
असरहीन मधुर पवन ।
ज्योत्स्ना[12] भी भरे चुभन,
शूल लगे पुष्प शयन ।

भरें झरें नीर नयन,
भरें झरें नीर नयन ।

सुरभिहीन[13] सारे सुमन,
असरहीन स्वर्ण किरण ।
सूना - सूना सारा भुवन[14],
पल प्रत्येक होता हयन[15] ।

भरें झरें नीर नयन,
भरें झरें नीर नयन ।

1. रास्ता, प्रसन्नता, भूमि ; 2. मन, चित्त की संकल्प और विकल्प करने वाली वृत्ति ; 3. गृह, जगह, आश्रम, मार्ग ; 4. हृदय, छाती ; 5. मेघ, बादल, जल देना वाला ; 6. घना ; 7. अँधेरा, अंधकार ; 8. शरण, शरण का स्थान, शांति, विश्रामलय होने की अवस्था ; 9. मीठी, सुहावनी ; 10. आवाज़ ; 11. कान ; 12. चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी ; 13. बिना सुगंध के, बिना खुशबू के ; 14. संसार ; 15. साल, वर्ष ।

(20.04.2011)
सिडनी

49. क्यों है मौन देखता इधर.....

क्यों है मौन देखता इधर उधर,
द्वार पर खड़ा है देख शत्रु दल ।

असंख्य दृष्टि देखती हैं आस भर,
ओ अजेय[1] शूरवीर[2] ओ निडर ।

संकटों में आ घिरा है अब चमन,
माँ की लाज को बचा कहे वतन ।

जाज्वल्यमान[3] शक्तिपुंज[4] हो प्रखर[5],
ओ अजेय शूरवीर ओ निडर ।

देश पर मर मिटा यही धरम,
चुप रहा, डरा, झुका समझ खतम ।

कर निनाद युद्ध वेश तू सँवर,
ओ अजेय शूरवीर ओ निडर ।

हो धरा भी लाल, लाल हो गगन,
हत-आहत[6] हों आज शत्रुओं के तन ।

बैरी भय से काँपे ऐसा युद्ध कर,
ओ अजेय शूरवीर ओ निडर ।

तेरा ही शौर्य[7] दिक्[8] में हो प्रभा-किरण[9],
तेरी ही कीर्ति[10] गायें सारे देश जन ।

कर्ज देश का चुका यही पहर[11],
ओ अजेय शूरवीर ओ निडर ।

1. जिसे जीता न जा सके ; 2. योद्धा ; 3. चमकता हुआ ; 4. ताकत का समूह ; 5. तीक्ष्ण, तेज, उग्र, प्रपंच ; 6. मरे और घायल ; 7. शूरता ; 8. स्पेस, दिशा विस्तार ; 9. प्रकाश, किरण, दीप्ति ; 10. यश, प्रसिद्धि, ख्याति ।

(22.04.2011)
सिडनी

50. चल निडर जीवन डगर.....

चल निडर जीवन डगर,
चल निडर जीवन डगर ।

स्फूर्ति और उल्लास ले,
उत्कट[1] अमिट विश्वास ले ।
उर में भर सह–वेदना,
मुस्कराहट भर अधर ।

चल निडर जीवन डगर,
चल निडर जीवन डगर ।

धैर्य तप और त्याग ले,
प्रेम की चिर प्यास ले ।
आह्लाद[2] अणु–अणु में सजा,
आस की भर ले सहर[3] ।

चल निडर जीवन डगर,
चल निडर जीवन डगर ।

शुभ शील संयम साथ ले,
सौन्दर्य की अभिलाष ले ।
स्वप्नों सृजन[4] को पंख दे,
सम्भावना के छू शिखर ।

चल निडर जीवन डगर,
चल निडर जीवन डगर ।

सत्य, शुचिता[5], ध्यान ले,

कर्तव्य, तितिक्षा[6], ज्ञान ले ।

आश्वस्त होकर चल सदा,

रह सजग प्रतिपल पहर ।

चल निडर जीवन डगर,

चल निडर जीवन डगर ।

1. तीव्र, उग्र, प्रबल, विकट, श्रेष्ठ ; 2. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 3. सवेरा ; 4. रचना, सर्जन, उत्पत्ति ; 5. पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता, निष्कपटता ; 6. सर्दी–गर्मी दुख आदि सहन करने की शक्ति ।

(24.04.2011)
सिडनी

51. तेरा ऋणी हूँ मैं जीवन भर.....

तेरा ऋणी[1] हूँ मैं जीवन भर,
श्रृद्धा से मेरा नत[2] मस्तक ।
ओ रे मेरे मधुमय[3] भारत,
स्वर्णिम[4] सुंदर पावन[5] सुखकर ।

तेरी ही माटी मैं जन्मा,
खेला मेरा शैशव[6] बचपन ।
ऊर्जामय[7] उत्ताल[8] तरंगित,
सतरंगित आह्लादित[9] यौवन ।

भोगे कितने ही हैं मैंने,
शरद[10] शिशिर[11] सावन[12] अरु पतझड़[13] ।
ओ रे मेरे मधुमय भारत,
स्वर्णिम सुंदर पावन सुखकर ।

प्राण सजी है मेरे तन में,
वायु तेरी ही सुरभित[14] शीतल ।
मेरी रग-रग में बहता है,
रुधिर बना तेरा जीवन जल ।

मिल जाना है फिर से तुझमें,
भस्मी कृत मृण्मय[15] सा होकर ।
ओ रे मेरे मधुमय भारत,
स्वर्णिम सुंदर पावन सुखकर ।

तेरे ही आँगन में सजाये,
मैंने अपने सपने अनगिन ।
अश्रु भरे हैं कभी नयनों में,
मैं गाया मुस्काया निश-दिन ।

तेरा गौरव सबसे अप्रतिम[16],
तेरी महिमा सबसे बढकर ।
ओ रे मेरे मधुमय भारत,
स्वर्णिम सुंदर पावन सुखकर ।

1. कृतज्ञ, अनुगृहीत, कर्जदार ; 2. झुका हुआ, विनीत, नम्र, नम्रता, झुकाव ; 3. शहद से भरा हुआ, फूलों के रस से भरा ; 4. सुनहला, स्वर्ण का ; 5. पवित्र, शुद्ध ; 6. शिशु सम्बन्धी, बच्चों का ; 7. शक्ति और बल से भरा हुआ ; 8. उन्मुक्त, पार गया हुआ, पारित ; 9. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष, 10. शरत्, क्वार से कार्तिक तक रहने वाली एक ऋतु, वत्सर, वर्ष ; 11 जाड़ा, शीतकाल, हिम, पाला ; 12. आसाढ़ और भाद्रपद के बीच का एक महीना ; 13. शिशिर ऋतु जिसमें पेड़ की पत्तियाँ झड़ जाती हैं ; 14. सुगन्धित, खुशबूदार ; 15. मिट्टी के जैसा ; 16. बेजोड़ ।

(28.04.2011)
सिडनी

52. नज़रें उठा के शान से सारा.....

नज़रें उठा के शान से सारा जहान देख,
अपनी कोई जमीन नया आसमान देख ।

गुज़री को आह भर कर दोहरा न बार-बार,
ख्वाबों के अधूरे हैं अभी एहतिशाम[1] देख ।

रश्क[2] हो सभी को झुक जाएँ सबके सर,
तारों से आगे कोई अपना मुकाम देख ।

दुश्वारियाँ[3] होंगी तो कभी होंगे मैकदे[4],
आयेंगे हर एक बार नये इम्तिहान देख ।

इन्सान के वजूद[5] में इंसानियत को भर,
न हिन्दू सिक्ख पारसी मुसलमान देख ।

दुनियाँ में अमन चैन से सब साथ रह सकें ।
आपस में दोस्ती का कोई निजाम[6] देख ।

तुझमें खुदा का नूर[7] मुकम्मल[8] यकीन कर,
सच प्यार और वफा में अपना ईमान[9] देख ।

तू हिंद की औलाद है तुझको ये नाज़[10] हो,
सजदे[11] में जहाँ मुतवातिर[12] सुबह-ओ-शाम देख ।

1. प्रदर्शन, दिखावा, सज्जा, लालित्य, मनोहरता ; 2. जलन, ईर्ष्या , डाह ; 3. परेशानी, कठिनाई ; 4. मधुशाला, शराबघर, 5. अस्तित्व ; 6. व्यवस्था ; 7. दीप्ति, चमक, भव्यता ; 8. समूचा, पूरा ; 9. आस्था ; 10. गर्व, अभिमान ; 11. प्रार्थना ; 12. लगातार ।

(01.05.2011)
सिडनी

53. मेरे कंठ को कर दो मधुमय.....

मेरे कंठ को कर दो मधुमय,
मेरे स्वर को कर दो सुरमय ।
श्रृद्धा मय शब्दों से भर दो,
मैं गाँऊ तुमको हो तन्मय[1] ।

स्वर लहरों में मैं खो जाऊँ,
इनके जैसा मैं हो जाऊँ ।
ऊर्जामय भर दो स्पंदन[2],
क्षणभर भूलूँ अपना मृण्मय[3] ।

मेरे सब अवसाद[4] भुला दो,
प्राणों में आह्लाद[5] सजा दो ।
भर दो उर आलोक[6] अपरिमित[7],
भर दो अंतर[8] शुभ-ओ-शुचिमय[9] ।

कुछ ऐसा सम्मान मुझे दो,
तुम ऐसा वरदान मुझे दो ।
तुमको अविरल[10] ही मैं गाऊँ,
मेरे प्रभु रे ओ रे चिन्मय[11] ।

1. तल्लीन, दत्तचित्त, मग्न ; 2. गति, धड़कन, कम्पन, विस्फुरण ; 3. मिट्टी जैसा ; 4. खेद, हार, सुस्ती, थकावट, उदासी, 5. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 6. प्रकाश, रोशनी, देखना, दर्शन, दृष्टि ; 7. बेहद, बेहिसाब, अगणित, अत्यधिक ; 8. भीतर, अंतः, बीच में ; 9. मंगलकारी और पवित्र ; 10. लगातार, अविरल, घना, मिला या सटा हुआ ; 11. परमात्मा, पश्मेश्वर, पूर्ण तथा विशुद्ध ज्ञानमय ।

(06.05.2011)
सिडनी

54. मैं भी तो तेरा रिंद हूँ.....

मैं भी तो तेरा रिंद[1] हूँ फिर क्यों हिजाब[2] ले,
मेरा भी खाली जाम है मुझको शराब दे ।

मैं कब से मैकदे में हूँ मेरी तरफ भी देख,
अपनी हसीं निगाह से मुझको निखार दे ।

तू ही तो मेरी पहली तू ही आखिरी उम्मीद,
तेरे सिवा भी कौन है मुझको जवाब दे ।

ये दो ही सूरतें हैं यहाँ हों जो रूबरू[3],
या पास तू ही आ मेरे या फिर आवाज़ दे ।

ये उम्र चल पड़ी है बेकसी[4] की राह पर,
इसमें ज़रा सा नूर भर इसको शबाब दे ।

मैं भी तेरे दीवानों में कुछ मुझपे हो करम,
मुझको पिला अकूत[5] मुझे भी नवाज़[6] दे ।

1. धार्मिक बन्धनों को न मानने वाला, मनमौजी ; 2. पर्दा, ओट, आड ; 3. आमने-सामने, समक्ष ; 4. दीनता, विवशता, असहायवस्था ; 5. बेहिसाब, अपरिमित ; 6. कृपालु, कृपा करने वाला ।

(09.05.2011)
सिडनी

55. मधु से भरी ये सुरभिमय बहारें.....

मधु से भरी ये सुरभिमय[1] बहारें,
रुक जा रे रुक जा हमेशा पुकारें ।
अभी तो है मंज़िल बहुत दूर हमसे,
हमें तो है जाना बहारों से आगे ।

रुक जा यहीं पर कहते किनारे,
यहाँ से भी आगे जाना कहाँ रे ।
अभी तो है मंज़िल बहुत दूर हमसे,
हमें तो है जाना किनारों से आगे ।

सदा पूँछते झिलमिलाते सितारे,
जाना कहाँ है हमें कुछ बता रे ।
अभी तो है मंज़िल बहुत दूर हमसे,
हमें तो है जाना सितारों से आगे ।

हम तो गगन के उस पार देखें,
स्वप्नों का सुन्दर संसार देखें ।
अभी तो है मंज़िल बहुत दूर हमसे,
हमें तो है जाना नजारों से आगे ।

1. खुशबू से भरी ।

(14.05.2011)
सिडनी

56. मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी.....

मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी,
मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी ।

पल पहर दिन रात बीते,
अनगिनत मधुमास[1] बीते,
यूँ ही बीते उम्र सारी,
मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी ।

कब से मेरा चित्त उद्विग्न[2],
सूना-सूना सारा तुम बिन,
नींद भी बैरी हमारी,
मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी ।

मौन रहते मेरे बैना[3],
नीर झरते मेरे नयना,
दीन-दुखिया मैं बेचारी,
मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी ।

कब तुम्हारे होंगे दर्शन,
आओगे कब ओ रे मोहन[4],
मेरे माधव[5] ओ मुरारी[6],
मैं प्रतीक्षा में तुम्हारी ।

1. बसंत ऋतु ; 2. परेशान, चिंतित, खिन्न ; 3. बोल, वचन ; 4. मोह लेने वाला ; 5. मधु सम्बन्धी, मधु ऋतु सम्बन्धी, बसंत ऋतु, कृष्ण ; 6. मुर नामक राक्षस को मारने वाले, कृष्ण ।

(16.05.2011)
सिडनी

57. मेरे प्राणों में तुम आकर.....

मेरे प्राणों में तुम आकर, नव अप्रतिम[1] उल्लास भरो,
मेरे प्राणों में तुम आकर, नव अनुपम[2] अनुराग भरो ।

भवरों की फिर से हो गुन-गुन,
पल्लव[3] पुष्पित फिर हो हर द्रुम[4],

मेरे प्राणों में तुम आकर, नव सुरभित[5] मधुमास[6] भरो,
मेरे प्राणों में तुम आकर, नव अनुपम अनुराग भरो ।

सिक्त सभी हो कण-कण तृण-तृण[7],
तृप्ति भरें प्यासे वन - उपवन,

मेरे प्राणों में तुम आकर, नव रिमझिम बरसात भरो,
मेरे प्राणों में तुम आकर, नव अनुपम अनुराग भरो ।

फिर जागें सोये स्पंदन[8],
गीत सजे फिर कोई मदिर[9] मन,

मेरे प्राणों में तुम आकर, नव जीवन लय राग भरो,
मेरे प्राणों में तुम आकर, नव अनुपम अनुराग भरो ।

1. बेजोड़, अनुपम ; 2. उपमा रहित, सर्वोत्तम, बेजोड़ ; 3. नया एवं कोमल पत्ता ; 4. पेड़, वृक्ष ; 5. सुगन्धित, खुशबूदार ; 6. बसंत ऋतु ; 7. तिनका, खर-पात ; 8. गति, धड़कन, कम्पन, विस्फुरण ; 9. अहंकार और भ्रम से भरा हुआ, मद से भरा हुआ ।

(20.05.2011)
सिडनी

58. मैं गीत निरत तेरे गाऊँ.....

मैं गीत निरत तेरे गाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो,
मैं तन्मय[1] तुमको दोहराऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो ।

कुंठा, ईर्ष्या और लिप्सा[2] को,
मैं भूलूँ अपनी अहम्यता[3] को ।
मैं गत-आगत[4] सब कुछ भूलूँ,
इस घनीभूत[5] तममयता[6] को ।

मैं कल्मष[7] अपने धो जाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो,
मैं गीत निरत तेरे गाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो ।

मुझमें भर दो आह्लाद[8] नया,
श्वासों में भर दो राग नया ।
मधुमय मृदुमय शब्दों को दो,
श्रृद्धामय दो अनुराग नया ।

मैं स्वर लहरों में खो जाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो,
मैं गीत निरत तेरे गाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो ।

प्राणों में शुभ संगीत सजे,
लय छंद नया शुभ गीत सजे ।
हो जाए सभी जग-मग जग-मग,
मेरे अंतर[9] शुभ[10] ज्योति सजे ।

मैं भी शुभ शुचिमय[11] हो जाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो,
मैं गीत निरत तेरे गाऊँ, वर दो मुझको हे प्रभु वर दो ।

1. तल्लीन, दत्तचित्त, मग्न ; 2. चाह, इच्छा ; 3. अहंकार ; 4. बीता-आने वाला ; 5. गहरा, जो घना हो गया हो ; 6. अँधेरा, अंधकार ; 7. पाप, मैल, दोष ; 8. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 9. भीतर, अंत, बीच में ; 10. मंगल, कल्याण ; 11. पवित्र, शुद्ध, निष्कपट ।

(21.05.2011)
सिडनी

59. प्रार्थना सुन प्रभु हमारी.....

प्रार्थना सुन प्रभु हमारी,
ओ रे माधव ओ मुरारी ।

आज सब आह्लाद रूठे,
आज सब विश्वास रूठे ।
रह गए तम में अकेले,
हम से सारे साथ रूठे ।

छूटती उम्मीद सारी,
ओ रे माधव ओ मुरारी ।

एक तुम ही हो हमारे,
एक तुम ही हो सहारे ।
कौन दूजा है जगत में,
जो हमें दु:ख से उबारे ।

आज कष्टों में हैं भारी,
ओ रे माधव ओ मुरारी ।

तुम हमारी आस रख लो,
तुम हमारी लाज रख लो ।
बिगड़ी हर तुम ही बनाते,
आज यह विश्वास रख लो ।

हम शरण में हैं तुम्हारी,
ओ रे माधव ओ मुरारी ।

(24.05.2011)
सिडनी

60. ओ रे देश के जवान.....

ओ रे देश के जवान शक्तिमान बन,
शूर-वीर-धीर और बुद्धिमान बन ।

देखती हो कोई दृष्टि तुझको आस भर,
सहृदय हो तू सदा मेहरबान बन ।

ज़िन्दगी की राह में जो गुल खिला गए,
कर नमन निरत उन्हें श्रद्धावान बन ।

यदि कभी हों देश पर संकटों के मेघ,
प्रचंड वायु वेग सम तू तूफान बन ।

हो सभी को नाज़ कुछ ऐसा कर दिखा,
छू नया गगन कोई तू महान बन ।

भारती सपूत है भारतीय तू,
हिन्दू बौद्ध पारसी न मुसलमान बन ।

(27.05.2011)
सिडनी

61. कभी ये मुस्कुराए है.....

कभी ये मुस्कुराए है,
कभी ये गुनगुनाए है ।
कभी हँसे बिना वजह,
कभी ये गीत गाए हैं ।

कभी किसी बहार सा,
कभी किसी खुमार सा ।
मेरा मन ये मेरा मन,
मेरा मन ये मेरा मन ।

कभी बड़ा उदास हो,
कभी अतृप्त प्यास हो ।
कभी रहे ये मौन में,
कभी बड़ा हताश हो ।

कभी ये टूटे तार सा,
कभी ये जार-जार सा ।
मेरा मन ये मेरा मन,
मेरा मन ये मेरा मन ।

कभी रहे ये क्रोध में,
कभी रहे ये मोद में ।
कभी भरे कोई जलन,
कभी रहे विरोध में ।

कभी ये सिन्धु ज्वार सा,
कभी गरम बयार सा ।
मेरा मन ये मेरा मन,
मेरा मन ये मेरा मन ।

कभी करे ये प्रार्थना,
कभी करे ये अर्चना ।
कभी किसी सृजन में हो,
कभी करे ये कल्पना ।

कभी बजे सितार सा,
कभी भरे निखार सा ।
मेरा मन ये मेरा मन,
मेरा मन ये मेरा मन ।

(28.05.2011)
सिडनी

62. बात ऐसी कि जिसे सुन के.....

बात ऐसी कि जिसे सुन के दिल बहलता हो,
बात ऐसी कि जिसे सुन के दिल मचलता हो,

किसी के शोख इशारों की बात मुझसे कर,
जवाँ हसीन नज़ारों की बात मुझसे कर ।

बात ऐसी कि जिसे सुन के सवेरा जागे,
बात ऐसी कि जिसे सुन के अँधेरा भागे,

शमाँ की जलती कतारों की बात मुझसे कर,
जवाँ हसीन नज़ारों की बात मुझसे कर ।

बात ऐसी कि जिसे सुन के रवानी आये,
बात ऐसी कि जिसे सुन के जवानी छाए,

फलक के उजले सितारों की बात मुझसे कर,
जवाँ हसीन नज़ारों की बात मुझसे कर ।

बात ऐसी कि जिसे सुन के दिल बदलता हो,
बात ऐसी कि जिसे सुन के दिल सँभलता हो,

खिजाँ में मस्त बहारों की बात मुझसे कर,
जवाँ हसीन नज़ारों की बात मुझसे कर ।

(03.06.2011)
सिडनी

63. कि जिसे सुन के मेरा तन बदन.....

कि जिसे सुन के मेरा तन बदन महकने लगे,
मैं उमंगों से भरूँ स्वर मेरा चहकने लगे ।

जवाँ हसीन नजारों की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

किसी का हुस्न जिसे देख कर ख़ुमार सा हो,
चाँदनी में किसी छूटे हुए अनार सा हो ।

किसी के शोख इशारों की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

जहाँ गुन-गुन कभी कल-कल की सदा आती हो,
जहाँ खुशबू से भरी ठंडी हवा आती हो ।

किसी दरिया के किनारों की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

इश्क में खुद को लुटा दुनियाँ में मशहूर बने,
ढोला-मारू[1] सोहनी-महिवाल[2] राँझा-हीर[3] बने ।

जरा सा मन के सहारों की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

क्या सुना संत-साधू-सूफी ज्ञानी पीर कहें,
सूर[4] तुलसी[5] दादू[6] नानक[7] धना[8] कबीर[9] कहें ।

किसी के नेक विचारों की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

वे जो हँस-हँस के जवाँ देश पर शहीद हुए,
सोम[10] सेखों[11] इक्का[12] थापा[13] करम[14] हमीद[15] हुए ।

वतन के मेरे सितारों की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

स्वेद[16] लथपथ श्रमिक जुटे हुए खदानों में,
घरों में, खेतों में, शहरों, कारखानों में ।

जमीं पे खिलते शरारों[17] की बात मुझसे कर,
फ़िज़ा की मस्त बहारों की बात मुझसे कर ।

1. राजस्थानी प्रेम गाथा, "ढोला मारू री चौपाई" राजस्थानी कवि कुशाल्लभ 1617 ई०, लोक गीतों और गद्य में ; 2. पंजाबी प्रेम गाथा, पंजाबी संत फजल शाह सैय्यद द्वारा लिखित ; 3. पंजाबी संत कवि वारिस शाह द्वारा 1766 ई० में लिखित ; 4. सूरदास, हिन्दी भक्त कवि (1478/1479 - 1581/1584), कृष्ण भक्ति शाखा, सूरसागर व अन्य ; 5. तुलसीदास, हिन्दी भक्त कवि (1497/1532 - 1623), रामभक्ति शाखा, रामचरितमानस, हनुमान चालीसा व अन्य ; 6. दादू दयाल, गुजराती, संत कवि (1544-1603), दादू अनुभव वाणी ; 7. गुरू नानक देव जी (15-04-1469-22-09-1539), सिक्ख धर्म के संस्थापक ; 8. धन्ना भगत, संत कवि (1415 - ?), कुछ पद गुरू ग्रन्थ साहिब में संकलित ; 9. कबीरदास, हिन्दी संत कवि (1440-1518) बीजक, साखी, कबीर ग्रन्थावली, अनुराग सागर आदि ; 10. मेजर सोम नाथ शर्मा, चौथी बटालियन, कुमायूँ रैजीमेंट, बडगाँव, कश्मीर (03-11-1947) परम वीर चक्र मरणोपरांत ; 11. न० 18 स्कवाडर्न, भारतीय वायु सेना (04-12-1971) श्रीनगर, कश्मीर परमवीर चक्र मरणोपरांत ; 12. लान्स नायक, एल्बर्ट इक्का, चौहदवीं बटालियन, ब्रिगेड ऑफ गाड्र्स, गंगासागर, (03-12-1961) परम वीर चक्र मरणोपरांत ; 13. मेजर धन सिंह थापा, पहली बटालियन, आठवीं गुरुखा रायफल्स, लद्दाख, भारत (20-10-1971) परम वीर चक्र मरणोपरांत 14. लान्स नायक करम सिंह, पहली बटालियन, सिख रेजीमेंट, तिथिवाल, कश्मीर (03-10-1948) परम वीर चक्र मरणोपरांत ; 15. हवलदार अब्दुल हमीद, चौथी बटालियन, ग्रेनेडीयर्स, खेमकरण सेक्टर (10-09-1965) परम वीर चक्र, मरणोपरांत ; 16. पसीना ; 17. चिंगारी, स्फुलिंग, अग्निकण ।

(04.06.2011)
सिडनी

64. घिर रही घटाओं में.....

घिर रही घटाओं में,
चीखती सदाओं[1] में ।
आँधी जैसी तेज-तेज,
बह रही हवाओं में ।

रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।
रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।

तेज शीत-ताप में,
तीव्रतर प्रकाश में ।
शून्य और भयावह,
गहन अंधकार में ।

रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।
रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।

तीव्र हिमपात में,
तेज तोयपात[2] में ।
ध्वंस[3] से भरे हुए,
उग्र[4] आप्लाव[5] में ।

रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।
रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।

हो अदम्य[6] आस में,
डूबते नैराश्य[7] में ।
उठती-गिरती उर[8] की हर,
एक-एक श्वास में ।

रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।
रह सदा सजग-सचेत,
सावधान सावधान ।

1. आवाज़ों, पुकारों ; 2. वर्षा, बारिश ; 3. विनाश ; 4. भयानक, क्रूर, तीव्र, हिंस्र, तेज ; 5. बाढ़ ; 6. जो दबाया न जा सके, प्रबल, प्रचंड ; 7. निराशा ; 8. छाती, हृदय ।

(08.06.2011)
सिडनी

65. आ मिल के बैठ पास.....

आ मिल के बैठ पास ठिकाने[1] की बात हो,
कुछ बात हो नए की पुराने की बात हो ।

अपनी सुना कि किस तरह गुज़र रही तेरी,
कुछ शेर शायरी हो फ़साने[2] की बात हो ।

दर्रा[3], दुखान[4], दरिया[5] हो या दश्त[6] दहकान[7],
हो जिक्र सभी का जो जताने की बात हो ।

हो किसी अश्आर[8] में मज़मून[9] यूँ बयाँ,
कि हँसते हुए जिसमें रुलाने की बात हो ।

कर पेश फड़कता सा कोई शेर तू ऐसा,
कह जाएँ इशारे जो छिपाने की बात हो ।

हो हुस्न-इश्क आशिकी जुल्फ़-ओ-खम[10] की बात,
तीर, जिगर[11], दीद[12] निशाने की बात हो ।

मशविरा[13], तकरार[14] हो न वाइज़ों[15] की बात,
बातों में अगर हो तो दीवाने की बात हो ।

गीत हो लबों पे जिसमें शान हिंद की,
गाने की अगर हो जो तराने की बात हो ।

1. भरोसा ; 2. कहानी ; 3. घाटी ; 4. धुआँ ; 5. नदी ; 6. जंगल ; 7. देहाती आदमी ; 8. कविता ; 9. विषय ; 10. घुमाव, टेढ़ापन ; 11. कलेजा, चित्त, मन, साहस, हिम्मत ; 12. नज़र, दृष्टि ; 13. परामर्श, सलाह ; 14. बहस ; 15. उपदेशक ।

(10.06.2011)
सिडनी

66. इसको अपनी अंजुलि भर लो.....

इसको अपनी अंजुलि भर लो,
यह माटी पुण्य विशेष की है ।
इसको अपने मस्तक धर लो,
यह माटी भारत देश की है ।

वन-उपवन मैदानों की,
नाना खनिज खदानों की ।
सरित-सरोवर भर अनगिन,
पर्वत, मरुथल, चट्टानों की ।

इसको अपनी स्मृति भर लो,
यह संसृति[1] के अनिमेष[2] की है ।
इसको अपने मस्तक धर लो,
यह माटी भारत देश की है ।

दुर्गों, महलों, मीनारों की,
दरगाह, मठों, गलियारों की ।
जिनमें जीवन किलकारी ले,
उन कोटिश घर-चौबारों की ।

इसका वंदन-वादन कर लो,
यह गौरवमय परिवेश[3] की है ।
इसको अपने मस्तक धर लो,
यह माटी भारत देश की है ।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों की,
गिरजाघर, पीठ[4], विहारों[5] की ।
शबद[6], ऋचाओं, उपदेशों,
संतों और श्रमण विचारों की ।

इसकी पूजा-अर्जन कर लो,
यह संस्कृति[7] के उन्मेष[8] की है ।
इसको अपने मस्तक धर लो,
यह माटी भारत देश की है ।

1. संसार ; 2. जागरूक, स्थिर दृष्टि, एकटक ; 3. वेष्टन, परिधि, चारों ओर ; 4. उपदेश, शिक्षा आदि देने का स्थान, व्रतियों के बैठने का स्थान ; 5. बौद्ध विहार ; 6. संत वाणी ; 7. संस्कृत रूप देने की क्रिया परिष्कृति, संस्कार, अलंकृत करना या सजाना, आचारगत परम्परा ; 8. आँख का खुलना, प्रकट होना, खुलना, हल्का प्रकाश ।

(14.06.2011)
सिडनी

67. तेरा सजदा ही करूँ मैं.....

तेरा सजदा[1] ही करूँ मैं,
तेरा कलमा[2] ही पढ़ूँ मैं,

दे मुझे बख्शीश[3] दे अल्लाह,
दे मुझे तोफ़ीक़[4] दे अल्लाह ।

हर बुराई से लड़ूँ मैं,
ना किसी से भी डरूँ मैं,

दे मुझे तकमील[5] दे अल्लाह,
दे मुझे तोफ़ीक़ दे अल्लाह ।

तेरे बन्दों में रहूँ मैं,
तेरे बन्दों की करूँ मैं,

दे मुझे तरज़ीह[6] दे अल्लाह,
दे मुझे तोफ़ीक़ दे अल्लाह ।

काम ऐसा कर चलूँ मैं,
नाम अपना कर चलूँ मैं,

दे मुझे तमजीद[7] दे अल्लाह,
दे मुझे तोफ़ीक़ दे अल्लाह ।

1. प्रार्थना ; 2. इस्लाम धर्म का मूल मंत्र, उक्ति, सार्थक शब्द ; 3. दान, ईनाम, पुरस्कार ; 4. देव कृपा, शक्ति, सामर्थ्य, हिम्मत, हौसला ; 5. पूर्णता, निष्पादन, निर्माण, पराकाष्ठा, आदर्श ; 6. वरीयता, प्राथमिकता, प्रधानता, बढ़चढ़ कर होना ; 7. उच्चता, उन्नति, उत्कर्ष, प्रतिष्ठा ।

(16.06.2011)
सिडनी

68. तू ही हक़ीक़त है मेरी.....

तू ही हक़ीक़त[1] है मेरी,
तू ही इबादत[2] है मेरी,
तू ही इनायत[3] है मेरी,
तू ही मुहब्बत[4] है मेरी,

मौला मेरे, मौला मेरे,
मौला मेरे, मौला मेरे ।

तू ही तो मेरा गुरूर[5] है,
तू ही तो मेरा सुरूर[6] है,
तू ही तो मेरा गफ़ूर[7] है,
तू ही तो मेरा हुज़ूर[8] है,

मौला मेरे, मौला मेरे,
मौला मेरे, मौला मेरे ।

तू ही तो मेरा मुकाम[9] है,
तू ही तो मेरा पयाम[10] है,
तू ही तो मेरा ईमान[11] है,
तू ही तो मेरा जहान[12] है,

मौला मेरे, मौला मेरे,
मौला मेरे, मौला मेरे ।

तू ही मेरे एहसास में,
तू ही मेरे हर ख्वाब में,
तू ही मेरी आवाज़ में,
तू ही मेरी हर साँस में,

मौला मेरे, मौला मेरे,
मौला मेरे, मौला मेरे ।

1. असलियत, यथार्थता, सच ; 2. उपासना, पूजा ; 3. कृपा ; 4. प्रेम, इश्क, चाह, स्नेह, मित्रता ; 5. घमंड, गर्व ; 6. खुमार, खुशी, आनन्द, हल्का और सुखद नशा ; 7. हाकिम, सामने आना ; 8. श्रीमान, ज़नाबआली, हाकिम का दरबार या इजलास ; 9. पड़ाव, जगह, स्थान, ठहराव, विराम, घर ; 10. संदेश ; 11. धर्म,, सच्चाई, नीयत, धर्म, विश्वास, ईश्वर या विश्वास ; 12. संसार, दुनियाँ, विश्व ।

(17.06.20111)
सिडनी

69. अविरल आते रात्रि-दिवस.....

अविरल[1] आते रात्रि-दिवस संग,
स्वर्णिम[2] आभा[3] चन्द्र किरण संग ।
हर ॠतु के संग - संग में बदले,
सुरभित[4], शीतल, आर्द्र[5] पवन संग ।

पल प्रतिपल जीता जाता है,
यह जीवन बीता जाता है ।

नयन तरसते शुभ सुन्दरतम,
श्रवण[6] तरसते सुरमय गुंजन ।
मुझको भी मिल जाए अमृत,
इस आशा में मोद-मदिर[7] मन ।

नित्य गरल[8] पीता जाता है,
यह जीवन बीता जाता है ।

आवेगों[9] अनुरागों[10] के संग,
पीड़ा और अवसादों के संग ।
जर्जर[11] होती 'स्व'[12] की चादर,
सज जाएँ कुछ खुशियों के रंग ।

तन्मय[13] हो सीता जाता है,
यह जीवन बीता जाता है ।

स्मृति भरता मधुरित[14] यौवन,
संचित[15] करता हर सुविधा धन ।
कम्पित फिर आशंका भरकर,
शाश्वत[16] अर्थवान क्या हो मम[17] ।

भय भरता, रीता[18] जाता है,
यह जीवन बीता जाता है ।

1. लगातार, अविरत, मिला या सटा हुआ, घना ; 2. सुनहला, स्वर्ण का ; 3. शोभा, कान्ति, चमक, रंगत, प्रतिबिम्ब ; 4. सुगन्धित, सुवासित ; 5. गीला, तरल, नम, द्रवित, लथपथ ; 6. कान, कर्ण ; 7. मद, अहंकार से भरा हुआ ; 8. विष, जहर ; 9. जोश, बिना सोचे-समझे कर बैठने की अंत:प्रेरणा, अशांति ; 10. प्रेम, भक्ति . 11. जो कमजोर हो गया हो, खंडित, टूटा-फूटा ; 12. सेल्फ, अपना, निज का, 13. तल्लीन, दत्तचित, मग्न ; 14. मिठास युक्त ; 15. जमा किया हुआ ; 16. सदा रहने वाला ; 17. मेरा ; 18. खाली, अभाव वाला, शून्य ।

(22.06.2011)
सिडनी

70. मैं आया हूँ शरण तुम्हारी.....

मैं आया हूँ शरण तुम्हारी,
मुझपर भी उपकार करो माँ ।
मैं भी तो तेरा ही सुत[1] हूँ,
मेरा भी उद्धार करो माँ ।

सारे अवगुण[2] ही हैं मुझमें,
उनको क्या कर मैं दोहराऊँ ।
मन ही मन लज्जा से भरकर,
नयना अविरल[3] नीर बहाऊँ

द्वार खड़ा हूँ कब से तेरे,
मैं जैसा स्वीकार करो माँ ।
मैं भी तो तेरा ही सुत हूँ,
मेरा भी उद्धार करो माँ ।

संगी-साथी कोई न मेरा,
मेरा न कोई अपना सहारा ।
एक तुम्हीं तो सत्य हो जग में,
चहुँदिश[4] गूँजे नाम तुम्हारा ।

सब ने तो मुझको ठुकराया,
तुम तो मुझको प्यार करो माँ ।
मैं भी तो तेरा ही सुत हूँ,
मेरा भी उद्धार करो माँ ।

तुम ही तो हो जग की कारिणी,
तुम ही तो आद्या[5] शक्ति[6] हो ।
तुम ही तो हो सब दु:खहारिणी[7],
तुम ही तो स्थिति[8] सृष्टि[9] हो,

तुम ही तो हो जीवनदायिनि[10],
मत मुझको इंकार करो माँ ।
मैं भी तो तेरा ही सुत हूँ,
मेरा भी उद्धार करो माँ ।

1. बेटा, पुत्र ; 2. बुराई, दोष, ऐब ; 3. लगातार ; 4. सभी ओर ; 5. मूल, आदि, दुर्गा ; 6. ताकत, बल ; 7.दुःख को हरने वाली ; 8. ठहराव, दशा, स्वभाव, अस्तित्व ; 9. निर्माण, रचना, उत्पत्ति ; 10. जीवन देने वाली ।

(24.06.2011)
सिडनी

71. माँ मेरे सिर पर हाथ फिरा.....

माँ मेरे सिर पर हाथ फिरा,
भर दे मुझको सम्मानों से ।
कुछ बोल वचन आशीष[1] भरे,
भर दे मुझको वरदानों से ।

मेरा मन–मधु कब सूख गया,
जाने कब से मैं प्यासा हूँ ।
अब आस नहीं कोई बाकी,
मैं तो अब भरे निराशा हूँ ।

नैराश्य मेरा फिर मिट जाये,
भर दे मुझको अभिमानों से ।
कुछ बोल वचन आशीष भरे,
भर दे मुझको वरदानों से ।

अपने पतझड़ के जाते ही,
मैं फिर बसंत सा हो जाऊँ ।
मैं भी होऊँ पल्लव[2] पुष्पित,
मैं भी फिर द्रुम[3] सा खिल जाऊँ ।

मन झूमें और नाचे गाये,
भर दे मुझको मुस्कानों से ।
कुछ बोल वचन आशीष भरे,
भर दे मुझको वरदानों से ।

इस जग में हर कण और त्रण[4] की,
सबकी अपनी ही सत्ता है ।
सबकी अपनी अपने ढंग से,
अपनी–अपनी अर्थवत्ता[5] है ।

कुछ शुभमय मुझमें अर्थ भरे,
भर दे मुझको पहचानों से ।
कुछ बोल वचन आशीष भरे,
भर दे मुझको वरदानों से ।

1. आशीर्वाद, असीस ; 2. नया एवं कोमल पत्ता ; 3. पेड़, वृक्ष ; 4. तिनका, खर-पात ; 5. अर्थ की सम्पन्नता, अभिप्राय, मतलब ।

(29.06.2011)
सिडनी

72. हे प्रभु मानव जीवन को.....

हे प्रभु मानव जीवन को शुभ स्पन्दित[1] कर दो तुम,
नव चेतन आलोक[2] भरो शुभ सतरंगित कर दो तुम ।

कण-तृण[3] अथवा कानन[4] हो,
नभ[5], जल या थल[6] आँगन हो ।
स्थावर[7] हो या जंगम[8],
चहुँदिश तुम शुभ पावन हो ।

हर ओर तुम्हारी छवि दीखे, शुभ अभिव्यंजित[9] कर दो तुम,
हे प्रभु मानव जीवन को, शुभ स्पन्दित कर दो तुम ।

शुभ नेह[10] की शुचिमय[11] रीति सजे,
लय-ताल नया संगीत सजे ।
शुभ छंद हो नव हो राग कोई,
प्राणों में शुभमय गीत सजे ।

सब का सब मधु रसमय हो, शुभ अभिसिंचित[12] कर दो तुम,
हे प्रभु मानव जीवन को, शुभ स्पन्दित कर दो तुम ।

अक्षत[13] आह्लाद[14] नये भर दो,
शुभकर विश्वास नये भर दो ।
भर दो उर[15] को पर[16] पीड़ा से,
वेदन[17] विश्वास नये भर दो ।

मर्त्य[18] मनुज[19] की गरिमा[20] को, शुभ अभिवन्दित[21] कर दो तुम,
हे प्रभु मानव जीवन को, शुभ स्पन्दित कर दो तुम ।

1. स्फुरणयुक्त, गतिमय, स्पंदनयुक्त ; 2. रोशनी, प्रकाश, देखना, दर्शन ; 3. तिनका, खर-पात ; 4. घना वन, बड़ा जंगल ; 5. आकाश, आसमान ; 6. स्थल, जलरहित भूमि, स्थान, जगह ; 7. स्थिर, वानस्पतिक ; 8. जो चल सकता हो . 9. अभिव्यक्ति, विचारों एवं भावों को प्रकट करना ; 10. स्नेह,

प्रीति, प्यार ; 11. शुद्ध, पवित्र, निष्कपट, निश्छल ; 12. अच्छी तरह सींचा हुआ ; 13. समूचा, बिना टूटा हुआ, शिव, कल्याण ; 14. प्रसन्नता, खुशी, हर्ष ; 15. हृदय, छाती ; 16. दूसरा, पराया ; 17. संवेदन, पीड़ा ; 18. मरणशील ; 19. मनुष्य, इंसान, नर ; 20. महिमा, महत्व, गुरुत्व ; 21. अभिवादित ।

(03.07.2011)
सिडनी

73. अनुपम, अपरिमित, उल्लासमय.....

अनुपम[1], अपरिमित[2], उल्लासमय[3] शुभ[4],
अरुणाई[5] भरता गगन[6] कह रहा है ।
जागो–रे–जागो, जागो धरा[7] सुत[8],
उठो आज सारा चमन कह रहा है ।

होऊँ मैं मुकुलित[9] यही मेरा वन्दन,
होऊँ मैं कुसुमित[10] यही मेरा अर्चन[11] ।
सुरभि[12] से भरूँ मैं चारों दिशाएँ,
प्रातः से सायं खिले मेरा यौवन ।

मैं फुल्ल[13] कुसुमित सुरभि[14] से भरा अब,
डाली सजाता सुमन[15] कह रहा है ।
जागो–रे जागो, जागो धरा सुत,
उठो आज सारा चमन कह रहा है ।

चलना ही केवल हमारा धरम है,
चलना ही केवल हमारा करम है ।
चलना ही पथ, लक्ष्य[16] भी सिर्फ चलना,
रुकना ही केवल यहाँ पर भरम है ।

पल भर रुको मत चलते चलो बस,
शीतल–औ–सुरभित पवन कह रहा है ।
जागो – रे – जागो, जागो धरा सुत,
उठो आज सारा चमन कह रहा है ।

शुचिता[17] व् करुणा[18] अक्षुण्ण[19] तुम्हीं से,
मानव की गरिमा[20] अक्षुण्ण तुम्हीं से ।
तुम्हीं से तो अक्षुण्ण सत[21] शील[22] सारा,
धरती की महिमा अक्षुण्ण तुम्हीं से ।

सदा सत्य पथ पर निडर[23] हो चले हैं,
उन्हें विश्व सारा नमन[24] कह रहा है ।
जागो - रे - जागो, जागो धरा सुत,
उठो आज सारा चमन कह रहा है ।

1. उपमा रहित, सर्वोत्तम, बेजोड़ ; 2. बे-हद, बे-हिसाब, अगणित, अत्यधिक ; 3. खुशी, हर्ष, उमंग, चमक ; 4. मंगल, कल्याण ; 5. लालिमा ; 6. आसमान, नभ ; 7. जमीन, पृथ्वी, भू ; 8. पुत्र, बेटा ; 9. खिला हुआ, अध् खिला ; 10. पुष्पित, खिला हुआ ; 11. पूजा, वन्दन, उपासना ; 12. खुशबू, सुगंध ; 13. प्रसन्न, विकसित ; 14. खुशबू ; 15. फूल, पुष्प ; 16. उद्देश्य, निशान, अनुमेय ; 17. शुचि होने का भाव, निर्मलता, पवित्रता, निष्कपटता, शुद्धता ; 18. दया, रहम ; 19. अखंडित, समूचा ; 20. महत्व, गुरुत्व, भारीपन ; 21. मंगल, शुभ ; 22. नैतिक आचरण और व्यवहार, सदवृत्ति ; 23. निर्भय, बिना डर या भय के ; 24. प्रणाम, नमस्कार ।

(08.07.2011)
सिडनी

74. उग रहा पूरब दिशा से देख.....

उग रहा पूरब दिशा से देख दिनकर[1],
झूमते उल्लास से सब गुल्म[2] तरुवर[3] ।
जग गये सब जीव जागे वन-ओ-उपवन,
देख कब की भोर हो ली जाग-रे-मन ।

सूर्य किरणों से तरंगित फिर सरोवर[4],
उड़ रहे पंछी भी नभ[5] में करके कलरव[6] ।
हो गया चैतन्य धरती का हर एक तृण[7],
देख कब की भोर हो ली जाग-रे-मन ।

गा रहीं सरिताएँ[8] गाते गीत निर्झर[9],
गा रहीं हैं हवाएँ गाते झूम मधुकर[10] ।
गा रहा सारा गगन[11] गाता हर एक क्षण,
देख कब की भोर हो ली जाग-रे-मन ।

बन कोई दीपक सजाये ज्वाल[12] अविरल[13],
भर ले नव स्फूर्ति नव विश्वास अविचल[14] ।
फिर वही दोहरा स्वयं[15] के शुभ[16] सृजन[17] प्रण[18],
देख कब की भोर हो ली जाग-रे-मन ।

1. सूरज, सूर्य ; 2. झाड़ी, सैन्यदल ; 3. पेड़, वृक्ष ; 4. तालाब ; 5. आसमान, आकाश ; 6. मंद एवं मधुर स्वर वाला ; 7. तिनका, खर-पात ; 8. नदियाँ ; 9. झरना ; 10. भौंरा ; 11. आसमान ; 12. ज्वाला, आग की लपट ; 13. लगातार ; 14. स्थिर ; 15. अपने आप, खुद ; 16. मंगलकारी, कल्याणकारी ; 17. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ; 18. प्रतिज्ञा, कसम ।

(10.07.2011)
सिडनी

75. मैं खुशी को ढूँढता पुकारता.....

मैं खुशी को ढूँढता पुकारता चला गया,
इसी तरह मैं ज़िन्दगी गुज़ारता चला गया ।

कभी तो पन्थ मखमली सिर सुहानी छाँव थी,
कभी थी चिलचिलाती धूप दूर तक न ठाँव[1] थी,

जो मिला उसी को स्वीकारता चला गया,
इसी तरह मैं ज़िन्दगी गुज़ारता चला गया ।

कभी बढ़ाया जो कदम तो कोई शूल[2] चुभ गया,
चीखने लगा कि हाय दर्द से मैं मर गया,

पथ के कंटकों[3] को मैं बुहारता चला गया,
इसी तरह मैं ज़िन्दगी गुज़ारता चला गया ।

राह में कभी-कभी बड़े ही रम्य[4] दृश्य थे,
चहक रहे विहग सभी, तड़ाग[5]-गुल्म[6]-वृक्ष थे,

देख-देख मन उन्हें उतारता चला गया,
इसी तरह मैं ज़िन्दगी गुज़ारता चला गया ।

कभी जो राह में मुझे मन का मीत मिल गया,
भर गया उमंग से मैं पुष्प जैसा खिल गया,

धन्य-धन्य कह उसे निहारता चला गया,
इसी तरह मैं ज़िन्दगी गुज़ारता चला गया ।

1. जगह, स्थान, ठिकाना ; 2. काँटा, विकट, पीड़ा ; 3. काँटा, बाधा ; 4. रमणीय, सुंदर ; 5. तालाब, सरोवर ; 6. झाड़ी ।

(17.07.2011)
सिडनी

76. दीनदयाल दया करो भगवन.....

दीनदयाल दया करो भगवन, तेरे ही गुण गाऊँ मैं,
तुमको निश–दिन याद करूँ मैं, तुमको ही दोहराऊँ मैं ।

तुम तो हो प्रभु अंतर्यामी[1], तुम तो जानो क्या दु:ख मेरा,
मैं मूरख, निर्बल, खल[2], कामी[3], दूर करो मेरे मन का अँधेरा,

मुझको असह्य अब पीर हृदय की, अविरल[4] नीर बहाऊँ मैं,
दीनदयाल दया करो भगवन, तेरे ही गुण गाऊँ मैं ।

एक तुम्हीं हो जग में हमारे, एक तुम्हीं हो सबका सहारा,
एक तुम्हीं भवतारण[5] हारे और न दूजा जग में हमारा,

तू ही बता फिर कौन है जग में, तेरे सिवा कित जाऊँ मैं,
दीनदयाल दया करो भगवन, तेरे ही गुण गाऊँ मैं ।

तुम ही तो प्रभु जग के रचयिता, तुम ही तो हो प्रभु जगदीश्वर ।
तुम ही तो पालन, लय करता, तुम ही तो हो प्रभु परमेश्वर ।

तेरा ही करता नित वन्दन, तुमको शीश नवाऊँ मैं,
दीनदयाल दया करो भगवन, तेरे ही गुण गाऊँ मैं ।

1. मन की बात जानने वाला, मन में स्थित, ईश्वर ; 2. दुष्ट, दुर्जन, अधम, नीच, निर्लज्ज ; 3. कामना युक्त, विषयी ; 4. लगातार, घना, अविरल, मिला हुआ या सटा हुआ ; 5. संसार में आवागमन से मुक्ति देना ।

(19.07.2011)
सिडनी

77. पथ प्रशस्त वीर चल.....

पथ प्रशस्त[1] वीर चल,
पथ प्रशस्त वीर चल ।

दृष्टि में गंतव्य[2] है,
तुझको क्या अलभ्य[3] है ।
हो निशंक[4], निष्प्रपंच[5],
लक्ष्य[6] भेद तीर चल ।

पथ प्रशस्त वीर चल,
पथ प्रशस्त वीर चल ।

भोर हर निहारती,
आस हर पुकारती ।
भर ले उर[7] में वेदना,
पर की ले के पीर चल ।

पथ प्रशस्त वीर चल,
पथ प्रशस्त वीर चल ।

मन अमित[8] उमंग ले,
स्वप्न राग संग ले ।
चल रे सिन्धु[9] ज्वार[10] सा,
प्रस्तरों[11] को चीर चल ।

पथ प्रशस्त वीर चल,
पथ प्रशस्त वीर चल ।

तू ही देश गर्व[12] है,
तू ही देश दर्प[13] है ।
दिव्यता[14] का अंश तू,
अतुल[15] अनन्य[16] धीर[17] चल ।

पथ प्रशस्त वीर चल,
पथ प्रशस्त वीर चल ।

1. उत्तम, शुभ, प्रशंसा किया हुआ ; 2. मंजिल, लक्ष्य, जाने योग्य ; 3. जो मिलता न हो, दुर्लभ, अनमोल, बहुमूल्य ; 4. निडर, बिना डर के ; 5. छलरहित, निष्कपट ; 6. निशान, उद्देश्य ; 7. हृदय, छाती ; 8. बेहद, जो मापा न जा सके ; 9. सागर, समुद्र ; 10. समुद्र के तल का ऊपर आना ; 11. पत्थरों ; 12. अहंभाव, घमंड ; 13. अभिमान, घमंड, मान, रोब ; 14. उत्तमता, श्रेष्ठता, दिव्य अवस्था ; 15. अमित, असीम, अत्यधिक ; 16. एकमात्र, एकाग्र, एकनिष्ठ ; 17. नम्र, विनीत, शांत स्वभाववाला ।

(22.07.2011)
सिडनी

78. नमन तुम्हें शत-शत धरणी.....

नमन तुम्हें शत-शत[1] धरणी[2],
नमन तुम्हें ओ कर्मभूमि ।
नमन तुम्हें शत-शत धरणी,
नमन तुम्हें ओ मातृभूमि ।

हिम[3] आच्छादित[4] तुंग[5] शिखर[6],
छूने को उद्यत[7] नीलाम्बर[8] ।
उत्ताल[9] तरंगों से भरकर,
हर्षित[10] हो हर पल रत्नाकर[11] ।

उर[12] में अप्रतिम[13] अनुराग[14] भरे,
वत्सलता[15] की निधि[16] असीम[17] ।
नमन तुम्हें शत-शत धरणी,
नमन तुम्हें ओ मातृभूमि ।

कभी हर्षित हो घूँघट लेती,
वारिद[18] की बूँदें भर झर-झर ।
कभी रूप धरे तपस्विनी का,
कृशकाय[19] मौन ऋतु ले पतझड़ ।

मधुमास[20] सजा फिर मुस्काए,
तरु[21] सजते पल्लव[22] नवीन ।
नमन तुम्हें शत-शत धरणी,
नमन तुम्हें ओ मातृभूमि ।

जीवन जल भर सब सरिताएँ,
बहती जातीं करती कल-कल ।
मंद समीरण[23] सुरभि[24] भरे,
कहता जाता है अविरल[25] चल ।

जीवन पथ के निर्भीक[26] पथिक[27],
मत समझ कभी संबल[28] विहीन[29] ।
नमन तुम्हें शत-शत धरणी,
नमन तुम्हें ओ मातृभूमि ।

1. सौ, असंख्य ; 2. पृथ्वी ; 3. बर्फ, पाला, तुषार ; 4. छाया हुआ, ढका हुआ ; 5. ऊँचे ; 6. पर्वत चोटी, चोटी, सिर ; 7. प्रस्तुत, तैयार ; 8. नीला आसमान, नील गगन ; 9. उन्मुक्त, पार गया हुआ ; 10. प्रसन्न, हर्ष, रोमांच ; 11. रत्नों की खान, समुद्र, सागर ; 12. हृदय, छाती ; 13. बेजोड़, अनुपम ; 14. प्रेम, भक्ति ; 15. बाल-बच्चों को प्यार ; 16. सम्पत्ति, धन-दौलत, आश्रय स्थान ; 17. जिसकी सीमा न हो, बेहद, अपार ; 18. बादल, मेघ ; 19. दुबला-पतला, कमजोर ; 20 वसंत ; 21. पेड़ वृक्ष ; 22. नया एवं कोमल पत्ता ; 23. हवा, पवन ; 24. खुशबू ; 25. लगातार ; 26. बिना भय के, निडर ; 27. राही ; 28. सहारा ; 29. बिना, बगैर, त्यागा हुआ ।

(28.07.2011)
सिडनी

79. वर दे माँ, मुझको वर.....

वर दे माँ, मुझको वर दे,
यदि फिर से जीवन पाऊँ ।
तेरी कोख से जन्म हो मेरा,
तेरा ही सुत[1] कहलाऊँ ।

श्वास में मेरी तेरी सुरभि[2] हो,
मेरे रुधिर[3] तेरा जीवन जल ।
स्मृति में भर जाए मेरी,
संग में बीता हर स्वर्णिम[4] पल ।

तेरे ही आँचल में खेलूँ,
तुझ पर ही मैं इतराऊँ ।
तेरी कोख से जन्म हो मेरा,
तेरा ही सुत कहलाऊँ ।

संसृति[5] को देखूँ मैं फिर से,
देखूँ चिद्[6] के अविरल[7] नर्तन[8] ।
आते-जाते साँझ सवेरे,
जग में होते नित[9] परिवर्तन[10] ।

तेरी गोदी में ही जागूँ,
तेरी गोद ही सो जाऊँ ।
तेरी कोख से जन्म हो मेरा,
तेरा ही सुत कहलाऊँ ।

लोभ, मोह के अंधकार में,
मैंने जीवन व्यर्थ[11] गँवाया ।
जान के सच भी, मर्त्य[12] हूँ मैं भी,
गर्व[13]-शोक[14] में खोया-पाया ।

कर न सका इस जीवन में कुछ,
फिर आकर शुभ[15] कर जाऊँ ।
तेरी कोख से जन्म हो मेरा,
तेरा ही सुत कहलाऊँ ।

1. बेटा, पुत्र ; 2. खुशबू ; 3. खून ; 4. सुनहला ; 5. संसार, दुनियाँ ; 6. चेतनामय कण ; 7. लगातार ; 8. नृत्य, नाच ; 9. नित्य, लगातार ; 10. बदलाव ; 11. बेकार ; 12. मरणशील ; 13. अभिमान, घमंड ; 14. दु:ख ; 15. मंगलमय, कल्याणकारी, अच्छा ।

(29.07.2011)
सिडनी

80. गुमसुम सा क्यों है गीत सजा.....

गुमसुम सा क्यों है गीत सजा, गुनगुना के जी,
मन में सलोने ख़्वाब सजा, मुस्करा के जी ।

हर रात बीतती है सुहानी सी भोर भर,
सजती है तब निगाह क्षितिज[1] और छोर[2] भर,

तब झूम के गाती है फ़िज़ा[3], खिलखिला के जी,
मन में सलोने ख़्वाब सजा, मुस्करा के जी ।

गाती है मगन कल-कल बहती हुई नदी,
गाती है मगन तरु पर बैठी हुई पिकी[4],

तू भी कोई सा राग सजा, लय में गा के जी,
मन में सलोने ख़्वाब सजा, मुस्करा के जी ।

मिलती हैं ज़िन्दगी की घड़ियाँ नसीब से,
छू ले इन्हें तू देख ले कुछ तो करीब से,

हर वक़्त ज़िन्दगी दे सदा[5], हँसते-गा के जी,
मन में सलोने ख़्वाब सजा, मुस्करा के जी ।

1. जहाँ धरती और आसमान मिलते दिखाई देते हैं ; 2. किनारा, अंतिम सीमा, सीमा ; 3. वातावरण, ठंडी हवा ; 4. मादा कोयल ; 5. आवाज़, पुकार ।

(31.07.2011)
सिडनी

81. क्यों नित ही अवसाद भरे मन.....

क्यों नित ही अवसाद[1] भरे मन,
क्यों उनको नित याद करे मन ।

क्या होगा यूँ याद सजा कर,
क्या होगा यूँ शोक मना कर ।
पीर हृदय की कम होगी क्या,
क्या होगा यूँ नीर बहा कर ।

क्यों आँसू बरबाद करे मन,
क्यों उनको नित याद करे मन ।

काश अगर ऐसा हो जाता,
काश अगर वैसा हो जाता ।
होना ही था ऐसा ही तो,
यह ना हो वैसा हो जाता ।

क्यों खुद से संवाद करे मन,
क्यों उनको नित याद करे मन ।

लौट के आएँ फिर से वे दिन,
संग में बीते स्वर्णिम[2] पल-छिन ।
बाँहों के झूले हों फिर से,
रुक जाएँ तब होते निश-दिन ।

क्यों ऐसी अभिलाष[3] करे मन,
क्यों उनको नित याद करे मन ।

1. खेद, हार, सुस्ती, उदासी ; 2. सुनहला, स्वर्ण का ; 3. चाह, लोभ, प्रिय से मिलने की इच्छा !

(01.08.2011)
सिडनी

82. हर रोज गाता हँस के ये चंदा.....

हर रोज गाता हँस के ये चंदा, हर रोज गाते हँस के सितारे,
फिर से गया दिन फिर रात आई, सो जा रे सो जा सपने सजा रे ।

सोई है फिर से बागों में बुलबुल,
सोई है बागों में फिर से शुकी[1] भी।
गुनगुन सुनाता भँवरा भी सोया,
सोई है कूह-कूह गाती पिकी[2] भी ।

धरती की ले ओट सूरज भी सोया, सोते हैं फिर से सारे नज़ारे,
फिर से गया दिन फिर रात आई, सो जा रे सो जा सपने सजा रे ।

सोने लगा है अब हर बगीचा,
सोने लगी है अब हर कली भी ।
सारे शहर, गाँव, घर द्वार सोये,
सोने लगी है अब हर गली भी ।

सोने लगी है सारी धरा फिर, सोने लगे हैं धरती पे सारे,
फिर से गया दिन फिर रात आई, सो जा रे सो जा सपने सजा रे ।

सोकर नई फिर से स्फूर्ति भर तू,
सोकर नये फिर से आह्लाद[3] भर ले।
संकल्प भर ले मन में सृजन[4] के,
सत्यम् शिवम् के विश्वास भर ले ।

आ जा तू मेरी बाँहों में आ जा, हँस के मधुर स्वर में निंदिया पुकारे,
फिर से गया दिन फिर रात आई, सो जा रे सो जा सपने सजा रे ।

1. मादा तोता ; 2. मादा कोयल ; 3. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 4. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि !

(08.08.2011)
सिडनी

83. ले चल रे चल रे माँझी.....

ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे,
ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे ।

मैं भी भर लूँ मन अरुणाई[1],
मैं भी भर लूँ मन तरुणाई[2] ।
स्मृति में मैं भी तो भर लूँ,
हर आती ऋतु की अँगड़ाई ।

ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे,
ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे ।

मन में नव आह्लाद[3] सजा लूँ,
मन में नव अनुराग[4] सजा लूँ ।
तेरे इस ऋण के प्रति मैं भी,
शुभ अनुपम आभार सजा लूँ ।

ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे,
ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे ।

मैंने गाये गीत रुदन[5] के,
मैंने गाये गीत सृजन[6] के ।
शेष अभी हैं जाने कितने,
गीत सजाने मधुर मिलन के ।

ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे,
ले चल रे ले चल रे माँझी, ले चल रे धीरे-धीरे ।

1. लाल रंग का, सुर्ख, प्रातः कालीन सूर्य या सूर्यास्त का समय ; 2. जवानी, युवावस्था ; 3. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 4. प्रेम, भक्ति ; 5. रोना, विलाप करना ; 6. रचना, सर्जन, उत्पत्ति, सृष्टि ।

(12.08.2011)
सिडनी

84. स्थिर कर दो चंचल मन को.....

स्थिर कर दो चंचल मन को, शुभ[1] शुचिमय[2] पावन कर दो,
भर दो मुझको मृदु ध्वनियों से, मरुथल मन सावन कर दो ।

शुभ भाव भरे शब्दों को ले, मुझे छंद-ओ-राग सजाने हैं,
तेरी महिमा के गीत मधुर, अभी तन्मय[3] होकर गाने हैं ।

जाना है जीवन नश्वर[4] है, पल-पल कर बीता जाता है,
जाने वाला हर एक पल, कब वापिस फिर से आता है,

अपनी इस आकुलता को ले, कितने पल व्यर्थ गवाने हैं,
तेरी महिमा के गीत मधुर, अभी तन्मय होकर गाने हैं ।

गाया है मैंने अब तक सब, वह अपने को ही गाया है,
मैंने अपने 'निज' को लेकर, हर पल खुद पछताया है,

अपने इन पश्चातापों[5] पर, मुझे कितने अश्रु बहाने हैं,
तेरी महिमा के गीत मधुर, अभी तन्मय होकर गाने हैं ।

सकल[6] जगत के प्रांगण[7] में, सर्वत्र[8] तुम्हीं तुम तो छाए,
सबके सूने मन आँगन में, तुम ही तो छिप कर मुस्काए,

सबका तुम से ही तो उद्भव[9], सब तुममे लय[10] हो जाने हैं,
तेरी महिमा के गीत मधुर, अभी तन्मय होकर गाने हैं ।

1. मंगलमय, कल्याणकर, अच्छा ; 2. शुद्ध, पवित्र, साफ ; 3. तल्लीन, मग्न, दत्तचित्त ; 4. नाश होने वाला ; 5. पछतावा, दुःख ; 6. समस्त, कुल ; 7. आँगन ; 8. सब जगह, हर जगह, हमेशा ; 9. जन्म, उद्गम ; 10. विलय होना, समा जाना ।

(15.08.2011)
सिडनी

85. चहुँदिशा घनघोर तम छाया हुआ है.....

चहुँदिशा घनघोर तम[1] छाया हुआ है,
आओ मिल कर साथ दीपक राग गा लें ।
लय में लय मिल जाएगी सुर भी सधेगा,
साथ मिल कर एकता के स्वर मिला लें ।

स्वप्न कितने ही सजाने हैं अभी तो,
राग कितने ही बनाने हैं अभी तो ।
रुक गये हैं जो अधर[2] पर मौन होकर,
गीत कितने ही सुनाने हैं अभी तो ।

जब तलक यह घन[3] तिमिर घटता नहीं है,
पुष्प आशाओं भरे मन में खिला लें ।
चहुँदिशा घनघोर तम छाया हुआ है,
आओ मिल कर साथ दीपक राग गा लें ।

देवों का वरदान सोचो क्या कहेगा,
गुरुओं का अभिमान सोचो क्या कहेगा ।
हो गये भयभीत यदि हम भी तिमिर से,
पितरों का सम्मान सोचो क्या कहेगा ।

हों न यूँ भयभीत, भय से यूँ न काँपें,
उर[4] में उठती श्वास को सम्बल[5] बना लें ।
चहुँदिशा घनघोर तम छाया हुआ है,
आओ मिलकर साथ दीपक राग गा लें ।

इस मनुजता[6] का सुमन[7] सौरभ[8] हमीं से,
इस मनुजता का अमर गौरव[9] हमीं से ।
है धरा[10] की ऋद्धि[11] और सौन्दर्य सारे,
गर्व, गरिमा[12], शक्ति, सद्[13] वैभव[14] हमीं से ।

संगठन ही तो हमारा सत्य[15] बल है,
निज करों[16] में दूसरे का कर गहा[17] लें ।
चहुँदिशा घनघोर तम छाया हुआ है,
आओ मिल कर साथ दीपक राग गा लें ।

1. अंधकार, अँधेरा, कालिख, माया, अज्ञान ; 2. होठ ; 3. घना, ठस, मेघ, बादल ; 4. हृदय, छाती ; 5. सहारा, सहायक वस्तु ; 6. मानवीयता ; 7. पुष्प, फूल, सदा प्रसन्न रहने वाला ; 8. सुगन्ध, महक ; 9. महत्व, गुरूता, भारीपन, आदर, सम्मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा ; 10. पृथ्वी, ज़मीन ; 11. सम्पन्नता, सफलता, गौरव, सिद्धि, लक्ष्मी ; 12. गुरूत्व, महत्व, महिमा ; 13. शुभ, अच्छा ; 14. ऐशवर्य, धन-दौलत, सुख शान्ति ; 15. यथार्थ, वास्तविक ; 16. हाथ ; 17. पकड़ना ।

(17.08.2011)
सिडनी

86. हे रे शिव, हे रे शंभु.....

हे रे शिव[1], हे रे शंभु[2],
महादेव[3], महाकाल[4] ।
हे रे अज[5], हे रे अग्र[6],
वामदेव[7], वीतराग[8] ।

लय-प्रलय[9], सृष्टि[10]-ध्वंस[11],
चिर[12] अभंग[13], डमरू नाद[14] ।

हे रे ऋषि[15], हे रे कवि[16],
सामप्रिय[17], सदाचार[18] ।
हे रे भव[19], हे रे भीम[20],
नृत्यनित्य[21], निराकार[22] ।

लय-प्रलय, सृष्टि-ध्वंस,
चिर अभंग, डमरू नाद ।

हे रे उग्र[23], हे रे रुद्र[24],
विश्वरूप[25], विशालाक्ष[26] ।
हे रे शर्व[27], हे रे भर्ग[28],
सर्वरूप[29], सहस्त्राक्ष[30] ।

लय-प्रलय, सृष्टि-ध्वंस,
चिर अभंग, डमरू नाद ।

हे रे सौम्य[31], हे रे शांत[32],
सनातन[33], सूत्रधार[34] ।
हे रे पूर्ण[35], हे रे पुण्य[36],
उमापति[37], ओंकार[38] ।

लय-प्रलय, सृष्टि-ध्वंस,
चिर अभंग, डमरू नाद ।

1. कल्याण, मंगल, भाग्यवान, शुभ, मांगलिक ; 2. कल्याण करने वाले सुख देने वाले ; 3. सबसे बड़े देवता ; 4. काल (मृत्यु, समय) के नियंत्रक ; 5. अजन्मा ; 6. अगला, पहला, मुख्य ; 7. सुंदर स्वरूप वाले ; 8. रागरहित, निस्पृह ; 9. गति, सामजस्य, समाजाना, विलय, परिणत होना, समाविष्ट होना ; 10. निर्माण, रचना, उत्पत्ति, पैदाइश, जगत, संसार ; 11. विनाश ; 12. जो सदा बना रहे, दीर्घ कालीन, बहुत ; 13. अखंडित, न टूटने वाला ; 14. आवाज़, शब्द ; 15. मुनि, मनीषी, मन्त्रदृष्टा ; 16. 'कवृ' धातु से बना शब्द जिसका अर्थ है वर्णन करने वाला ; 17. गीत जिनको प्रिय है ; 18. अच्छा आचरण ; 19. होना, संसार, जगत ; 20. भयंकर, भीषण, बहुत बड़ा, वीर, बहादुर ; 21. लगातार नृत्य करने वाले ; 22. आकाररहित ; 23. भयानक, तीव्र, क्रूर, हिंस्र, तेज ; 24. डरावना, भयंकर ; 25. संसार के रूप में प्रकट होने वाले ; 26. बड़ी आँखों वाले ; 27. कष्टों को नष्ट करने वाले ; 28. पापों को भून देने वाले ; 29. सभी रूपों में प्रकट होने वाले ; 30. असंख्य आँखों वाले ; 31. शीतल और स्निग्ध, सुंदर, रमणीक, मृदुल, कोमल, चमकीला, कान्तिमान, प्रसन्न ; 32 संतुष्ट, विनम्र, मौन, चुप, निशब्द ; 33. शाश्वत, अनादि और अनंत, सदा बना रहने वाला ; 34. प्रधान नट, नाट्यशाला का व्यवस्थापक ; 35. पूरा, समस्त, सब ; 36. पवित्र, शुभ, मंगलकारक ; 37. पार्वती के पति ; 38. ॐ, परब्रह्म का वाचक शब्द ।

(01.09.2011)
सिडनी

87. स्वर्ण किरणों को सजाए.....

स्वर्ण किरणों को सजाए सूर्य आता फिर क्षितिज पर,
जग गए सब जीव देखो फिर नया उल्लास भर कर ।
जा चुकी फिर से निशा अब, नभ प्रभामय हो रहा है,
सो चुका सोना था जितना जाग रे क्यों सो रहा है ।

भर रहे आह्लाद फिर से देख सारे गुल्म[1] तरुवर[2],
हो रहे फिर से तरंगित देख सारे झील सरवर[3] ।
शांत सुरभित[4] हो समीरण[5] फिर कृपामय हो रहा है,
सो चुका सोना था जितना जाग रे क्यों सो रहा है ।

प्रात का विस्मय सजाए कूह-कूह गाती पिकी[6] फिर,
आस को सम्बल[7] बनाए पीहू-पीहू गाती शुकी[8] फिर ।
उड़ रहे विहगों[9] का फिर से, स्वर सुधामय[10] हो रहा है,
सो चुका सोना था जितना जाग रे क्यों सो रहा है ।

राह की रज[11] फिर से आतुर[12] चूमने को पग तुम्हारे,
हो रहे हैं फुल्ल-कुसुमित[13] पथ के देखो पुष्प सारे ।
प्रार्थनाओं के स्वरों से, जग निरामय[14] हो रहा है,
सो चुका सोना था जितना जाग रे क्यों सो रहा है ।

1. झाड़ी, सैन्य दल ; 2. पेड़ ; 3. तालाब, सरोवर ; 4. खुशबू से भरा ; 5. हवा, पवन ; 6. मादा कोयल ; 7. सहारा ; 8. मादा तोता ; 9. खगों, पंछियों, विहंगों ; 10. अमृत स्वरूप ; 11. धूल, गर्द, पराग, ज्योति ; 12. उतावला, बेचैन ; 13. खिला हुआ, पुष्पित ; 14. निर्दोष, निष्कलंक, नीरोग ।

(13.09.2011)
सिडनी

88. अपनी भू की सन्तान हैं हम.....

अपनी भू[1] की सन्तान हैं हम,
अपनी भू की पहचान हैं हम ।
हम सच्चे सुत[2] इस धरती के,
अपनी भू का अभिमान हैं हम ।

हम जब देखें नभ[3] को देखें,
हम को छूना है तारों को ।
दस बीस नहीं सौ लाख नहीं,
हम को छूना है सारों को ।

हममें उत्कट[4] विश्वास भरा,
हममें उत्कट आह्लाद भरा ।
कुछ अच्छा कर जाने का,
हममें उत्कट उत्साह भरा ।

हम जब देखें नभ को देखें,
हम को छूना है तारों को ।
दस बीस नहीं सौ लाख नहीं,
हम को छूना है सारों को ।

हम खिल जाते चट्टानों में,
हम मुस्काते वीरानों[5] में ।
आगे-आगे बढ़ते जाते,
हम निर्भय[6] हो तूफ़ानों में ।

हम जब देखें नभ को देखें,
हम को छूना है तारों को ।
दस बीस नहीं सौ लाख नहीं,
हम को छूना है सारों को ।

हम अपनी धुन में रहते हैं,
हम हर दु:ख हँस कर सहते हैं ।
नेह[7] से भर दुनियाँ वाले,
हमको दीवाना कहते हैं ।

हम जब देखें नभ को देखें,
हम को छूना है तारों को ।
दस बीस नहीं सौ लाख नहीं,
हम को छूना है सारों को ।

1. धरा, जमीन, पृथ्वी ; 2. पुत्र, बेटा ; 3. आसमान, गगन ; 4. तीव्र, उग्र, प्रबल, विकट, विकराल, श्रेष्ठ, कठिन, घमंडी ; 5. निर्जन प्रदेश ; 7. स्नेह, प्रीति, प्यार ।

(18.09.2011)
सिडनी

89. पल पहर दिन रात बीतें.....

पल पहर दिन रात बीतें,
जो भी बीतें साथ बीतें ।
हर दिवस ही मंद्रकर[1] हो,
नित नयी मधु रात्रि आए ।
जब तलक यह प्राण जाए,
जब तलक यह प्राण जाए ।

मैं सभी अवसाद[2] भूलूँ,
निज का हर नैराश्य भूलूँ ।
भूल जाऊँ नाशमय सब,
तेरी स्मृति उर[3] सजाए ।
जब तलक यह प्राण जाए,
जब तलक यह प्राण जाए ।

तुममें सारे जग को देखूँ,
तुमसे सारे जग को देखूँ ।
मैं जिधर देखूँ उधर ही,
तेरी प्रभ[4] छवि मुस्कुराए ।
जब तलक यह प्राण जाए,
जब तलक यह प्राण जाए ।

सीम[5] को निस्सीम[6] जानूँ,
तुमको ही बस सत्य मानूँ ।
अनवरत[7] आह्लाद भर कर,
तुमको अंतर[8] गुनगुनाए ।
जब तलक यह प्राण जाए,
जब तलक यह प्राण जाए ।

1. सुंदर, मनोहर, प्रसन्न, गंभीर, मंद, गंभीर ध्वनि ; 2. उदासी, खेद, थकावट, हार, तलछट, गाद ; 3. हृदय, छाती ; 4. प्रकाश, दीप्ति ; 5. हद, सरहद, किनारा ; 6. सीमा रहित ; 7. लगातार, अविरल, अविरत ; 8. भीतर, बीच में।

(19.09.2011)
सिडनी

90. हे प्रभु इतना अनुग्रह कर दो.....

हे प्रभु इतना अनुग्रह[1] कर दो,
अपना कर मेरे सर धर दो ।

मेरे सब अवसाद[2] भुला दो,
प्राणों में आह्लाद[3] सजा दो,

आकुल[4] अंतर[5] निर्भय[6] कर दो,
अपना कर मेरे सर धर दो ।

जीवन सच शुभकर[7] हो जाए,
अर्थवान मृदुकर[8] हो जाए,
इस जीवन को जगमग कर दो,
अपना कर मेरे सर धर दो ।

अविरल[9] गीत तुम्हारे गाऊँ,
तन्मय[10] हो तुमको दोहराऊँ,

मधुमय गुंजन से स्वर भर दो,
अपना कर मेरे सर धर दो ।

1. कृपा ; 2. उदासी, खेद, सुस्ती ; 3. खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ; 4. परेशान, बेचैन, उतावला ; 5. बीच में, भीतर ; 6. बिना डर के ; 7. कल्याणकारी ; 8. कोमल, मुलायम, प्रिय, सुहावना ; 9. लगातार, अनवरत ; 10. तल्लीन, दत्तचित्त, मग्न ।

(23.09.2011)
सिडनी

91. आओ रे साथी सब आओ.....

आओ रे साथी सब आओ, संग में सारे मिलकर गाएँ,
समवेत[1] सुरों का साज़ सजे, सुर में सुर सारे मिल जाएँ ।

गाते-गाते अपने अंतर[2],
हम आशा और उल्लास भरें ।
गाते-गाते अपने अंतर,
हम अनुपम[3] आह्लाद भरें ।

गीतों की मृदु स्वर लहरी से, हम पुष्पों जैसे खिल जाएँ,
आओ रे साथी सब आओ, संग में सारे मिलकर गाएँ ।

गाते-गाते बढ़ते जाना,
हमको अनगिन तूफानों से ।
गाते-गाते बढ़ते जाना,
हमको अनगिन वीरानों से ।

गीतों का ऐसा राग सजे, पथ अपने मखमल बन जाएँ,
आओ रे साथी सब आओ, संग में सारे मिलकर गाएँ ।

गाते-गाते आओ मिलकर,
भू[4] को भर दें हरियाली से ।
गाते-गाते आओ मिलकर,
जग को भर दें खुशहाली से ।

मैं एक नहीं हम एक हैं सब, हर बार यही प्रण दोहराएँ,
आओ रे साथी सब आओ, संग में सारे मिलकर गाएँ ।

1. एकत्र, संचित, मिलाया हुआ, संबद्ध ; 2. भीतर, बीच में ; 3. उपमा रहित ;
4. पृथ्वी, जमीन, धरा ।

(28.09.2011)
सिडनी

92. यहाँ हर किसी परवाज़ को.....

यहाँ हर किसी परवाज़[1] को किसी आसमाँ की तलाश है,
हरी शाख गुंचा[2]-ओ-गुल[3] भरे, किसी गुलिस्ताँ[4] की तलाश है ।

पल-पल कोई बेचैन सा, हो देखता है हर तरफ,
जाने मेरी मंजिल कहाँ, जाना मुझे है किस तरफ,

हर साँस रोकर कह रही, मुझे एक निशाँ की तलाश है,
यहाँ हर किसी परवाज़ को किसी आसमाँ की तलाश है ।

कोई तो ऐसा हो मेरा, जिसको मैं अपना कह सकूँ,
भर कर जिसे आग़ोश[5] में, मैं हँस सकूँ मैं रो सकूँ,

हर एक प्यासी रूह को, किसी आशना[6] की तलाश है,
यहाँ हर किसी परवाज़ को किसी आसमाँ की तलाश है ।

जब शाम ढल गई रात में, तो हजार सपने सँवर गए,
खिलने लगी फिर चाँदनी, नभ आ के तारे चमक गए,

गाने लगी परवानगी, मुझे एक शमाँ की तलाश है,
यहाँ हर किसी परवाज़ को किसी आसमाँ की तलाश है ।

1. उड़ान ; 2. कली ; 3. फूल ; 4. बगीचा ; 5. आलिंगन ; 6. जान पहचान वाला, प्रेम पात्र ।

(01.10.2011)
सिडनी

93. है नफ़स और भला इसकी.....

है नफ़स[1] और भला इसकी कहानी क्या है,
मैं सुनाता हूँ तुम्हें शै[2] ये जवानी क्या है ।

ऐसी ताकत जो शिलाओं[3] को चीर देती है,
ऐसी हिम्मत जो हवाओं को मोड़ देती है ।
उठा के बाहों को फैलाये सारा नभ[4] भर ले,
ये पीछे सारे जमाने को छोड़ देती है ।

है सिफ़त[5] और भला इसकी निशानी क्या है,
मैं सुनाता हूँ तुम्हें शै ये जवानी क्या है ।

कभी घनघोर घटा मन आँगन पे छाती है,
कभी बिजली सी कड़कती है कौंध जाती है ।
कभी बरखा सी बरसती है ऋतु हो सावन की,
कभी हँसती है कभी हँस के रोती जाती है ।

है अलग और भला इसकी रवानी[6] क्या है,
मैं सुनाता हूँ तुम्हें शै ये जवानी क्या है ।

जैसे शबनम[7] किसी शतदल[8] पे ठहर जाती है,
जैसे कलिका[9] हो बने फूल सँवर जाती है ।
जैसे निर्झर[10] के निरत झरते हुए पानी पर,
आ के सूरज की किरन हँस के बिखर जाती है ।

है सअद[11] और भला इससे रूहानी[12] क्या है,
मैं सुनाता हूँ तुम्हें शै ये जवानी क्या है ।

कोई नदिया जो किनारों को डुबो देती है,
खेत-खलियान चौबारों को डुबो देती है ।
डूब जाते हैं जहाँ गुल्म[13] और पेड़ सभी,
सारे पशुओं-ओ-लाचारों को डुबो देती है ।

है फहश[14] और भला इससे तूफानी क्या है,
मैं सुनाता हूँ तुम्हें शै ये जवानी क्या है ।

1. अस्तित्व, सत्यता, कामवासना, साँस, पल, रूप ; 2. चीज ; 3. पत्थर, प्रस्तर ; 4. आसमान, गगन ; 5. गुण ; 6. बहाव, प्रस्थान, रवाना होना ; 7. ओस, तुषार ; 8. कमल, पंकज, ; 9. कली ; 10. झरना ; 11. पवित्र ; 12. आत्मिक, अध्यात्म ; 13. झाड़ी, सैन्य दल ; 14. अशोभनीय, अनुचित, लज्जास्पद ।

(08.10.2011)
सिडनी

94. तुमसे बिछड़ के फिर कभी न.....

तुमसे बिछड़ के फिर कभी न मुस्कराए हम,
हम फिर से मुस्करायेंगे जब आओगे कभी ।

गाये थे हमने गीत सदा मिल के प्यार के,
फूलों के खुशबुओं के ओ बादल बहार के,

हम फिर से मिल के गायेंगे, जब आओगे कभी,
हम फिर से मुस्करायेंगे जब आओगे कभी ।

तुम खुद ही देख लेना हुआ हाल क्या इधर,
कैसा हुआ है रूप मेरा रंग क्या इधर,

हम फिर से निखर जायेंगे, जब आओगे कभी,
हम फिर से मुस्करायेंगे जब आओगे कभी ।

क्या सुन सकेंगे और क्या ही कह सकेंगे हम,
रोये बिना भला यूँ ही क्या रह सकेंगे हम,

हम रो के लिपट जायेंगे, जब आओगे कभी,
हम फिर से मुस्करायेंगे जब आओगे कभी ।

(11.10.2011)
सिडनी

95. तुम बिन हैं सूने सूने.....

तुम बिन हैं सूने-सूने ये नयना,
तुम बिन हैं सूने-सूने नज़ारे ।
तुम बिन है सूना-सूना मेरा मन,
आ जा रे आजा प्रियतम हमारे ।

तुम बिन हैं सूने टीका-औ-झूमर,
तुम बिन है सूनी चूड़ी की खनखन ।
तुम बिन हैं सूने बिंदिया-औ-काजल,
तुम बिन है सूनी पायल की छमछम ।

तुम बिन हैं सूना ये श्रृंगार मेरा,
तुम बिन हैं सूने मेरे इशारे ।
तुम बिन है सूना-सूना मेरा मन,
आ जा रे आजा प्रियतम हमारे ।

तुम बिन है सूना गाता पपीहरा,
तुम बिन है सूनी गाती पिकी भी ।
तुम बिन है सूना गुनगुन ये भँवरा,
तुम बिन है सूनी गाती शुकी भी ।

तुम बिन है सूना थिरका मयूरा,
तुम बिन हैं सूने मेरे राग सारे ।
तुम बिन है सूना-सूना मेरा मन,
आ जा रे आजा प्रियतम हमारे ।

तुम बिन हैं सूने सभी पेड़-पौधे,
तुम बिन हैं सूनी महकी हवाएँ ।
तुम बिन हैं सूने सभी पशु-औ-पंछी,
तुम बिन हैं सूनी सारी दिशाएँ ।

तुम बिन हैं सूने मेरे सभी पल,
तुम बिन हैं सूने दिन-रात सारे ।
तुम बिन है सूना-सूना मेरा मन,
आ जा रे आजा प्रियतम हमारे ।

(14.10.2011)
सिडनी

96. गोरे रंग वाली क्या कहने.....

गोरे रंग वाली क्या कहने
ओठों पर लाली क्या कहने ।
हैं आँखें काली क्या कहने,
ऊँचे कद वाली क्या कहने ।

क्या कहने अजी क्या कहने,
क्या कहने अजी क्या कहने ।

जुल्फें घुँघराली क्या कहने,
कानों में बाली क्या कहने ।
काले तिल वाली क्या कहने,
ये झूमर हाली क्या कहने ।

क्या कहने अजी क्या कहने,
क्या कहने अजी क्या कहने ।

है जाली वाली क्या कहने,
है बूटे वाली क्या कहने ।
है गोटे वाली क्या कहने,
वो पहने साड़ी क्या कहने ।

क्या कहने अजी क्या कहने,
क्या कहने अजी क्या कहने ।

है भोली-भाली क्या कहने,
हर बात निराली क्या कहने ।
मीठी है गाली क्या कहने,
भैया की साली क्या कहने ।

क्या कहने अजी क्या कहने,
क्या कहने अजी क्या कहने ।

(15.10.2011)
सिडनी

97. मेरे शहर का देख आज.....

मेरे शहर का देख आज क्या हुआ निज़ाम[1] है,
डरा-डरा सा जी रहा आज हर अवाम[2] है ।

बैरिकेड पत्थरों के ढेर हैं जहाँ-तहाँ,
हैं पुलिस की गाड़ियाँ औ राह सुनसान है ।

इस शहर में अब कोई आदमी बचा नहीं,
अब यहाँ तो हिन्दू है या तो मुसलमान है ।

अल्लाह तू बड़ा है शोर गूँजता कभी-कभी,
कभी ये शोर गूँजता जय-जय श्रीराम है ।

झोंपड़ी जली है कोई धूँ-धूँ करके इस तरफ,
धूँ-धूँ करके जल रहा उस तरफ मकान है ।

सुबक रही है ज़िंदगी बंद कर घरों को आज,
न जाने कितने मोड़ पर मौत मेहरबान[3] है ।

लूटपाट-औ-फ़साद बलात्कार-औ-पुकार,
छिड़ा हुआ जगह-जगह आज घमासान[4] है ।

सदियों की दोस्ती की हैं अब फ़ना[5] रिवायतें[6],
याद है तो रंजिशें और इंतक़ाम है ।

1. प्रबंध, व्यवस्था ; 2. सर्वसाधारण ; 3. दयालु, कृपालु ; 4. भीषण मारकाट, युद्ध ; 5. लीन होना, विनाश, बर्बादी ; 6. परम्परायें ।

(19.10.2011)
सिडनी

98. बीत गये जो भी दिन थे.....

बीत गये जो भी दिन थे इंतजार के,
आये हैं फिर से झूम के मौसम बहार के ।

गाएगी आ के बाग़ में खुश हो के फिर पिकी,
गाएगी आ के बाग़ में खुश हो के फिर शुकी,

आये हैं फिर से झूम के मौसम खुमार के,
आये हैं फिर से झूम के मौसम बहार के ।

डाली पे फूल बन के फिर इतराएगी कली,
चूमेगी उसको जा के कोई तितली मनचली,

आये हैं फिर से झूम के मौसम ये प्यार के,
आये हैं फिर से झूम के मौसम बहार के ।

पेड़ों की डाल पत्तियों से होगी फिर लदी,
खुशबू भरे हवाएँ आ कह देंगी अनकही,

आये हैं फिर से झूम के मौसम क़रार के,
आये हैं फिर से झूम के मौसम बहार के ।

(22.10.2011)
सिडनी

99. हम तुम्हें कितना प्यार करते हैं.....

हम तुम्हें कितना प्यार करते हैं, आज हम दिल का राज़ कहते हैं,
जान तुम पर निसार करते हैं, आज हम दिल का राज़ कहते हैं ।

फूल मैं जैसे खुशबू होती है,
मेघ में जैसे बिजली होती है ।
सूर्य किरणों में जैसे होते रंग,
दीप में जैसे बाती होती है ।

हम कभी भी जुदा नहीं तुमसे, हम तेरे दिल के पास रहते हैं,
हम तुमहें कितना प्यार करते हैं, आज हम दिल का राज़ कहते हैं ।

जब कभी गम की आँधी आई है,
चोट जब तुमने दिल पे खाई है ।
हम भी जागे हैं तेरे संग-संग में,
हमको रातों न नींद आई है ।

एक तुम ही नहीं जो रोये हो, अश्क मेरे भी साथ बहते हैं,
हम तुम्हें कितना प्यार करते हैं, आज हम दिल का राज़ कहते हैं ।

साथ में आशियाना देखा है,
मैंने मौसम सुहाना देखा है ।
स्वप्न देखे हैं मैंने सतरंगे,
साथ तेरे ज़माना देखा है ।

तेरे संग ज़िन्दगी की राहों पर, सुख दुःख हँस के साथ सहते हैं,
हम तुम्हें कितना प्यार करते हैं, आज हम दिल का राज़ कहते हैं ।

(24.10.2011)
सिडनी

100. बात होठों पे दिल की आने.....

बात होठों पे दिल की आने दो,
है कोई यदि सवाल कह डालो ।
जरा सा खुद को खिलखिलाने दो,
है कोई यदि मलाल कह डालो ।

हम सभी तुमसे प्यार करते हैं,
हम सभी तुझपे यार मरते हैं ।
हैं तेरे हाल से परेशाँ हम,
हम सभी इससे यार डरते हैं ।

जरा सा खुद को मुस्कराने दो,
है कोई यदि ख्याल कह डालो ।
जरा सा खुद को खिलखिलाने दो,
है कोई यदि मलाल कह डालो ।

तुम्हीं तो एक शान महफ़िल की,
तुम्हीं तो एक आन महफ़िल की ।
हैं यहाँ सारी रौनकें तुमसे,
तुम्हीं तो एक जान महफ़िल की ।

जरा सा रंग फिर से छाने दो,
है कोई यदि कमाल कह डालो ।
जरा सा खुद को खिलखिलाने दो,
है कोई यदि मलाल कह डालो ।

हम सभी तेरे गीत गाते हैं,
हम सभी तुमको गुनगुनाते हैं ।
बला की मस्ती तेरी बातों में,
हम सभी झूम-झूम जाते हैं ।

जरा नयी को लब पे आने दो,
है कोई यदि निहाल कह डालो ।
जरा सा खुद को खिलखिलाने दो,
है कोई यदि मलाल कह डालो ।

(27.10.2011)
सिडनी

101. घर–घर दीप जले.....

घर–घर दीप जले,
घर–घर दीप जले ।

मिट जाये गहरा अँधियारा,
हो जाए हर घर उजियारा,

घर–घर ज्योति जले,
घर–घर दीप जले ।

सुखकर शुचिमय हो सब पावन,
नेह भरे सबके मन आँगन,

घर–घर प्रीति पले,
घर–घर दीप जले ।

उर अप्रतिम उल्लास सजाए,
स्मिति और विश्वास सजाए,

घर–घर आस पले,
घर–घर दीप जले ।

(31.10.2011)
सिडनी

102. लाल रंग भर रहा नीला आसमान.....

लाल रंग भर रहा नीला आसमान है,
धीरे-धीरे रात में ढल रही ये शाम है ।

नीड़ अपने लौटने को उड़ रहे हैं फिर विहग,
उड़ते-उड़ते नभ में वे गुँजा रहे हैं अपने स्वर,

वृक्षों पर भी ये ही स्वर फिर गुंजारमान है
धीरे-धीरे रात में ढल रही ये शाम है ।

फुल्ल मुख को बंद कर सोने जा रहे कमल,
गुनगुनाता अब नहीं बाग़ में कोई भ्रमर,

भर सुगंध बह रही वात थोड़ी शांत है,
धीरे-धीरे रात में ढल रही ये शाम है ।

कालिमा से भर रहा धीरे-धीरे सारा नभ,
अदृश्य होते जा रहे धीरे-धीरे सारे मग,

तेज चल रहा पथिक भीत[1] और क्लांत[2] है,
धीरे-धीरे रात में ढल रही ये शाम है ।

1. डरा हुआ, भयभीत ; 2. थका हुआ, शिथिल ।

(02.11.2011)
सिडनी

103. तारों भरी है छत मेरी, फूलों.....

तारों भरी है छत मेरी, फूलों भरा मकान है,
अल्लाह मेहरबान है, अल्लाह मेहरबान है ।

बर्फ से ढकी हुई हैं पर्वतों की चोटियाँ,
वृक्षों से भरी हुई हैं दूर तक ये वादियाँ,

आता है आफ़ताब रोज़, मुस्कराता चाँद है,
अल्लाह मेहरबान है, अल्लाह मेहरबान है ।

उड़ते हुए पंछियों का हो रहा है मीठा शोर,
पंखों को फैलाए हुए नाच रहे मगन मोर,

गा रहा पपीहा कहीं, पिक-पिकी का गान है,
अल्लाह मेहरबान है, अल्लाह मेहरबान है ।

एक वही तो बस रहा जर्रे से ले जहान तक,
एक वही तो हँस रहा ज़मी से आसमान तक,

है उसी का नूर सब, सब उसी की शान है,
अल्लाह मेहरबान है, अल्लाह मेहरबान है ।

(07.11.2011)
सिडनी

104. मेरा मन रह-रह घबराए.....

मेरा मन रह-रह घबराए,
जीवन यूँ ही बीता जाए ।

इतनी भी अभी जल्दी क्या है,
इसको तो हम फिर कर लेंगे ।
छोटे-मोटे काम बहुत हैं,
शुचिमयता को फिर भर लेंगे ।

बीत गए अब तक के ये दिन,
निज को कल-कल कह बहलाए ।

निज के ही रोने-धोने में,
मैंने सारा समय गँवाया ।
अब तक बीता सब चुटकी में,
केवल सोया खेला-खाया ।

तू भी तो कुछ शुभकर कर ले,
चेतनता रह-रह दोहराए ।

जाने कितने भोर बचे हैं,
जाने कितनी रातें बाकी ।
कब खाली जीवन का प्याला,
कब ना कह दे जाने साक़ी ।

बीत गया जब सारा जीवन,
क्या होगा फिर जब पछताए ।

(11.11.2011)
सिडनी

105. काले-काले मेघ आए.....

काले-काले मेघ आए,
प्यार का संदेश लाए ।
मन में नए राग जागे,
जिया करे धुकुर-धुकुर ।

वृष्टि[1] पड़े टिपुर-टिपुर,
वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर ।

वन में मयूर नाचे,
मगन हो मयूरी ताके ।
मस्त हो पपीहा गाए,
शुकी ताके टुकुर-टुकुर ।

वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर,
वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर ।

चोली चुनर हार सजे,
गोरी का श्रृंगार सजे ।
थिरक रहे पैर पड़े,
गूँज रहे नूपुर-नूपुर ।

वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर,
वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर ।

मद से भरे नैन हँसे,
मीठे-मीठे बैन हँसे ।
खिल उठे हैं आज अधर,
गीत सजे मधुर-मधुर ।

वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर,
वृष्टि पड़े टिपुर-टिपुर ।

1. वर्षा, बरसात ।

(26.11.2011)
बुलन्दशहर
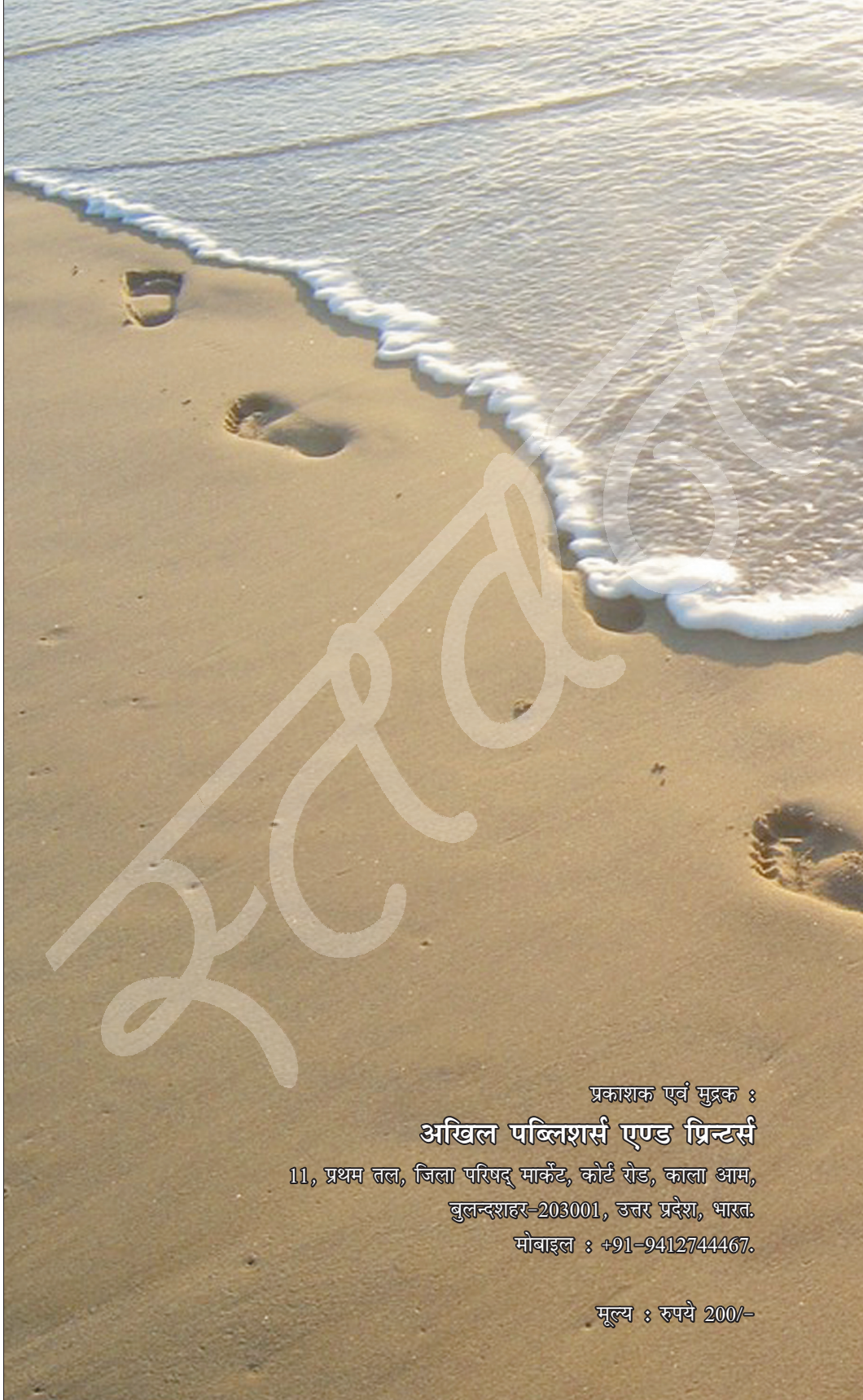
प्रकाशक एवं मुद्रक :

अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स

11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,

बुलन्दशहर-203001, उत्तर प्रदेश, भारत.

मोबाइल : +91-9412744467.

मूल्य : रुपये 200/-